वर्ष 27 | वैशाख-ज्येष्ठ | मई-2022 | अंक 5 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982

पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक
डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन
सम्पादकीय कार्यालय
डॉ.सुभाष जैन
46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897
1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com
इन्दौर कार्यालय
प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''
1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

मैं देखता हूं कि आपका मन खाने-पीनी की छोटी चीजों, नशा तथा सांसारिक अर्थहीन आकर्षणों को देखकर मचल जाता है। इस तरह की चंचलता का वहीं परिणाम होता है जैसे आजकल के युवक-युवतियां कमर थिरकाते है। उसी तरह की थिरकन आएगी। जब थिरकन आयेगी तब ''जीवन भर नाचहूं, अब मैं नाचहूं बहुत गोपाल'' वाली हालत होगी। जीवन भर नाचते-नाचते मर जायेंगे, हाथ कुछ नहीं लगेगा।

दिव्य आर्शीवाददाता
प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.
मार्गदर्शक एवं प्रेरक
प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन
अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

जहासागडिओ जाणं, समं हिच्चा महापहं।
विसमं मग्गमोइण्णे, अक्खे भग्गम्मि सोयई ॥
एवं धम्मं विउक्कम्म, अहम्मं पडिवज्जिया।
बाले मच्चुमुंह पत्ते, अक्खे भग्गे वि सोयई ॥

जिस तरह कोई गाड़ीवान जान-बूझकर समतल मार्ग को छोड़कर विषम मार्ग में पड़ जाता है और गाड़ी की धूरी टूट जाने से शोक करता है, उसी तरह धर्म को छोड़कर अधर्म में पड़ने-वाला अज्ञानी जीवन की धुरी टूट जाने पर मृत्यु के मुख में पड़ा हुआ पश्चाताप करता है। - **उत्तरा. सूत्र, 5.14,15**

पाथेय

चाहिये, बस धैर्य, बल, साहस और अदमनीय कर्म शक्ति, मन निश्चिल नीरव होना, सीख ले और तत्काल उन शक्तियों का लाभ-उठाने को उतावला न हो जो हे प्रभु, तुम्हारी सत्ता से आती है हमारे पास, तुम्हारे परिपूर्ण प्राकट्य के हेतु, तुम्हें धरा पर अभिव्यक्त करने के लिए ! लेकिन प्रभु तुमने क्यों चुना इस दुर्बल यंत्र को, अपने संकल्प को संसिद्धि के लिए, जो अत्यन्त सामान्य है और अपूर्ण हैं ! जैसी तुम्हारी इच्छा, जैसी तुम्हारी इच्छा ! मैं तुम्हारी भव्यता के समक्ष नतमस्तक हूं। वह अपनी गरिमा से कर रही है मुझे अभिभूत, प्रभु मुझे अपने चरणों में बिछ जाने दो अपनी सत्ता में घुल जाने दो !

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-27 वैशाख - जेष्ट मई 2022 अंक-5

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3

2- विषय सूची 4

3- जिन शासन का स्थापना : प्राणी मात्र के लिये कल्याणकारी (सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन 5

4- अंतराय कर्म का उदय, वषिक तप का पारणा महापुण्योदय का पर्व ''अक्षय तृतीया'' - शान्तिलाल सगरावत, आसक्ति, दुर्जन के आंसू 6

5- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्रीअरुणविजयजी म.सा., ईश्वर 7-9

6- श्रमण संस्कृति के दिव्यपुंज परम पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री 10

7- बड़े करामाती है हमारे हाथ !, ओली आराधिका साध्वी विरक्ता श्रीजी म.सा. की मनोभावना- मुनि मोक्षरत्नसागर , विचार 11-12

8- मैं मनक-पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/ मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म. पाप का परिणाम, क्रोध और धैर्य में अन्तर 13-14

9- चतुर्विध संघ की स्थापना 15-16

10-परमात्मा के शासन में गण एवं गणधर, पांच मुक्ति 17-18

11-लालच बुरी बला है...! 19-20

12-भारत के प्राचीन हस्तप्रत भंडार-वैराग्यरतिविजय, प्रेम के देवता, संसार स्वार्थी है 21-23

13-जिनशासन.... जयवन्ता...., तटस्थता 24

14-अनुत्तर कला : दर्शन- इन्द्रचन्द्र दुधेड़िया 25-26

15-शासन स्थापना : श्री वीरप्रभु की अनमोल भेंट- डॉ. सुभाष जैन 27

16-वर्गपहेली- 324 - जयंतीलाल जैन 28

17-ज्ञान गंगोत्री- 324 - आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा. 29

18-शासन-समाचार 30-41

19-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक 42

संपादकीय

जिन शासन का स्थापना:प्राणीमात्र के लिये कल्याणकारी

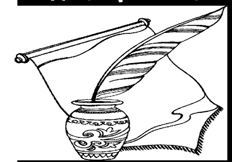

इस माह जैन जगत के सबसे महत्वपूर्ण दिन का आगमन होने जा रहा है। इतनी महत्वपूर्ण तिथि होने के बाद न तो अधिकांश जैन इस तिथि के बारे में जानते है और नहीं जानने वाले इस तिथि को कोई महत्व देते हैं। यह कितने आश्चर्य और अचंभे की बात है। जिस तिथि ने हमारे जीवन को कल्याण का मार्ग दिखाया हम उसे ही भूल जाते है, उसके लिये न स्मरण न उत्सव, न प्रवचन न अन्य कोई कार्यक्रम? कितने कमबख्त हो गये है कि उपकारी दिवस को ही भूल जाते है, हाँ। मैं वैशाख सुदी-११ (दिनांक १२ मई २०२२ गुरुवार) याने शासन स्थापना तिथि की बात कर रहा हूं। परमात्मा ने इस तिथि को शासन स्थापना के लिये चुना होगा तो निश्चित ही कोई बात होगी? जो याद रखने लायक नहीं है,वह तो हमारे दिमाग में कचरे की तरह ठूंस-ठूंस कर भरा होता है और जिसे सहज कर संभाल कर रखना है, उसे ही विस्मृत कर देते है। आसानी से मिली वस्तु को पाकर हम उसके महत्व को समझ नहीं पाते है, यह मानवीय जीवन की सबसे बड़ी भूल है। परमात्मा ने शासन की स्थापना अपने लिये नहीं की थी, प्रभु की तो इसमें मानव मात्र के कल्याण की भावना थी। शासन की स्थापना के लिये प्रभु ने सैकड़ों वर्ष पूर्व सिर्फ हमारे बारे में ही सोचा था शासन के माध्यम से हमारा कल्याण हो यह भाव ही इसमें सन्निहित था।

भारतीय संस्कृति के इतिहास में जैन दर्शन की अपनी एक विशिष्ट पहचान और महत्व है, जैन दर्शन अनेक दर्शनों का जनक और संरक्षक करने वाला है जब भी भारतीय संस्कृति के प्राचीनतम स्वरूप पर मंथन होता है तो विचारक, आश्चर्यचकित और विस्मित हो जाते हैं कि विश्व की प्राचीनतम अध्यात्म संस्कृति का मेरूदण्ड और जीवन रेखा (Life Line) अगर कोई है तो वह जैन दर्शन है। ऐसा नहीं है कि जैन दर्शन ने विश्व के अन्य धर्मों की विशिष्टताओं को छोड़ दिया या उन्हें अपनाया नहीं जैन दर्शन में तो उन सभी विशिष्टता को अपनाने के साथ उनका और परिमार्जित स्वरूप विश्व के सामने देखा है,आदि तीर्थंकर परमात्मा श्री ऋषभदेवजी से लेकर प्रभु श्री पार्श्वनाथ दादा और परमात्मा भगवान श्री महावीर स्वामीजी तक यह प्रक्रिया निरंतर विकासशील रही है।

परमात्मा प्रभुवीर के द्वारा शासन की स्थापना के साथ सबसे महत्वपूर्ण भेंट मानव को यह दी है कि हम भी प्रभु के समान तीर्थंकर बन सकते हैं। यह कितनी बढ़ी बात है कि प्रभु अपना पद भी हमें प्रदान करने को तत्पर है। इस भ्रष्टाचारी और स्वार्थ से भरे पूंजीवादी संसार को सीख देने के लिये परमात्मा अपने जैसा सबको बनाने के लिये नि:स्वार्थ रूप से यहां हमारे लिये ही खड़े दिखाई देते हैं। परमात्मा का इस धरा पर जन्म मानव ही नहीं प्राणीमात्र के कल्याण के लिये ही हुआ था। जब चोरी और हिंसा और संघर्ष चल रहा था मानव जाति उत्थान के स्थान पर पतन की ओर बढ़ रही थी तब अज्ञानता के अंधकार को विछिन्न करते हुए भारतीय संस्कृति को उज्जवलता प्रदान करने के लिये प्रभुवीर का उद्भव हुआ था। श्री महावीर आज २१ वीं सदी में फिर से संसार की आवश्यकता बने दिखाई दे रहे है। परमात्मा के द्वारा शासन की स्थापना मात्र जैन कहलाने वालों के लिये नहीं की है। बल्कि यह उन सबके लिये है, जो सबका ही कल्याण चाहते है। यह न मनभेद है न मतभेद है, यहां तो प्राणीमात्र के लिये दया, करूणा, सौहार्द, मैत्रीभाव, भ्रातत्व और अहिंसा की अमृत प्रभावना की भावना का साम्राज्य है।

परमात्मा के द्वारा शासन की स्थापना कोई संस्था या दल बनाने के लिये नहीं की गई थी, इसके मूल में समता और सर्वोदय का भाव छिपा हुआ है। अनुदाद, सकीर्ण और दुराग्रह जैसे विचारों में मानव को ऊपर उठाने के लिये परमात्मा ने शासन का स्वरूप हमारे सामने रखा है, इसके लिये किसी सदस्यता फार्म का प्रावधान नहीं,जो चाहे सो शासन से जुड़कर कार्य कर सकता है न जाति बंधन है न कोई सामाजिक रोक। परमात्मा की सोच कितनी गहराई वाली होगी कि प्रभु ने शासन स्थापना में किसी भी सर्कीणता को कोई स्थान नहीं दिया है।

परमात्मा ने शासन चलाने के लिये हमारे सामने जो स्वरूप रखा है वह भी अद्भूत है। गणधरों के द्वारा विरचित शास्त्र सम्मत् विधि विधानों के साथ बगैर कोई कमी और बगैर कोई गलती के परमात्मा ने जो अकाट्य तथ्य दिये है जो आज हमारे लिये परमात्मा की आज्ञा है, उसके अनुरूप शासन के आधार के लिये चार स्तम्भ हमें प्रदान किये है। हम सब जानते है यह चार स्तंभ साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका है। इन चार स्तंभ में शामिल होने के लिये सभी के लिये द्वार खुला है। क्या अद्भूत व्यवस्था है। परमात्मा की। पर फिर भी हम कहां सिखते हैं। यह देखकर तो मैनेजमेंट के सभी सिद्धांत अधूरे दिखाई देते हैं। क्या अद्भूत सामजंस्य है कि पार्टी के फेल होने का भी कोई खतरा नहीं दिखाई देता है। परमात्मा ने पहले ही बतला दिया कि यह शासन रूपी यह संस्था २१ हजार वर्ष तक निर्बाध चलेगी। इसके बाद पुन: नवसर्जन होगा।

हमें गर्व और अभिमान होना चाहिये कि हम परमात्मा के द्वारा स्थापित शासन के अंग है। इस संस्थान को चलाने का दायित्व प्रभु ने हमें प्रदान किया है।

तो आईये परमात्मा के शासन को चलाने में हम अपनी भूमिका की पहचान करें। और शासन को सुचारू रूप से चलाने में सहायक बने, यही अभिलाषा हम सब धारण करें, इसी शुभेच्छा से!

- डॉ. सुभाष जैन

अंतराय कर्म का उदय, वषिक तप का पारणा महापुण्योदय का पर्व ''अक्षय तृतीया''

''तवणे परिसुज्झइ'' तवेण घुणई पुराण-पावगा।

✻ शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर

तप केवल शुद्धि का मार्ग नहीं,बल्कि सिद्धि का मार्ग है। (तप से शुद्धि होती है और शुद्धि से सिद्धि होती है। सिद्धि का अर्थ है मोक्ष और शुद्धि कारक तत्व है- तप। मोक्ष की इच्छा रखनेवाले को तप तो करना ही है। वास्तव में आत्म शोधन रुप तप एक सम्पूर्ण प्रक्रिया है।) वह अखण्ड है। प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेव भगवान ने किसी एक भव का कर्म उदय आने से उन्हें एक वर्ष तक मौन और निराहार रहना पड़ा। इस भव में वह सेठ होकर उन्होंने एक किसान के खेत में रखे धान में बार-बार मुंह डालनेवाले बैलों के मुंह पर छींका बंधवा दिया जिससे बैल बारह पहर तक भूखे रहे। परिणाम स्वरुप इस भव में उन्हें एक वर्ष तक भूखा रहना पड़ा। वे कल्पनीय आहार की खोज में विचरण करते-करते पारणे की इच्छा से हस्तिनापुर पधारे। उस समय सोमयशा के पुत्र श्रेयांसकुमार ने स्वप्न में काले मेरु पर्वत को अमृत कलशों से प्रक्षालित कर उज्जवले बनते देखा। सुबुद्धि सेठ ने श्रेयांसकुमार को सूर्य से घिरी हजारों किरणों को पुनः स्थापित कर सूर्य को तेजस्वी रुप में उठते स्वप्न में देखा। सोमयशा राजा ने शत्रुओं से घिरे एक राजा को श्रेयांस की मदद से जीतते स्वप्न में देखा।

तीनों स्वप्न का निहीतार्श प्रत्यक्ष निर्णय देने के लिये अंततः भगवान स्वयं श्रेयांसकुमार के यहां भिक्षार्थ पधारे। भगवान श्रीऋषभदेव को देखकर कल्याण भाजन श्रेयांस हर्ष से नाच उठा। दर्शन पाते ही उसे पहले के खोये हुए निधान के समान जाति स्मरण ज्ञान प्राप्त हुआ। पूर्व जन्म में वे व्रजनाथ चक्रवर्ती थे, तब वह इनका सारथी था। श्रेयांस कुमार को उस भव की निर्देष भिक्षा देने का ज्ञान, विधि के साथ हो गया था। उसने प्रभु के पारणे में योग्य प्रासुक इक्षु-रस दिया। अधिक मात्रा में रस होने पर भी प्रभु के पात्रे में रस समा गया। वह रस ऊँची शिखा नाला बनकर उच्च लोक में ले जाने बना। प्रभु ने पारणा किया। आकाश में देवों ने मेघ के समान दुंदभिनाद और जलवृष्ठि, समरत्नों और पुष्पों की वर्षा की।

भगवान के पारणे का यह दिन वैशाख सुदि-तीज अक्षय तृतीया नामक पर्व, जिसके ऋषभदेव जैसे पात्र, इक्षु रस का आहार और श्रेयांस जैसा भाव ये किसी महापुण्य से ही प्राप्त होता है।

✻ दुर्जन के आँसू:- प्रेमसे (?) घास पर गिरे तो कोयला बन जाय। दुसरे पर के जुल्म को देखकर गिरे तो बर्फ के जैसी ठंडक हो, दर्द देखकर गिरे तो बंदूक की गोली बन जाय। भूख से पीड़ित को देखकर गिरे तो गुलामी का दस्तावेज बन जाय। प्यासे को देखकर गिरे तो विष-ज्वाला बन जाय।

आसक्ति- किसी भी व्यक्ति अथवा वस्तु के सम्पर्क में आने पर मनुष्य को उसके रंग-रुप इत्यादि के प्रति जो लगाव अथवा आकर्षण होता है, उसे अनुराग कहते हैं। प्रिय लगने के कारण मनुष्य चाहता है कि वह वस्तु अथवा व्यक्ति उसी के अधिकार में रहे। धीरे-धीरे इस अभ्यास से यही अनुराग ''राग'' का रुप धारण कर लेता है यही राग ''आसक्ति'' कहलाती है।

आसक्ति से मनुष्य पराधीन हो जाता है, स्वतंत्र नहीं रहता। जब तक उसे वह प्यारी वस्तु अथवा वह व्यक्ति दिखाई न दे अथवा न मिले तब तक उसे चैन नहीं आता। मनुष्य में जितनी आसक्ति होगी उतना-उतना वह परतन्त्र होगा और जितना वह परतन्त्र होगा उतना ही बेचैन होगा क्योंकि एक तो उस व्यक्ति अथवा वस्तु को पाने का संकल्प उसे चिंतित करेगा, उसको पाने के पुरुषार्थ में संकट भी झेलने पड़ेंगे, फिर उसके न मिलने पर अथवा मिलकर बिछुड़जाने पर वह दुःखी भी होगा।

अत: जो मनुष्य शोक से बचना चाहता है, उसे आसक्ति जरुर छोड़नी होगी। आसक्ति छोड़ने के लिये आवश्यकता इस बात की है कि बुद्धि युक्तियों अथवा नियमों को पूरी रीति से जाने अर्थात् दैवी गुणों और मर्यादा को भली-भांति समझे और ज्ञान की गदा धारण करें।

पाप की सजा भारी...!

*प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

माया मृषावाद का स्वरुपः-

प.पू. परमगुरु परमनाथ परमार्हन चरम तीर्थपति श्रमण भगवान श्री महावीर स्वामी के चरण कमल में अनन्तानन्त नमस्कार पूर्वक....

मनस्यन्द् वचस्यन्यद् मायामृषा च सोच्यते ।
कदाऽपि सुखदा न स्याद्विश्वे यथा पणांगना ॥

मन में कुछ और ही है और वचन व्यवहार में और ही कुछ भिन्न है यह मायामृषावाद कहलाता है। जो वेश्या की नीति के समान होता है। वेश्या के मन में जैसे मात्र धन-पैसे की प्राप्ती की इच्छा है वह कोई सच्चा प्रेम नहीं करती है फिर भी अनुराग पूर्ण वचन बोलना और बाहर से, ऊपर से कृत्रिम प्रेम दुनिया भर का दिखाएगी वैसा ही मायामृषावादी जीव है। मन में कुछ अलग ही रखता है और बोलने-चालने में और ही कुछ अलग रखता है। ऐसा भेदभाव रखनेवाला मायामृषावादी संसार में कभी भी सुखी बन ही नहीं सकता है।

2 रे और 8 वें पापस्थान का मिश्रणः-

प्रस्तुत पुस्तक जो ''पाप की सजा भारी'' शीर्षक से चल रही है जिसमें 18 पापस्थानों का क्रमशः विचार किया जा रहा है। अब आपकी आंखों के सामने अट्ठारह ही पापों का विस्तृत ख्याल आ गया होगा। एक मिनिट के लिए सभी पापस्थानों को क्रमशः याद कर लीजिए.... और पापस्थानों की नामसूचि में थोड़ा गौर से ध्याय से देखिए कि कोई भी पापस्थान दुबारा आया है ? या दो पापस्थानों के संयोग से मिश्रण से बना हुआ हो ऐसा दिखाई दे रहा है ? अब तक तो नहीं। सभी पापस्थान अपने अपने स्वरुप में, अर्थ में स्वतंत्र ही है। अकेले हैं और एक ही स्पष्ट अर्थ को लेकर चल रहे हैं। जबकि आज इस 17 वें क्रम पर आया हुआ यह माया-मृषावाद का पाप दो पापों के संयुक्त मिश्रण का स्वरुप है दूसरे क्रम पर मृषावाद पहले स्वतंत्र रुप से आया है इसके बाद आठवें क्रम पर माया का पापस्थान भी स्वतंत्र रुप से आया है और यहां 17 वें क्रम पर इन दोनों पापों को एकत्र-संयुक्त रुप से मायामृषावाद के रुप में दिया गया है। यही इस पापस्थान का स्वरुप है।

क्या आप और किसी भी पापस्थानों को एकत्र करके इकट्ठा करके संयुक्त पाप के रुप में बना सकते हैं ? बताइए किसकी किसको जोड़ेंगे ? किन-किन का मिश्रण करके कैसा स्वरुप बनाएंगे ? हां यह भी ध्यान रखना कि किसका व्यवहार में स्वाभाविक वर्तन है। जो लोकव्यवहार में सीधा चलता हो। वैसा एक भी नहीं बनेगा इस 17 वें मायामृषावाद के सिवाय अन्य संभव नहीं है। मृषावाद का विवेचन इसी श्रेणी में 5 वीं प्रवचन पुस्तिका में विस्तृत रुप से किया है। मृषावाद का सीधा और सामान्य अर्थ है असत्य बोलना, झूठ बोलना इतना ही काम इस मृषावाद के पाप का था। उसी तरह 11 वें क्रम आई प्रवचन प्रस्तिका 11 वीं में ''माया'' के स्वरुप का वर्णन किया गया है। माया का सामान्य अर्थ था ठगवृत्ति। किसी को ठगना। 2 रा और 8 वां दोनों ही पापस्थान स्वतंत्र है मृषावादी माया-कपट करना नहीं जानता। उदाहरणार्थ बालक स्वाभाविक रुप से झूठ बोल भी जाता है, नहीं पिताजी में खेलने नहीं गया था.... स्कूल से आते समय बस में पंक्चर हो गया था इसलिए देरी हो गई। पिता ने कहा- ठहर बस कंपनी से फोन करके पूछता हूं...! इतने में लड़के ने कहा नहीं-नहीं पिताजी बस का एक्सीडेंट हो गया था। पिता ने कहा- अच्छा मैं पुलिस में फोन करके पूछता हूं। फिर पुत्र ने कहा- नहीं पिताजी हमारी बस के बहुत आगे किसी का एक्सीडेंट हो गया था इसलिये रस्ता ही बन्द हो गया था...! फिर पिता ने कहा- अरे ! ठहर तो सही पुलिस में फोन करने से पता चल जाएगा कि इस रास्ते पर आज एक्सीडेन्ट हुआ था कि नहीं.... इस तरह पुत्र एक के बाद एक बात बनाता ही गया.... वह चाहता था कि झूठ बोलकर छूट जाऊं नहीं तो पिताजी के हाथ से आज पिटाई हो जाएगी। लेकिन मृषावादी असत्य कहां तक बोलते जाएंगे ? आखिर पकड़ा जाता है। क्योंकि असत्य बनाना पड़ता है। सत्य ही स्वाभाविक है। सहज है। जबकि असत्य कृत्रिम है। लड़का छोटा था, उसे माया कपट करनी नहीं आती थी, अतः अन्त में उसने सत्य प्रगट कर दिया.... पिताजी ! मैं पिक्चर देखने गया था और कान पकड़ लिए। यह तो सीधे स्वतंत्र मृषावाद का ही स्वरुप था।

अब माया का भी सीधा स्वरुप देखिए मायावी बोलेगा तो भी उसमें कपट की गंध आती है। वह ठगना चाहता है। बनाना चाहता है। अतः मायावी वृत्ति से वह किसी को ठगता

है। बनाता है। लूटता है। विश्वासघात करता है। इतना ही उसका कार्य है। अक्सर कमबोल करके अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये माया-कपट की जाल बिछाता है और ठगवृत्ति से किसी को ठगता है। यह माया-कपट का अर्थ हुआ।

मायामृषावाद का अर्थः-

17 वें क्रम पर इन दोनों पापों का एकत्र संयोजन किया गया है। 2 रे और 8 वें पाप का मिश्रण करके माया-मृषावाद बनाया गया है। अतः दोनों का ही अर्थ संयुक्त आया है। दोनों की पापप्रवृत्ति यहां एक साथ होती है। मिश्रित रुप से है। शब्द रचना माया-मृषावाद इस तरह है। अतः इस शब्द रचना का एक नाम देखकर एक शंका और उठती है कि इस तरह माया मृषावाद में पहले आंठवां और फिर दूसरा पाप क्यों रखा गया है ? जबकि क्रम संख्या में तो पहले 2 रा और फिर 8 वां स्थान आया है। अतः मुषावाद-माया अर्थात् मृषावाद (असत्य) पूर्वक माया का आचरण करना चाहिये। लेकिन नहीं ! यह शब्द रचना से भी ठीक नहीं है और अर्थ से भी ठीक नहीं बैठता। मृषावाद की माया। लेकिन यह भी उचित नहीं है। मृषावाद माया के बिना प्रयुक्त हो सकता है परन्तु माया के कई स्थानों में मृषावाद की आवश्यकता भी नहीं पड़ती है। यह जरुरी नहीं है कि प्रत्योक मायावी मृषावाद का सेवन करेगा ही ? अतः मृषावाद और माया के सेवन करने वाले संसार में स्वतंत्र पापवृत्ति के जीव है इसीलिए दोनों पापस्थानों को स्वतंत्र रुप से स्थान दिया गया है।

परन्तु जो मृषावादी माया का सेवन करता हुआ झूठ बोलेगा- माया-छल-कपट पूर्वक झूठ बोलेगा या जो मायावी माया-कपट की जाल में पकड़ा जाए और फिर झूठ बोलेगा वह संयुक्त रुप से दोनों ही पाप का सेवन करता है अतः न केवल मायावी कहलाएगा और न केवल मृषावादी कहलाएगा परन्तु माया मृषावादी कहलाएगा। अतः यह एक स्वतंत्र पाप स्थान है। इस पाप का सेवन करनेवाले भी संसार में सैकड़ें लोग है। अतः मायामृषावाद का एक अर्थ होगा- दंभ करना, छलना, प्रतारना करना। किसी को फसाने के लिये जाल बिछाना। कपट युक्त भाषा बोलना आदि। गुजराती भाषा में जिसे छेतर पिंडी करवी, कावतरा करवा, प्रतारणा करवी इत्यादि अर्थ होते हैं। ''मायातः उत्पन्नः मृषावादः=मायामृषावादः''। माया से उत्पन्न जो मृषावाद =झूठ वह मायामृषावाद कहलाता है। अर्थात् कपट पूर्वक झूठ बोलना, कपट करना। अतः यह ठग, दंभ-कपट करने वाला ठगी, दभी और कपटी-लुच्चा आदि नामों से पहचाना जाता है। ढोंग करना, दंभ करना यह इसकी मुख्य प्रवृत्ति है। मुंह में राम बगल में छुरी इस तरह दिखावा अलग और कार्य में बिल्कुल अलग। इसीलिए कहाकि- मन में कुछ और ही है और बोलने में कुछ और ही है और वर्तन करने में तो तीसरा कुछ अलग ही है यह माया मृषावादी का लक्षण है। यही इसकी पहचान है। अतः इसका रुप अलग होगा भाषा अलग होगी और वर्तन-व्यवहार में तो बिल्कुल ही अलग होगा। एक दृष्टांत देखने से आपको ख्याल आ जाएगा।

सन्यासी के रुप में ढोंगः-

उज्जयिनी नगरी में अत्यन्त निष्ठुर परिणाम वाला, कूटकपट वृत्तिवाला, अत्यन्त ठगवृत्ति वाला ठगी, महादंभी घोर शिव नामक ब्राह्मण रहता था। इस वृत्ति से वह शहर में सबको ठगता था। कईयों को बनाता था। इसलिये लोगों ने उसे गांव में से निकाल दिया था। उज्जयिनी से निकालकर चम्मार देश में गया। वहां चोरी-जारी करने वाले चोरों को मिला और उनके साथ मिलकर रहने लगा। उसने एक दिन चोरों को कहा देखो, मैं सन्यासी का वेष धारण कर उनके साधु के स्वांग में समाज में फिरुंगा और तुम 2-4 जन मेरे भक्त के रुप में साथ में घूमना मेरी प्रशंसा करना और लोग इस तरह मेरे भक्त बनते जाएंगे। मुझे अपने घर भिक्षा के लिये ले जाएंगे। इस तरह मैं लोगों के घर देखकर कौन कैसा है ? किसके घर चोरी करने जैसी है ? कहां से आना, कहां से जाना ? इत्यादि कई बातों की सूचना मैं दूंगा और दिन में सन्यासी का वेष और रात को चोरी करेंगे। इस तरह सब इस बात पर सहमत हुए और वैसा पाप का नाटक प्रारंभ किया।

दो-तीन गांवों के बीच अपनी झोपड़ी बनाई। आश्रम जैसा रुप दिया और दिन में नकली दाढ़ी-जटा भस्म लगाकर सन्यासी बाबा के स्वांग में भिक्षा के लिये निकलता। और दो-चार चोर भी उसके भक्त बनकर प्रशंसा करते हुए निकलते थे। बिचारे श्रद्धालु सामान्य लोग आकर्षित हो जाते थे। आखिर संसार के संसारी लोग तो अनेक दुःखों से भरे हुए हैं। पैसा है तो संतान नहीं है और संतान है तो पैसा नहीं है। इस तरह अनेक दुःखों से भरे हुए लोग आमंत्रण देकर, विनंती करके बाबाजी को घर पर बुलाते थे। पर्दापण कराके भिक्षा आदि देते थे। उस समय बाबाजी कहते थे कि मुझे तो अन्दर के भाग में, बिल्कुल अन्दर की रुम में बिठाओ और थोड़े समय के बाद महातपस्वी का ढोंग रचा। अरे ये महिने-महिने के

उपवास करनेवाले महातपस्वी है ऐसी प्रशंसा करके उसके साथी गण करते थे। भोले श्रद्धालु लोग सच्चे साधु की तरह मानकर सब कुछ आदर सत्कार करते थे।

बस इनके पारणा करके निकलने के बाद ये तो चोर पल्ली में जाकर अमुक घर में चोरी करने जैसी है यह सूचना दे देते थे और दो-चार दिन में उसके घर चोरी हो जाती थी। बिचारे का सारा घर साफ हो जाता था। इस तरह लोगों में एक गलत धारणा फैल रही थी, और लोग भी गलत सोचने लगे थे कि.... धर्मी के घर में धाड़ पड़ती है और पापी के घर लीला लहेर है। संभव है ऐसी विचार-धारा से भी कई धर्म छोड़ देते थे। वैसे भी देखा जाय तो धर्म छोड़ना तो बहुत आसान है और अधर्म-पाप छोड़ना बड़ा ही कष्टदायी मुश्किल है। वह सन्यासी भी रात को वेष परिवर्तन करके चोरों के साथ चोरी करने लगा।

अन्त में एक दिन चतुर कुलपुत्र ने घर में चोरी करते हुए चोरों को पकड़ने के लिये रस्सी की फांसी रखी और योगानुयोग सन्यासी ही उसमें फसा शेष सब चोर भाग गये। दिन में उसे राजा के समक्ष हाजिर किया गया। राजसुभटो ने कोड़ों की मार मारके सारी बातें निकलवा कर अन्य साथी चोरों को भी पकड़वाकर सारा धन निकलवाया और इसका भंडा फोड़ा.... शहर-गांवों में सर्वत्र प्रजा के बीच घुमाया गया और कहा कि ये ही चोरों को नगर में प्रजा के बीच घुमाया गया और कहा कि ये ही चोर है। सन्यासीपना यह सब इसका ढोंग है। कपटचरित्र है। यह निरर्थक दंभ है और कुछ नहीं है। असली नाम का फायदा उठाने के लिये तथा धर्म की, भगवान की, गुरु की लोगों को जो सच्ची श्रद्धा है उसका फायदा कैसे उठाया जाय इस हेतु से मायामृषावादी लोगों की श्रद्धा का फायदा उठाने के लिए विश्वासघात करता है। दंभी दंभ का सेवन भी इसी रुप से करता है। जंगल में मरे हुए सिंह का चर्म (खाल) पहनकर एक कुत्ता या शृगाल भी अपने आपको सिंह की गिनंती में गिनाता है। मैं सिंह हूं यह दिखाकर अन्य पशुओं को डराना आदि का काम करता है। यह तिर्यच गति के पशु पक्षीओं में भी माया-कपट की वृत्ति हुई। **माया मृषावादी का लक्षण:-**

अलसी सढोऽवलितो, आलंबन-तप्परो अइपमाई।
एवंठिओ वि मन्नई, अप्पाणं सुट्ठिओ मि त्ति ॥
जे वि य पाडेउणं, मायामोसेहिं खाइ मुद्धजण।
तिग्गाम-मज्झवासी, सो सोअइ कवडखवगुव्व ॥

माया मृषावादी कैसा होता है इस विषय में पूज्य धर्मदासगणी उपदेशमाला ग्रंथ के इन श्लोकों में कहते हैं- आलसी-प्रमादी, कपट वृत्ति वाला कपटी, सेठ, अहंकारी तथा छोटा सा बहाना मिलते ही स्वार्थवश सर्व कार्यो में तुरन्त अपवाद का सेवन करने वाला, अन्यन्त निंद्रालु, अन्य प्रमादगत दोषवाला तथा स्वयं दोष-गुणों से भरा हुआ होते हुए भी गुणवानों समक्ष भी अपने गुण का स्वरुप दिखाकर, अपने न होते हुए गुणों को भी दिखाकर गुणवानों की कक्षा में खपने का बालीश प्रयत्न करनेवाला, स्वप्रशंसा अतिरेक सहित करने वाला ऐसा व्यक्ति मायावी समझनी चाहिये। ऐसे कपटी दंभी को बड़ा भारी नुक्सान होता है। माया सहित झूठ बोलकर, जो लोगों को अपनी मायाजाल में फसाता है, उन्हें बनाता है, ठगता है, किसी की श्रद्धा का, विश्वास का दुरुपयोग करता है समझो वह मायावी है। जैसा कि कपट क्षपक ने सन्यासी का ढोंग रचा था। वैसा दंभ करके पेट भरनेवाले तो आज की दुनिया में सैकड़ों लोग मिल जाएंगे। एक तरफ तो दिल्ली के सफेद ठग जो जगप्रसिद्ध ही है। दिन-दहाड़े और आए दिन लोगों की आंख में धूल डालकर ठगते हैं। बना लेते हैं। वैसे ही बम्बई जैसे शहर में चले जाओ तो रेलवे की पटरी के किनारे झूपटपट्टी है। कई किसम के लोग इसमें रहते है। जिसमें ऐसे दंभी ढोंगी भी अनेक है। जो दिन में तो अच्छा सन्यासी का वेष पहनकर निकलते है और रात में चोरी करते है। डाका डालते है। शराब पीना और पिलाने का धंधा करते है। जुगार के अडडे चलाते है और न मालूम कैसे-कैसे सैकड़ों पाप करते है। **(आगे और भी है...!)**

ईश्वर- ***प्रभु का यह स्वभाव है कि वे भौतिकवादी के लिए जगत के रुप में अवतरित होते है, विश्वप्रेम प्रदान करते है, शांति प्रदान करते हैं, आदर प्रदान करते हैं। इसमें संदेह की कोई बात नहीं, और अंत में दुःख निवृत्ति भी कर देते हैं। आप ऐसा मत सोचिये कि ईश्वर ऐसा है कि- जो उसको मानता है उसका तो दुःख नाश करता है और जो उसको नहीं मानता है उसका दुःख नाश नहीं करता है। आप उसको मानिये, मत मानिये, जानिये, मत जानिये पर वह आपको मानता है और जानता है।***

श्रमण संस्कृति के दिव्यपुंज परम पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री

श्रमण संस्कृति के दिव्यपुंज परम पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री का अवतरण इस धारा पर जैन शासन की गरिमा और गौरव को चहुंगति प्रदान करनेवाला सिद्ध हुआ है। विश्व कल्याणकारी जैन शासन आपश्री जैसी साहित्यलोक प्रतिमा पाकर धन्य बन गया है क्योंकि आपश्री के द्वारा आगम ग्रंथों के लिये किया गया और दिया गया योगदान युगों-युगों तक जैन शासन की ध्वजा का जगत लहराता रहेगा।

जगत की आवश्यकता के अनुसार गौरवशाली चरित्र के संतों का जन्म होता आया है, वे सभी उस आध्यात्मिक प्रकाश की ओर ईशारा करते है जो सृष्टि के प्रत्येक मानव के जीवन का उत्थान करता है पर आगमोद्धारकश्री ने तो मानव का ही नहीं जैन जगत का उत्थान करने का कार्य किया है। जिनागम के आदित्य से पूज्यपादश्री ने जैन जगत को आलोकित कर दिया है।

एक ऐसा तेजोमय व्यक्तित्व जिनकी वाणी ओर कलम से ज्ञानगंगा प्रवाहित होती रही है। आपश्री के नाम स्मरण मात्र से हृदय मंदिर में परमात्म प्रीति की ऋचाएं गुंजने लगती है। पूज्य आगमोद्धारकश्रीजी का जीवन संयम और साधना की रोशनी बिखेरता पूर्णिमा के चंद्रमां सा शीतल और शांत था किंतु पूज्यश्री के अमावस्या के दिन भी जन्म लेकर जिन शासन के गंगन मंडप में एक ऐसे जाज्वल्यमान सितारे के रूप में अमर ख्याति पाई है कि आज भी सागरजी महाराज के आगम अवदान को जैन जगत भूल नहीं पाया है और न भूल पायेगा।

अनेक कठिन परिस्थितियों से मुकाबला करते हुए लोगों और साधुओं के द्वारा पूज्यश्री की ख्याति और बढ़ते गौरव के कारण स्वार्थ से लिप्त होकर जो षड़यंत्र रचे गये थे उन सब का जवाब आपश्री ने जिनशासन की हित कामना से किये गये कार्यों और सच्चाई के बल पर निष्फल कर दिये थे। वे अडिग मेरूपर्वत के समान अपने कार्यों से षड़यंत्रकारी असंतुष्टों को करारा जवाब देते आये थे। देश धर्म जाति और समुदाय से ऊपर उठकर पू.आगमोद्धारकश्री ने आगमग्रंथों के उत्थान का जो कार्य किया है वह अनुकरणीय अनुगमनीय एवं अतुलनीय है इसी कारण आज आगमोद्धारकश्री समुचे जैन जगत में जिनशासन के प्रकाश स्तम्भ बन गये है। आगमोद्धारकश्री पू.गुरू गौतम गणधर की उस श्रमण संस्कृति के जयवंता प्रतीक है जिनमें जीवन में तीर्थों की पवित्रता, सिद्धों की सिद्धता और गुरूत्व का गौरव झलकता है।

सागर समुदाय के सरसंघ सरताज पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा चरम तीर्थंकरपति भगवान महावीर स्वामीजी की श्रमण पाट परम्परा के ऐसे संत है जिन्होंने कभी भी समाज को पूजापाठ एवं परम्परा के नाम से विघटित नहीं किया है बल्कि आपश्री के आगम अध्ययन के आगे जैन जगत के सारे संत समुदाय नत्मस्तक होते थे परम्परा तिथि आदि का निर्णय उस समय सागरजी की वाणी ही करती थी पू.आचार्य नेमिसूरीजी म.सा.हो या पू.आचार्य वल्लभ सूरीश्वरजी म.सा.हो या पूज्य पुण्यविजयजी म.सा. आदि श्रमणवृंद शासन की कोई भी संकट प्रधान स्थिति में निर्णय लेने के लिये,उसके समाधान के लिये पूज्य सागरजी महाराज से ही सलाह लेते थे ओर सागरजी महाराज जो समाधान प्रस्तुत करते थे उस पर ही अमल करते थे। सारे जैन जगत का श्रमण समुदाय सागरजी महाराज के उस तर्क सम्मत धर्मविधि सम्मत समाधान का सम्मान करते हुए उस पर चलते थे। यह सागरजी महाराज सम्मान के अभिलाषी नही थे बल्कि शासन के हिताभिलाषी थे।

पूज्यपाद आगमोद्धारकश्रीजी ने श्रावक की उच्चकोटि की जीवनचर्या से श्रमण संघ के कठोर साधना पथ को अंगीकार कर संयम जीवन पर्यन्त दिन में मात्र एक बार भोजन (एकासणा) का कठोरता से पालन करते हुए तपस्या एवं संयम की उच्च पराकाष्ठा का निर्वाहित करते हुए निस्प्रही योगी सागरजी महाराज ने अपने ज्ञान,ध्यान,मनन चिंतन,साहित्य सृजन सब कुछ को लोकहित में समर्पित करते हुए अपनी अंतिम सांस को भी शासन को समर्पित कर दिया। सागरजी महाराज एक ऐसे महानायक थे जिनके जीवन का हर कर्म, प्रभु पूजा को समर्पित था। संस्कृति, साहित्य, मानवता का मेरूदण्ड है। इस बात को सागरजी ने चरितार्थ करने के लिये अपने जीवन का लक्ष्य जैन आगम ग्रंथों की प्राचीनता और अप्राप्त खंडों को ढूंढने और शोध को बनाया। वे इस बात को जानते थे कि आगम ग्रंथों के इतिहास को ज्ञातकर जैन संस्कृति के समृद्धिशाली एवं गौरवमय अतीत को उजागर किया जा सकता है।

आगम के बारे में विभिन्न संतों की परस्पर विरोधी मान्यताओं और मतभेदों को दूर करने के लिये आपने संपूर्ण भारत को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर हजारों की संख्या में आगम ग्रंथों को खोज निकाला। एक बार कोई श्लोक या पंक्ति स्मृति कोष में पहुंच गई फिर तो उसका संदर्भ,ग्रंथ का नाम, पृष्ठ क्रमांक चाहे जब बताने की सक्षमता उनके मस्तिष्क में थी उन्होंने अपनी मेघा शक्ति के बल पर अधूरे श्लोक को पूरा कर दिखाया था। ताड़ पत्रों पर लिखे गये आगम ग्रंथों को खोज निकाल कर उनको आरस से लेकर धातु की पट्टिकाओं पर अंकित करवाकर उनको अमरता प्रदान कर जैन संस्कृति को जीवनदान दिया। सागरजी महाराज ने शास्त्रों में परमात्मा की अनुभूति की थी, ज्ञान को प्रभु भक्ति का आधार बनाया था। इसलिये तो उन्होंने आगम ग्रंथों को सुरक्षित रखने के लिये स्थान-स्थान पर आगम मंदिर का निर्माण करवाया। जो आज भी उनकी उपस्थिति का आभास कराते हैं।

बड़े करामाती है हमारे हाथ !

पाश्चात्य सभ्यता में मिलन और बिदाई के अवसर पर प्रसन्नता व्यक्त करने के लिये हाथ से हाथ मिलाने का रिवाज है। यह मात्र प्रथा प्रचलन ही नहीं है, इसके लिये मानवीय विद्युत के आदान-प्रदान के साथ-साथ भाव संवेदनाओं का किसी कदर विनिमय करना भी है।

स्नेह प्रदर्शन के लिए छोटों के सिर पर हाथ फिराया जाता है। बालकों के कपोल सहलाये जाते हैं। भावों की अभिव्यक्ति करते समय वक्ता की उंगलियाँ भी चलने लगती है। हस्त मुद्रांएं अनायास ही बनती है। यह एक प्रकार का भाव नृत्य है। जिसके लिये नर-नारियों के नर्तन जैसा अंग संचालन नहीं होता। थिरकन की भी आवश्यकता नहीं पड़ती पर हाथों की अदालती बदलती मुद्राएं ही यह प्रकट कर देती है कि प्रवक्ता के अन्तराल में किस प्रकार का भाव संचार गतिशील हो रहा है।

आंतरिक उभारों का परिचय प्रधानतया मुख मुद्रा में प्रकट होता है। आँखों को मनुष्य के हृदय का दर्पण माना जाता है। उनके उतार चढ़ाव देखकर पारखी यह समझ लेते है कि अन्तराल में क्या कुछ उभर रहा है। होट, कपोल भी अभिव्यक्तियों के प्रकटीकरण में सहायक होते हैं। भवें तथा माथे की रेखा भी अपने ढंग से व्यक्ति की मनःस्थिति का, भाव संवेदना का परिचय देती है। सौंदर्य की छटा चहरे पर छाई रहती है। कुरुपता भी वहां बसती है। शरीर के अन्य अंग तो प्रायः कपड़े में ढंके रहते हैं पर चेहरा तो खुला ही रहता है। उसे ध्यानपूर्वक देखा जा सके तो मनुष्य के व्यक्तित्व और कर्त्तव्य का स्तर का परिचय बहुत अंशों मे जाना जा सकता है।

चेहरे के उपरांत दूसरा उतना ही संवेदनशील अंग है- हाथ। यद्यपि उनमें वाणी नहीं होती। देखने सुनने के आधार भी नहीं है इतने पर भी बोलते, सुनते, समझते, देते तथा लेते रहते हैं। उनकी भाव संवेदना अपने आप में असाधारण है। मोटेतौर पर उन्हें विविध-विधि कामों में निरत रहते देखा जाता है। पैर तो चलने फिरने की आवश्यकता पड़ने पर ही काम आते हैं, पर हाथ है जो अनेक प्रकार के ताने बाने बुनते रहते हैं। वाद्य-वादन, लेखन, शिल्प, व्यवसाय आदि में जितना उनका उपयोग होता है उतना और किसी अंग अवयव का नहीं।

यह सब तो हाथों के बारे में प्रत्यक्ष ही है और सर्वविदित भी। पर गहराई में उतरकर उनकी विचित्राताओं का अध्ययन किया जाय तो प्रकट होता है कि उनकी एक दिशा धारा गिराने उठाने की भी है। वे अपने संकेतों के द्वारा वाणी की आधी आवश्यकता पूरी कर देते है। मूक या मौन व्यथाओं की भावाभिव्यक्ति हाथ के संकेतों पर ही निर्भर होती है। उनके आकार बनाकर इच्छा को आसानी से दूसरों पर प्रकट किया जा सकता है।

चरण स्पर्श में, मस्तक पर तिलक लगाने में, कलाइयों में सूत्र बांधने में रहस्यमय अर्थ छिपे हुए हैं। शरीर की मालिस में हाथ पैर मसलने में, हाथ जो चमत्कारी परिचय दिखाते हैं, वह किन्हीं अन्य यंत्र उपकरणों से संभव नहीं हो सकता। क्षमा याचना से लेकर धमकी देने तक में हाथों की अनुकृतियां अपना उद्देश्य भली प्रकार पूरा कर देती है। शान्तवना एवं आश्वासन देने में, स्वीकृति तथा अस्वीकृति प्रकट करने में हाथ अपनी भूमिका भली प्रकार निभाते देखे गये हैं।

यहां हाथों का विवेचन कलाई से लेकर हथेली समेत उंगलियों वाले भाग का किया जा रहा है। यह शरीर का एक छोटा पतला छिरछिरा भाग है, पर उसकी कार्यक्षमता असाधारण है। मस्तिष्क के कार्टेक्स में इस भाग को 30 प्रतिशत से अधिक प्रतिनिधित्व मिला है। भाव क्षमता भी हस्तस्पर्श से रोग निवारण की विधा प्राण चिकित्सा सायकिक हीलिंग के नाम से प्रख्यात है। ईसा से लेकर अनेकानेक सिद्ध पुरुषों में यह क्षमता पाई जाती है। इंग्लैंड के राजा के बारे में बहुत समय पूर्व यह मान्यता थी कि वे राजयक्ष्मा के रोगी को स्पर्श कर दें तो बीमारी से छुटकारा मिला जाता था।

प्रणय प्रसंग में हाथों की भूमिका सर्वाधिक होती है। प्रेम का प्रकटीकरण और घनिष्ठता भरी उमंगे उत्पन्न करना उन्हीं का काम है। यौनाचार क्षणिक होता है। वे आवेश भरे उन्माद ग्रस्तता के क्षण होते हैं। उनमें आवेश आतुरता और अस्त व्यस्तता का समावेश रहता है। नशा उतरने पर सब कुछ ठंडा हो जाता है। किन्तु हाथ ही हैं जो अपनी हलचलों से उस आनन्द को घंटों बनाये रखाते हैं।

ज्योतिषी हस्त रेखाएं देखकर भूत, भविष्य, वर्तमान की अनेक बातें बताते हैं। गुण, दोषों की विवेचना करते हैं। आयुष्य, धन, सौभाग्य, दुर्घटना, दुर्भाग्य आदि के कितने ही

रहस्यमय पृष्ठ खोलते हैं। विद्वान कीरो ने सामुद्रिक विद्या पर एक विज्ञान-सम्मत ग्रंथ लिखा है। यों भारत के मनीषियों की इस संदर्भ में अति प्राचीनकाल से जानकारी रही है और उन्होंने उसका वर्णन सामुद्रिक शास्त्र के अनेक ग्रंथों में किया है।

विज्ञान की नवीनतम खोजों में हथेलियों, पोरवों के उभार गठान तथा गड्डे देखकर आंतरिक अवयवों की स्थिति समझने के विषय में गहरी जानकारी प्राप्त करने का आधार ढूंढ निकाला है। जो काय-परीक्षा के विभिन्न निरीक्षण, परीक्षणों द्वारा जाने जा सकते हैं, उन्हें हाथ को बारीकी से टटोलने पर भी जाना जा सकता है। इसे समग्र पैथालॉजी की स्थानापन्न विद्या समझा जा सकता है। अब डर्मेटोग्लायफिक्स के रुप में चिकित्सा विज्ञान भी इसे मान्यता दे चुका है। जानकारी प्राप्त कर लेना एक बड़ी बात है, पर महत्वपूर्ण तो उपचार है। शारीरिक, मानसिक, रोगों के रुप में उभरती रहने वाली आधि व्याधियां बिना उपचार के जाती नहीं। चिकित्सा आवश्यक है, रोग भले ही किसी प्रकार का क्यों न हो ? प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों में नवीनतम यह है कि हाथ के किसी भाग विशेष को गुदगुदा कर उसमें उभरे असंतुलन को दूर किया जाय।

इतना तो सभी जानते है कि शरीर में फैले हुए पतले ज्ञान तन्तु मस्तिष्क से संबंधित है। वे मेरुदण्ड मार्ग से मस्तिष्क की सूचनाएं पहुंचाते हैं और वहां से जो निर्देश मिलते है, उसके अनुसार विभिन्न अवयवों को काम करने के लिये सहमत करते हैं पर यह अब कुछ ही समय पहले खोजे गये हैं कि शरीर की ही नहीं मन की भी अस्त-व्यस्तता होने पर उसके प्रतिबिम्ब हाथ पर भी उभरने लगते हैं। अंगों एवं घटकों की सूक्ष्म संबद्धता हाथों के साथ भी रहती है। हाथों में दाहिना हाथ अधिक संवेदनाशील होता है। उसी की प्रमुख रुप में जांच पड़ताल का अथवा चिकित्सा प्रयोजनों में प्रयुक्त किया जाता है। बांया हाथ काम में भी कम आता है और संवेदनशील भी कम होता है। इसलिये प्रायः सभी महत्वपूर्ण कार्यो में जिनके कार्यो में जिनके कार्य का केन्द्र बांये मस्तिष्क में होता है, दांये हाथ का ही प्रयोग होता है।

हाथों में दबाने, गुदगुदाने, चिकौटी काटने, मसलने, दबाने की एक विशेष विद्या है। जिसे प्रमोद की कला नहीं एक महत्वपूर्ण उपचार पद्धति समझना चाहिये। प्रयोगों से सिद्ध होता जा रहा है कि मात्र हाथ के साथ छेड़खानी की एक्यूप्रेशर की विधियों की समुचित जानकारी प्राप्त करके मनुष्य को रोग मुक्त ही नहीं सुविकसित भी बनाया जा सकता है।

ओली आराधिका साध्वी विरक्ता श्रीजी म.सा. की मनोभावना

✻ मुनि मोक्षरत्नसागर

रोज ''सूरजमंडण'' प्राचीन चमत्कारी मणिभद्रदादा को धर्मलाभ ! आपकी दो बात की भावना भाता हूं, संसारी वर्षीतप आराधक दिलीपभाई ने अपना कर्त्तव्य पूर्ण किया, इस भव में संयम स्वीकार सके, ऐसा मुझे एक बार सीमंधर स्वामी की देशना इस भव में सुनने ले जाए तथा सुबह मंदिर में दर्शन करते हुए परमात्मा को प्रार्थना करता हूं, आपकी कृपा के बिना सारे कर्म क्षय होना संभव नहीं है पर जब तक सारे कर्म क्षय नहीं हो तब तक हर भव में शासन की प्राप्ति, संयम प्राप्ति, समाधि-मरण की प्राप्ति मिले। आप सिद्धक्षेत्र में तीर्थाधिराज की तीर्थपति की साक्षात निश्रा में बहुत सारे कर्म क्षय कर रहे हो, मुझे 100 ओली की अंतिम आराधना भी आपकी जैसी अविस्मरणीय हो। दादा के दर्शनयात्रा करते हमको याद करना, अब आपकी 100 ओली सिद्धक्षेत्र के प्रभाव से जल्दी से पूरी हो यही मणिभद्रदादा को याद करके कहूंगा।

विचार- मित्र की समृद्धि को देखकर जरुर यह विचार आ जाता है कि अहो ! वह मुझसे कितना आगे बढ़ गया, परन्तु दूसरों के सुकृतों को देखकर यह विचार नहीं आता है कि वह आगे बढ़ गया और मैं पीछे रह गया। किसी क्षमावान को देखकर यह विचार नहीं आता है कि वह इतना क्षमावान हो गया और मैं इतना क्रोधी ही बना रहा। दूसरों की गुण-समृद्धि को देख हृदय में उनके प्रति प्रमोद भाव धारण करें। दूसरों के जीवन में रही दोषमुक्ति को देख अपने हृदय में उनके प्रति प्रमोदभाव और पाप के प्रति धिक्कार भाव पैदा करें।

मैं मनक

✻ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

ए बिन बाप के ! बैठ बैठ अब ! तेरे बाप का तो कोई ठिकाना नहीं है और हमारे सामने तकरार कर रहा है ? जा.... तेरी माँ को पूछकर आ कि मेरा बाप कौन है ? फिर हमारे पास बात करना।

सात-आठ वर्ष की उम्र में मैं गलियों में खेल रहा था और किसी लड़के ने मुझे ऐसे तीखे ताने सुनाये। मेरे कान में तो मानो कीले गाढ़े गये। मैं तो खेलने का छोड़कर सीधा पहुंचा माँ के पास और बोल उठा- माँ...! माँ...! मेरे पिताजी कहां है ? कौन है ?

बेटा ! तुझे क्या काम है ?

नहीं.... माँ ! मुझे काम है।

मेरी माँ ने शुरुआत में आनाकानी की, लेकिन फिर सच्ची बात बताते हुए कहा- बेटा ! तेरे पिताजी महान कर्मकांडी विद्वान ब्राह्मण थे। वे एक बार एक बड़ा यज्ञ करवा रहे थे तब कोई जैन मुनि आये और उन्हें भ्रमित करके यज्ञ छुड़्वाकर बाबाजी बना दिया है। तू पेट में था तभी वे गये हैं। उसके बाद, आज तक मुझे कोई समाचार नहीं है।

मेरी माँ ने इस प्रकार वर्णन किया कि मुझे जैन मुनियों की तरफ और पिता मुनि की तरफ धिक्कार जग जाये। मेरी माँ की भी यही इच्छा थी कि किसी भी तरह यह मेरा पुत्र मुनि नहीं बन जाये। लेकिन भवितव्यता कुछ और ही थी। उल्टा पिता मुनि को मिलने की मेरी उमंग बहुत ही बढ़गयी। मैं तो पिता मुनि की खोज में निकल पड़ा।

योगानुयोग ऐसा हुआ कि जिस गांव में मेरे पिता मुनि थे उसी गांव में मैं जा पहुंचा। मैं गांव में प्रवेश कर रहा था। तभी मुझे एक मुनि मिले। यद्यपि वे मेरे पिता ही थे, लेकिन मुझे तब पता नहीं था। उस समय ही नहीं, मुझे जीवनभर यह पता नहीं चला कि सचमुच ये मेरे पिताजी ही है। सामने मिले मुनि ने मुझे अति प्रेम से बुलाया। उनको देखकर मुझे भी अत्यंत स्नेह उमड़आया। उन्होंने मुझे पूछा- वत्स ! तू कौन है ? क्यों आया है ? यहां किससे काम है ?

मैंने कहा- मेरा नाम मनक है ? मैं अपने पिताजी को ढूंढने आया हूं। मैंने सुना है कि मेरे पिता श्री शय्यंभव भट्ट जबरदस्त क्रियाकांडी ब्राह्मण थे। एक बार यज्ञ करवा रहे थे तब दो जैन मुनियों ने उनको कहा- ''अहो कष्टं अहो कष्टं, तत्वं न ज्ञायते परम्।'' जैन मुनि कभी झूठ नहीं बोलते- ऐसे मान्यता से प्रेरित होकर मेरे पिता ने यज्ञ के पुरोहितों को पूछा- सच बोलो.... इसमें तत्व क्या है ? यज्ञ यही तत्व है। यज्ञ करनेवाले को स्वर्गादि सुख मिलते है यही इसका रहस्य है। पुरोहितों का ऐसा जवाब सुनकर मेरे पिता ने तलवार खींचकर गुस्से से लालपीले होकर कहा- पण्ड्या सच बताओ.... नहीं तो इस तलवार से तुम्हारी गर्दन उड़ गई समझो। क्या रहस्य है यहां ? तलवार देखकर बहुत ही भयभीत बने हुए एक पंडे ने यज्ञ के स्तंभ के नीचे से श्रीशांतिनाथ भगवान की प्रतिमा दिखाकर कहा- रहस्य यह है। इसी के प्रभाव से सभी चलता है। सत्य बात समझ में आने पर तुरन्त ही मेरे पिता ने झूठे यज्ञों का त्याग करके जैन दीक्षा स्वीकार कर ली। आठ-आठ वर्ष का लम्बा समय इस बात को बीत गया है लेकिन आज तक मेरे पिताजी के कोई समाचार नहीं है। लोग ऐसी बातें करते रहे है कि शय्यंभव मुनि तो महान आचार्य बन गये हैं। तो मैं उनकी तलाश करने आया हूं।

मेरी बात सुनकर उन मुनि ने मेरी पीठ पर वात्सल्यभरा हाथ घुमाया और कहा- वत्स ! वह शय्यंभव मुझे ही समझ ले न ! चल मेरे साथ उपाश्रय में। मैं इनके साथ उपाश्रय में गया। मेरी धामधूम से दीक्षा हुई। दीक्षा के बाद मेरे पिता मुनि ने देखा कि मेरी आयुष्य छः ही महिने का हैं। इतने छोटे पर्याय में समुद्र जितना जैनशासन का ज्ञान किस तरह दूं ? अतः पूर्वो में से उद्धार करके मुनिजीवन की आचार संहिता रुप ''दशवैकालिक'' नामक दस अध्ययन की एक छोटी-सी कृति बनाई। मैं उस दशवैकालिक का प्रथम अध्येता बना। छः महिने में मेरी आत्मा को जीवों परकी परम करुणा के रस से रंग दिया। मुनि-जीवन के आचार को रग-रग में भर दिया। छः महिने के बाद जब मेरी समाधिभरी मृत्यु हुई तब मेरे पिता मुनि की आंख में आंसू छलक आए। अन्य मुनियों ने पूछाः- गुरुदेव ! आपकी आँखों में आंसू क्यों ? बड़े-बड़ेआपके परम भक्तशिष्यों का कालधर्म होने पर भी आपकी आँखों में आँसू हमने नहीं देखे। जबकि आज एक छः महिने के पर्यायवाले बाल मुनि के स्वर्गवास के समय आँसू क्यों ? तब मेरे पिता मुनि ने पहली बार बताते हुए कहा- महात्माओं ! यह मनक मुनि मेरे संसारी पक्ष में पुत्र थे। अरे.... गुरुदेव ! आपने हमें

यह बात पहले क्यों नहीं बताई ? हमें उनकी सेवा का लाभ मिलता न ? ऐसी सेवा सचमुच सेवा नहीं कही जाती, परन्तु खुशामद कहीं जाती है। जब आपको पता चल जाता है कि आचार्यश्री के संसारी पुत्र है, उनकी सेवा करेंगे तो आचार्यश्री खुश होंगे, तब आपकी यह सेवा खुशामद बन जाती है। और, दूसरी महत्व की बात यह है कि यदि आप उसकी सेवा में लग जाएं तो मनक मुनि को क्या लाभ मिले ? यह तो ऐसो आरामी ही बन जाते न ? मुझे उनके शरीर का नहीं परन्तु आत्मा का हित करना था। इसलिए ही मैंने इतने दिन तक तुम्हें यह बात नहीं बतायी। उनके लिये बनाया हुआ दशवैकालिक सूत्र अब मैं समेट (बंद कर) लेना चाहता हूं।

नहीं.... नहीं.... गुरुदेव! ऐसा मत कीजिये। भविष्य में यह तो बहुत ही काम आयेगा। हमारे लिये अब इसे ऐसे ही रहने दीजिए। शिष्यों की विनंती स्वीकार कर गुरुदेव ने यह दशवैकालिक सूत्र रहने दिया। पहले मुनि प्रथम आचारांग सूत्र का अभ्यास करते उसके बाद बड़ी दीक्षा होती, लेकिन तबसे दशवैकालिक सूत्र का अभ्यास होने लगा। ऐसे, मेरे निमित्त से बना हुआ दशवैकालिक जैनशासन में अमर सर्जन बन गया, जो पांचवें आरे के अंत तक रहेगा।

बंधुओं! मेरे जैसा छोटी उम्रवाला अल्पपर्याय वाले का जैनशासन में कहीं भी स्थान हो सकता हैं ? लेकिन शासन का प्रभाव तो देखो। महापुरुषों ने मेरे नाम को भरहेसर की सज्झाय में रखकर मुझे अमर बना दिया है। ''अदायगो मणगो'' आप बोलते हैं न ? ''मणगो'' यह मैं स्वयं ही! सचमुच यदि मुझे जैनशासन नहीं मिला होता तो मेरा जीवन बेकार हो गया होता। मुझे कोई याद भी नहीं करता होता। बालकों! मिले हुए जैनशासन से और सद्गुरु से बराबर जुड़ कर रहना। काम हो जायेगा।

पाप का परिणाम

अपनी शारीरिक पीड़ा अन्य किसी को मालूम पड़े या न पड़े तो भी उस पीड़ा की अनुभूति तो हमें अवश्य होती है, उसी प्रकार अपना किया पाप किसी को मालूम पड़े या न पड़े तो भी उस पाप की सजा तो हमें अवश्य भुगतनी पड़ती है। आश्चर्य है कि हम अपनी शारीरिक पीड़ा को छिपाने की कोशिश नहीं करते हैं, बल्कि उसे डॉक्टर के आगे प्रकट कर तुरन्त इलाज कराना प्रारंभ कर देते हैं, जबकि आश्चर्य है कि हम पाप को छिपाने की ही कोशिश करते हैं। हमारा पाप कोई जान न जाय, उसके लिये हम पूरी-पूरी सावधानी रखते हैं। रोग के परिणाम को हम अच्छी तरह से जानते हैं, जबकि पाप के परिणाम को देखने में हम अंधे या अज्ञानी बन जाते हैं।

क्रोध और धैर्य में अन्तर

बैलगाड़ी में घी के घड़े भर कर कुछ ग्वाले नगर में आये और बाजार में घी के घड़े नीचे उतारने लगे।

एक ग्वाला अपनी पत्नी को घड़े दे रहा था। दो-चार घड़े पत्नी ने उतार दिये थे। इतने में एक घड़ा नीचे देते समय ध्यान न रहने के कारण छूटकर नीचे गिर गया। ग्वाले को क्रोध आ गया। उसने पत्नी से क्रोध में आकर कहा- किस युवक को ताक रही थी जिससे यह घड़ा छूट गया ? यह आक्षेप सुनकर पत्नी को भी क्रोध आ गया। उसने कहा- मुर्ख! तू ही किसी छेलछबीली की ओर नजरें गाढ़-गाढ़ कर देख रहा था और मुझे उलाहना देता है ? तूने मेरे हाथ में ठीक से घड़ा दिया ही नहीं।

दोनों में बात बढ़ गई। ग्वाला आवेश में आ गया। वह पत्नी को पीटने के लिये गाड़ी से उतर रहा था कि उसके पैर के झटके से एक और घड़ा फूट गया और उसकी मार से सारे घड़े फूट गये। अन्दर से घी बहने लगा। ग्वाले का क्रोध बढ़ गया। वह नीचे उतर कर पत्नी को मारने लगा तब पत्नी नीचे रखे घड़ों पर गिर गई, वे भी फूट गये। सारा घी मिट्टी में मिल गया। कुछ समय बाद दोनों शांत हुए तब पश्चाताप भी हुआ। लेकिन अब क्या ? चिड़िया चुग गई खेत।

इधर दूसरी तरफ भी गाड़ी से घी के घड़े उतर रहे थे। पति दे रहा था, पत्नी ले रही थी, इतने में असावधानी वश एक घड़ा गिरकर फूट गया। पति बोला- मेरी भूल हो गई। मैं समझा तुमने घड़ा पकड़ लिया है तभी पत्नी बोली, नहीं! मैंने ही बराबर नहीं पकड़ा, मुझसे ही गलती हो गई। फिर दोनों मिलकर जितना घी बच सकता था, बचाया और शाम तक सारा घी बेचकर प्रसन्नता से घर की ओर चले।

''क्रोध का परिणाम सर्वनाश।'' ''धैर्य का परिणाम मीठा फल।''

हमारा नंबर इन दोनों प्रकारों में से किस प्रकार में है ? सोचना है! समझना है! तभी तो इन कथानक को पढ़ने का वास्तविक फल मिलेगा।

श्री गुरु गौतमस्वामी आदि गणधर दीक्षा दिवस एवं चतुर्विध संघ– शासन स्थापना दिवस पर विशेष आलेख

चतुर्विध संघ की स्थापना

भगवान महावीर की तपाराधना निरन्तर चल रही थी। कभी छह माह तो कभी चार माह, कभी पन्द्रह दिन तो कभी एक माह। बेले से पहले तो एक भी पारणा नहीं हुआ। करीब साढ़े बारह वर्ष होते आए थे। कर्मों की निर्जरा हो रही थी। जन्म जन्मांतर के कर्म शिथिल हो रहे थे। कर्मों की कड़ियां टूट रही थी शरीर कृश जरूर हो रहा था। किन्तु तेज और बढ़ रहा था। चेहरे पर शान्ति सौम्यता थी। उनकी आत्मा निर्मलता की और बढ़ रही थी। मुखमंडल पर प्रसन्नता थी। भावों में विशुद्धता थी। अंतर में धीरे–धीरे वीतरागता का तेज उभर रहा था। मानो पत्थर से प्रतिभा प्रगट हो रही हो। कभी अस्त न होने वाला साहस्रों किरणोंवाले भानू के उदय के पूर्व आभा प्रगट हो रही हो। कर्मों के काले बादल बिखर रहे थे। तपश्चर्या की प्रचंड अग्नि में कर्म मलिनता जलकर भस्म हो रही थी। आत्मा पर जो ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का आच्छादन था वह हट रहा था। दुध और पानी की तरह भेद विज्ञान द्वारा कर्म और आत्मा अलग हो रही थी। वीतरागता की प्रकृति तेज गति से अग्रसर हो रही थी। घाती कर्मों का क्षय हो रहा था। उनमें एक परम आल्हाद का अनुभव हो रहा था। चारों और एक अपूर्व आध्यात्मिक घटा छायी हुई थी। अखण्ड ज्योति प्रगट हो रही थी। वर्धमान निस्तब्ध थे। अतीत के कलुषित कर्म वर्तमान में विसर्जित हो रहे थे। उज्जवलता, शुभ्रता निर्मलता आत्मा में प्रगट हो रही थी। अनुकम्पा, वीतरागता, समत्व आदि द्रवीभूत होकर कैवल्य के सांचे में शुभाकार ढल रहे थे। कितना वैभवशाली था वह क्षण जो कर्म शत्रुओं ने आत्म समर्पण कर दिया था। ज्योतिर्धर महावीर ने पर ज्योति का मुकुट पहन लिया था। चरम निर्मल ज्ञान की प्राची में कैवल्य का भानू प्रगटता की ओर था। जन्म मरण से मुक्ति देने वाले अमरत्व की पदचाप सुनाई दे रही थी। संवर सक्रीय था। मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय आदि आश्रव निस्तब्धता की ओर अग्रसर हो रही थी। निर्जरा भी अंतिम दौर पर थी। कैवल्य ज्ञान का सूरज उदाचल की ओर झांक रहा था। महावीर की तेजस्विता बढ़ रही थी। क्योंकि इस उत्सर्पिणी काल के अंतिम के साथ तीर्थंकर भगवान महावीर का ज्योतिर्धर धर्मचक्र अपने संपूर्ण प्रभाव के साथ प्रवर्तित होने को तैयार बैठा हुआ था। आत्म शुद्धि के अंतिम चरण करते हुए ऋजुवालिका नदी का वह सुखद तट जहां जम्बू वृक्ष श्रेणियों में खड़े थे। अनेक विहंग पक्षी कलह कर रहे थे। आकाश निर्मल था। सूरज अस्तांचल की ओट में थे। वातावरण में एक मौन निस्तब्धता थी। मधुर मंद मस्त हवा चल रही थी। पवन झोंके से वृक्ष की हरी–हरी पत्तियां आपस में कलह कर रही थी। फूलों से मधुर सुगंध आ रही थी। प्राकृतिक सौंदर्य से छटा निराली बनी हुई थी। ऋतु कुल नदी के तट पर शाल वृक्ष के पास गाय और सिंह एक साथ पानी पीते थे। महायोगी वृक्ष के नीचे गौधुम आसन में ध्यान में आत्मलीन हो गये थे। ध्यानस्थ होकर आत्मचिंतन कर रहे थे। ध्यान की ऊंचाई बढ़ गई थी। क्षपक श्रेणी में आरोहण हो गया। भेद विज्ञान की गति बढ़ गयी थी। चट्टान की तरह दुर्भेद मोहनीय कर्म चकनाचूर होने लगे। बारहवें गुण स्थान पर (क्षीण मोहनीय) पहुंच कर चारित्र मोहनीय की प्रकृतियां पराजित होने लगी। आत्मविशुद्धि वीतरागता की ओर अग्रसर होने लगी। आत्मा के ऊपर से कर्मों के आवरण हटने लगे। ज्ञान की ज्योति प्रगट होने लगी। तेरहवें गुणस्थान में संयोगी केवली के परिणामों की शुक्लता और अधिक सघन हुई। बारह वर्ष पांच माह पंद्रह दिन की कठोर तप इच्छा के अनन्तर भगवान महावीर के चार घातीय कर्मों का क्षय हुआ। पूर्ण अरिहंत बने। वैशाख शुक्ल दशमी का वह पावन पवित्र दिन था। सूर्य अस्ताचल की ओर अपने पैर फैला रहा था। अज्ञान अंधकार समाप्त होकर ज्ञान का सूर्य जो कभी अस्त न होगा ऐसा कैवल्य ज्ञान रूपी भानु वर्धमान महावीर की आत्मा में उदित हुआ। ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होने से अनन्त ज्ञान की प्राप्ति हुई। दर्शनावरणीय के क्षय होने से केवल दर्शन की प्राप्ति हुई। वेदनीय कर्म के क्षय होते ही अनन्त क्षायिक सम्यकत्व की प्राप्ति हुई। अब वे अतुल आत्मवैभव से युक्त बन गये। ऋजुवालीका के तट पर घाती कर्मों से मुक्त हुए। अनिर्वचनीय, शब्दातीत आत्मानंद में रमन करने लगे। सौधर्म इन्द्र का आसन चलायमान हुआ। उसके हर्ष की सीमा न रही। उसने कुबेर को बुलाया और विशाल सभा मंडप बनाने का आदेश दिया। क्षणों में मंडत तैयार हुआ। अशोक वृक्ष के नीचे सिंहासन पर भगवान महावीर आरूढ़ हुए थे। समवसरण में

देव ही पहुंचे थे। धर्म की उपजाऊ भूमि में एक भी मानव नहीं पहुंचा था।

देवता वीतराग की दिव्यवाणी का श्रवण तो कर सकते हैं। किन्तु त्याग संयम नहीं ले सकते। अतः अर्हन्त भगवान महावीर की प्रथम वाणी, प्रथम देशना खाली गयी यह आश्चर्य था। कैवल्य ज्ञान होने पर चतुर्विध संघ की स्थापना जब तक नहीं होती वहां वह तीर्थंकर नहीं बन सकते। अतः उसी समय भगवान चल पड़े उन व्यक्तियों की खोज में। प्रातःकाल अपापा नगर के उद्यान में पहुंच गये। उसी नगर में सोमशर्मा ने विशाल यज्ञ का आयोजन रखा हुआ था। उस आयोजन में उस समय के वेदान्त के दिग्गज पण्डित इन्द्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति आदि ग्यारह विद्वान पहुंच गये थे। ग्यारह विद्वानों के चवालीस सौ (4400) शिष्य भी थे। चारो ओर रिचा की उच्च ध्वनि में हवन हो रहा था। बहुमूल्य खाद्य सामग्री की आहुतियां दी जा रही थी। देवी देवताओं को आव्हान किया जा रहा था। उसी समय चारों ओर से जनता के झुण्ड के झुण्ड एवं देवताएं वहां न पहुंच कर जहां भगवान महावीर का समवरण लगा हुआ था उधर तेजी से जा रहे थे। इन्द्रभूति आदि को बड़ा आश्चर्य हुआ। यह कौन है ? देवी-देवताओं के साथ जनता को भी अपनी और खींच रहा है। सभी चुंबक की तरह खींचे जा रहे है। गौतम स्वामीजी बोले-मैं अभी जाता हूं। शास्त्रार्थ कर उसे पराजित करता हूं। आज तक मेरे सामने कोई टिका नहीं। पांच सौ शिष्य इन्द्रभूति के जयजयकार के नारे लगा रहे थे। समवसरण दूर से नजर आ रहा था। अशोक वृक्ष के नीचे शान्त गंभीर तेजस्वी अर्हन्त भगवान महावीर को दूर से देख गौतम स्वामी का घमण्ड दर्प घट रहा था। फिर भी अभिमान उसे आगे बढ़ा रहा था। नजदीक पहुंचते ही गोयम! गोयम! तुम मेरे चिरपरिचित हो। तुम्हारे मन में आत्मा के विषय में संशय है। इन्द्रभूति गौतम आश्चर्यचकित थे। मेरा नाम यह जानते है। मेरे मन के द्वंद्व को भी यह जानते है जिसे मैंने आज तक किसी के सामने प्रगट नहीं होने दिया था। भगवान समाधान करते जा रहे थे।

इन्द्रभूति तुम भ्रम में हो। आत्मा स्वसंवेदना से प्रत्यक्ष है। मैं सुखी हूं, मैं दुखी हूं, यह कहनेवाला देह नहीं वह आत्मा ही है। यदि देह होता तो मृतक देह को भी यह अनुभव होता। दूसरी बात आत्मा है या नहीं ऐसी शंका जो आपकी हुई है यही आत्मा को सिद्धि करा देता है। जो विद्यमान वस्तु होती है, शंका उसी की ही होती है। जग में जिसका अस्तित्व नहीं उसकी शंका भी नहीं होती जैसे आकाश में कुसुम के सामान। इसी तरह भूतकाल में देखी हुई सुनी हुई वस्तु का स्मरण होता है। स्मरण द्वारा भी आत्मसिद्धि हो सकती है, अनुमान द्वारा आत्मसिद्धि होती है। जैसे किसी मकान की बारियां खुली हुई देखकर अनुमान लगा लिया जाता है कि इस मकान में कोई रहता है। उसी प्रकार जब पांचों इन्द्रियाँ अपना-अपना कार्य कर रही है तो अनुमान कर सकते है। पांच इन्द्रिय की अधिष्ठाता कोई न कोई अवश्य है और वह आत्मा। शेष पुण्य-पाप लोक परलोक आत्मा को है। यह सभी देह के संयोग से होता है। किंतु शुभाशुभ कर्म आत्मा को भोगने पड़ते है। आत्मा तो स्वयंशुद्ध एवं पूर्ण है। यह ज्ञान दर्शन चारित्र एवं पुरूषार्थ से युक्त है। यह आत्मा के लक्षण है। सुख-दुःख का भोक्ता तो आत्मा स्वयं है। इस प्रकार प्रभु ने इन्द्रभूति को जीव के विषय में समझाया।

प्रभो! आपके पूर्ण ज्ञान की प्रभा से मेरा अज्ञान नष्ट हो गया। मेरा पूर्ण समाधान हो गया है। कृपया अब मुझे अपने चरणों में स्वीकार कर लो। इन्द्रभूति का अभिमान गल गया था। विनीत होकर के सामने खड़ा हुआ। प्रभु ने इन्द्रभूति को करेमि भन्ते सावद्य जोग का जीवन पर्यंत के प्रत्याख्यान करा कर शिष्य बना लिया उनके पांच सौ शिष्यों ने समर्पण कर दिया। गौतम को गणधर बना दिया। गौतम स्वामी का सारा जीवन आश्चर्य से भरा है। उनका अहंकार भी बोधरूप बना। बोध को प्राप्त कर प्रभु के शिष्य बन गये। प्रभु के प्रति राम, गुरू-भक्ति का निमित्त बना। सम्पूर्ण संघ के गणधर होने पर हजारों केवलियों तथा साधुओं के गुरू होने पर भी गुरू-भक्ति करते रहे। उनका विषाद भी केवलज्ञान की भेंट देनेवाला बन गया। दीक्षा लेने के बाद भी बेले करने लगे। अनेक लब्धियों के निधान होने पर भी उनका उपयोग नहीं किया।

प्रभु के आज्ञाकारी शिष्य गौतम स्वामी का जीवन चिंतन करके हृदय नतमस्तक हो जाता है। हाथ स्वयं अंजली बद्ध हो जाते हैं। गौतम गुरू जैसे गुण हमारे जीवन में आए यही मंगल कामना करनी चाहिये। एक के बाद दूसरे विद्वान सेवा में आते गये और धीरे-धीरे ग्यारह ही विद्वान अपने शिष्यों के साथ पहुंच चुके। सभी की शंकाओं का समाधान होता गया। सभी अपना आत्मसमर्पण करते गए। एक दिन में चवांलीस सौ ग्यारह शिष्य दीक्षित हुए। वह वैशाख सुदी-11 *(दिनांक १२ मई २०२२ गुरुवार)* का शुभ दिन था इसी दिन परमात्मा ने चतुर्विध संघ की स्थापना की थी।

परमात्मा के शासन में गण एवं गणधर

गण अर्थात् समान बाचना एवं समान आचार, क्रिया के पालक मुनियों का समुदाय। गणधर अर्थात् उस उस गण-मुनि समुदाय के नायक गुरू भगवंत। प्रत्येक गणधर भगवंत अनुतर ज्ञान, दर्शन चारित्रादि स्वरूप धर्मगुणों के गुण-समूह को धारण करने वाले होते हैं। तीर्थंकर भगवंत अर्थकथन करते हैं तो गणधर भगवंत अर्थ को सूत्र के रूप में गूंथते हैं। तीर्थंकर परमात्मा से तत्व के रूप में तीन-उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य-स्वरूप पदों को प्राप्त कर प्रत्येक गणधर भगवंत मात्र मुहूर्त भर समय में ही द्वादशांगी श्री आचारांग, सूत्रकृतागादि बारह अंग सूत्रों की तथा दृष्टिवाद के अंतर्गत चौदह-उत्पादपूर्व, अग्रायणीयादि पूर्व शास्त्रों की संरचना कर लेते हैं अतः गणधर भगवंत द्वादशांगी रूप प्रवचन के प्रवाचक माने जाते हैं। ज्यों तीर्थंकर भगवंतों का अर्थकथन पूर्णतः यथार्थ माना जाता है त्यों ही गणधर भगवंतों की द्वादशांगी पूर्णतः यथार्थ मानी जाती है। तीर्थंकर भगवंत द्वारा प्रमाणित मानी जाती है। द्वादशांगी की संरचना के पश्चात ही स्वयं तीर्थंकर भगवंत गणधरों के मस्तिष्क पर इंद्र द्वारा रत्नमय थाल में लाया गया सुवासित चूर्ण मुट्ठी-मुट्ठी भरकर डालते हैं और देवता लोग भी उसके बाद प्रत्येक गणधर पर सुवासित चूर्ण, सुगंधित पुष्पों की बरसात करते हैं। प्रत्येक गणधर भगवंत का देह वज्रऋषभ नाराण संहनन एवं समचतुरस्र संस्थान वाला ही होता है। प्रत्येक गणधर सभी लब्धियों से सम्पन्न होते हैं, गणधरलब्धि से सम्पन्न होते हैं और एक भवावतारी ही होते हैं। प्रत्येक तीर्थंकरों के गणधरों की संख्या भिन्न-भिन्न उपलब्ध है।

ग्यारहवें गणधर भगवंतों का सामान्य परिचय-

चरम तीर्थंकर देवाधिदेव श्रमण भगवान महावीर स्वामीजी के गणधर तो ग्यारह थे मगर गण नौ ही थे। कारण केवल इतना ही कि दो- श्री अंकपित और श्री अचलभ्राता गणधर भगवंतों की तथा दो-श्रीमेतार्थ और श्रीप्रभास गणधर भगवंतों की वाचना एक एक जैसी थी।

ग्यारहवें गणधर- भगवंतों के क्रमशः नाम- १ पंडित श्री इन्द्रभूतिजी, २- पंडित श्री अग्निभूतिजी, ३- पंडित श्री वायुभूतिजी ४- पंडित श्री व्यक्तजी ५- पंडित श्री सुधर्माजी ६- पंडित श्री मण्डितजी ७- पंडित श्री मौर्यपुत्रजी ८- पंडित श्री अकम्पितजी ९- अचलभ्राताजी १०- पंडित श्री मेतार्यजी ११- पंडित श्री प्रभासजी। ये ११ पंडित वेदादि शास्त्रों के पारगामी विद्वान थे एवं यज्ञ-यागादि विधि-विधान करने करवाने में परम निष्णात थे। ये स्वयं को सर्वज्ञ ही मानते थे मगर मन में किसी एक विषय में गहरी शंका थी इन्हें एवं अन्य कई-कई पंडितों को अपने-अपने छात्रगण के साथ यज्ञ करवाने के लिये श्री सोमिल नामक श्रेष्ठीजी ने मध्यमा अपापा नगरी में आमंत्रित किया था।

प्रथम के गौतम गौत्रीय तीन गणधर भगवंत परस्पर भाई थे। इनका जन्म मगधदेश के गोबर नामक गांव में हुआ था। इनकी माता का नाम श्री पृथ्वीदेवी और पिता का नाम श्री वसुभूति था। भारद्वाजगोत्रीय श्री व्यक्त पंडितजी का जन्म कोल्लाक सन्निवेश में हुआ था। इनकी माता का नाम श्री वारूणी देवी एवं पिता का नाम श्री धनुर्मित्र था। अग्निवैश्यायागोत्रीय श्री सुधर्मा स्वामीजी का जन्म भी कोल्लाक सन्निवेश में ही हुआ था। इनकी माता का नाम श्री भद्दिला देवी एवं पिता का नाम श्री चम्मिल्लजी था।

मौर्य नामक गांव में धनदेव और मौर्य नामक दो मौसेरे भाई रहते थे। धनदेव की पत्नी का नाम विजयादेवी। इनके पुत्र का नाम था मंडिक। मगर वशिष्ठगोत्रीय मंडिक के जन्म लेते ही श्री धनदेवजी की मृत्यु हो गई थी अतः उस समय देशाचार, लोकाचार संबंधी नियम के अंतर्गत अविवाहित श्री मौर्यजी ने विजयादेवी के साथ विवाह किया और इनका जो पुत्र जन्मा उसका नाम रखा गया मौर्यपुत्र। मौर्यपुत्रजी काश्यप गोत्रीय थे।

गौतमगोत्रीय श्री अंकपित गणधर भगवंतजी का जन्म विमलापुरी नामक नगरी में हुआ था। इनके पिताजी का नाम श्री देव एवं इनकी माता का नाम श्री जयंतीदेवी था। हारितगोत्रीय श्री अचलभ्राता नामक गणधर भगवंत का जन्म कोशला नगरी में हुआ था। इनकी माता का नाम नंदा देवी एवं पिता का नाम श्री वसुजी था। श्री मेतार्य गणधर भगवंत का जन्म वत्स देश के तुंगिर नामक गांव में हुआ था। इनकी माताजी का नाम करूणादेवी एवं पिताजी का नाम श्री दत्त था। श्री

प्रभास गणधर भगवंत का जन्म राजगृह नामक नगर में हुआ था। इनकी माताजी का नाम श्री अतिभद्रा देवी एवं पिताजी का नाम श्री बलजी था। श्री मेतार्य एवं श्री प्रभास गणधर भगवंत कौंडिन्यगोत्रीय थे।

गौतम गोत्रीय गणधर भगवंत श्री इन्द्रभूतिजी के मस्तक पर वासक्षेप डालते हुए परमात्मा ने द्रव्य, गुण और पर्याय से तीर्थ को संभालने की अनुज्ञा दी और गणधर श्री सुधर्मास्वामीजी को गण को संभालने की अनुज्ञा दी।

इन्द्रभूति-गौतम स्वामीजी की पूर्ण आयु ९२ वर्ष, उन्होंने ५० वर्षों तक गृहस्थ अवस्था, तीस वर्षों तक छद्मस्थ अवस्था, एवं बारह वर्षों तक केवली पर्याय का पालन किया था। श्री अग्निभूति गणधरजी की कुल आयु ७४ वर्ष, उन्होंने ४६ वर्ष गृहस्थ अवस्था, बारह वर्ष छद्मस्थ अवस्था और सोलह वर्ष तक केवलीपर्याय का पालन किया था। श्री वायुभूति गणधरजी कुल आयु ७० वर्ष उन्होंने ४२ वर्ष तक गृहस्थ अवस्था, १० वर्ष छद्मस्थ अवस्था और १८ वर्ष तक केवली पर्याय का पालन किया था। श्री व्यक्त गणधरजी कुल आयु ८० वर्ष, उन्होंने ५० वर्ष गृहस्थ अवस्था, बारह वर्ष छद्मस्थ अवस्था, और १८ वर्ष तक केवलीपर्याय का पालन किया था। श्री सुधर्मा गणधरजी कुल आयु १०० वर्ष उन्होंने ५० वर्ष गृहस्थ अवस्था, ४२ वर्ष छद्मस्थ अवस्था और ८ वर्ष तक केवलीपर्याय का पालन किया था, श्री मण्डिक गणधरजी की कुल आयु ९५ वर्ष, उन्होंने ६५ वर्ष गृहस्थ अवस्था, १४ वर्ष छद्मस्थ अवस्था, और सोलह वर्ष तक केवलीपर्याय का पालन किया था। श्री मौर्यपुत्र गणधरजी कुल आयु ८० वर्ष, उन्होंने ५२ वर्ष गृहस्थ अवस्था, १४ छद्मस्थ अवस्था और सोलह वर्ष तक केवली पर्याय का पालन किया था। श्री अकंपित गणधरजी की कुल आयु ७८ वर्ष, उन्होंने ४८ वर्ष गृहस्थ अवस्था ९ वर्ष छद्मस्थ अवस्था और २१ वर्ष तक केवली पर्याय का पालन किया था। श्री अचलभ्राता गणधरजी की कुल आयु ७२ वर्ष उन्होंने ४६ वर्ष गृहस्थ अवस्था, १४ वर्ष छद्मस्थ अवस्था, और १४ वर्ष तक केवली पर्याय का पालन किया था। श्री मेतार्य गणधरजी कुल आयु ६२ वर्ष उन्होंने ३६ वर्ष गृहस्थ अवस्था, १० वर्ष छद्मस्थ अवस्था और सोलह वर्ष तक केवलीपर्याय का पालन किया था। श्री प्रभास गणधरजी कुल आयु ४० वर्ष उन्होंने १६ वर्ष गृहस्थ अवस्था, ८ वर्ष छद्मस्थ अवस्था और सोलह वर्ष तक केवलीपर्याय का पालन किया था।

पहले पांच गणधर भगवंत अपने ५००-५०० विद्यार्थियों के समुह के साथ छट्ठे और सातवें गणधर अपने ३५०-३५० विद्यार्थियों के समुह के साथ, और शेष चार गणधर भगवंतों ने ३००-३०० विद्यार्थियों का गण था। सभी गणधर भगवंत अपने-अपने विद्यार्थीगण के साथ ही परमात्मा के पास क्रमशः एक के बाद दूसरे, दूसरे के बाद तीसरे, इस क्रम से आये थे। इन्होंने परमात्मा से अपने संशय का पूर्णरूपेण निराकरण पाकर ही अपने विद्यार्थीगण के साथ दीक्षा ली थी। श्री कुबेरदेव ने ही सभी गणधर भगवंतों एवं मुनि भगवंतों को निरवद्यरूप से चारित्र धर्म के पालन के लिये उपयोगी वस्त्र, पात्रादि धर्मोपकरण वहोराए थे और सबने स्वीकारे थे।

गणधर भगवंतों की शंकाएं-

श्री इन्द्रभूति-गौतम गणधर भगवंतजी के मन में शंका थी-जीव है या नहीं...? श्री अग्निभूति गणधर भगवंतजी के मन में- कर्म है या नहीं...? श्री वायुभूति गणधर भगवंतजी के मन में.... जीव और शरीर के आपसी संबंध कैसे, क्यों...? श्री व्यक्त गणधर भगवंतजी के मन में-पृथ्वी आदि पांच भूत हैं...? श्री सुधर्मा गणधर भगवंतजी के मन में- इस भव में जीव की जो पर्याय है वही पर्याय परभव में...? श्री मण्डिक गणधर भगवंतजी के मन में- बंध और मोक्ष है भी या नहीं? श्री मौर्यपुत्र गणधर भगवंतजी के मन में देवता है या नहीं? श्री अकंपति गणधर भगवंतजी के मन में- नारकी जीव है या नहीं? श्री अचलभ्राता गणधर भगवंतजी के मन में-पुण्य, पाप है या नहीं? श्री मेतार्य गणधर भगवंतजी के मन में-परलोक है या नहीं? और श्री प्रभास गणधर भगवंतजी के मन में- मोक्ष है या नहीं?

परमात्मा के जीवनकाल में ही श्री इंद्रभूति-गौतम स्वामीजी और श्री सुधर्मा स्वामीजी के सिवाय शेष नौ गणधर भगवंतों ने अपनी अंतिम अवस्था में एक मास पर्यंत पादपोपगमन अनशन कर निर्वाण को पाया था।

पांच मुक्ति:- ***1- सालोक्य-*** *भगवान के समान लोक की प्राप्ति।* ***2- सार्ष्टि-*** *भगवान के समान ऐश्वर्य की प्राप्ति।* ***3- सामीप्य-*** *भगवान के समीप स्थान की प्राप्ति* ***4- सारुप्य-*** *भगवान के समान स्वरुप की प्राप्ति।* ***5- सायुज्य-*** *भगवान में लय की प्राप्ति।*

- भागवत 3/29/13

लालच बुरी बला है...!

क्वेटिनवर्ग के किले के पास आकर केस्पर फ्रेडरिक जरा ठहरा। देर तक इस खंडहरनुमा किले को निहारने के बाद उस, सुनसान सन्नाटे को चीरते हुए उसने मुख्य द्वार से प्रवेश करने का साहस सँजोए। यह किला जर्मनी में एक पहाड़ी के ऊपर स्थित है। किले के पास पहुंचने के लिए सड़क है, जो उपयोग में न आने के कारण कई जगह से टूट गई थी। सड़क पर सुखे पत्तों की ढेरी पड़ी रहती थी जिसमें चलने से सरसराहट की आवाज आती थी। हवा चलने से भी ये पत्ते उड़ते और बेतरतीब ढंग से इधर-उधर गिरते थे। सड़क के किनारों पर पत्थरों की छोटी दीवारें थी, जो बीच-बीच में टूटी हुई थी। सर्पिली सड़क ऊपर चढ़ते-चढ़ते सीधे किले के पास पहुंचती थी। इसी सड़क से फ्रेडरिक इस किले के पास पहुंचा। थक जाने से वह गेट के पास ही खड़ा होकर निहारने लगा।

फ्रेडरिक के मन में कुतूहल मिश्रित एक अज्ञात भय था क्योंकि वह वहां अकेला था और उस किले के बारे में अपनी परदादी से बहुत कुछ सुन रखा था। क्वेटिनवर्ग किले के पास पहाड़ों में अनेक गांव बसे हुए थे। गांव के लोग समृद्ध एवं खुशहाल थे। उन्हें किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं थी। जर्मनी में एकाएक युद्ध छिड़ गया। युद्ध का यह विनाशक समय दीर्घ तीन वर्ष तक चला। परदादी फ्रेडरिक को बताती थी- ''युद्ध केवल भीषण विनाश का साक्षी होता है। इसमें कभी भी किसी पक्ष का भला नहीं होता है, केवल विनाश होता है।'' कुछ समय तक चले युद्ध में भीषण तबाही का मंजर उपस्थित होता है, फिर यह युद्ध तो तीन वर्षो तक चला। जर्मनी के घरों में नवयुवकों की कमी होने लगी थी, क्योंकि ये युद्ध में जाते और अधिकतम उसी भूमि में मिट जाते, बहुत कम ही अपने घर वापस लौट पाते। जो लौटते थे, उनमें से अधिकतर घायल अवस्था में होते थे। घर में राशन की कमी से चूल्हा नहीं जलता था, बच्चे तड़प कर रह जाते और उनकी तड़प किसी से देखी नहीं जाती, परन्तु विवशता थी। परदादी ने आगे बताया- एक रात सूचना आई कि आस-पास के गांवों में भी युद्ध का संक्रमण फैल सकता है। युद्धकाल में अफवाह तेजी से फैलती है और डराती है। इस दौरान प्रभावित लोगों की मनःस्थिति का अंदाज लगाया नहीं जा सकता है। सभी डर सहते अपना जीवन गुजारते हैं, हमेशा उन्हें मौत का भय सालता रहता है। युद्ध में सैनिक मरते-मारते हैं परन्तु इससे भी भीषण मनःस्थिति से गुजरते हैं उस क्षेत्र में रहनेवाले निवासी। यह तो अंतर है युद्ध और शांति में। शांति हो तो विकास होता है परन्तु युद्ध हो तो विकास के स्थान पर केवल विनाश का मंजर सामने रहता है। प्रभावित लोगों के मन में सदा भय व्याप्त रहता है। वे चिंतातुर होते हैं। निराशा, हताशा, खिन्नता उनकी सहचरी बनकर उन्हें चिढ़ाती रहती है। रात को ठीक से नींद नहीं आती है। उन्हें अपने से अधिक अपनों की चिंता होती है।

इसी दौरान पहाड़ी गांव के मुखिया ने सबको बता दिया कि वे अपने घर की सभी प्रकार की चल-अचल संपदा को क्वेटिनवर्ग के किले में पहुंचा दें, ताकि सेना के उत्पात और लूट से उसकी रक्षा हो सके। सभी ने कुछ ही दिनों में उस किले में अपनी सारी संपदा पहुंचा दी। किला स्वर्ण, रजत आदि संपदा से भर गया। परदादी बता रही थी- संपदा अभी किले के भूमिगत गृहों में शराब खींचने वाली तांबों की डेगों में छिपी पड़ी है। इस संपदा की रखवाली वहां कोई नहीं पहुंच पाता है। फ्रेडरिक! जब इन्सान किसी वस्तु या परिस्थिति से विशेष लगाव रखता है, जिसके साथ उसका अस्तित्व झंकृत होता है और जिसके बगैर वह रह नहीं सकता है तो मरने के बाद भी वह स्थिति और परिस्थितियों से भूत बनकर चिपका रहता है। परदादी फ्रेडरिक को बता रही थी कि वह एक बार भारत भ्रमण करने गई थी और राजस्थान के किसी भुतहे खंडहर को देखते समय उनके गाइड ने इस तरह से स्पष्ट बताया था।

किले के बाहर खड़े फ्रेडरिक के मन में चलचित्र के समान सारा दृश्य घूम रहा था। वह हिम्मत करके, अपने अंतर को मजबूत करके किले के अंदर घुसा। प्रवेश करने पर देखा कि बहुत सारे खंडहर हैं, जिनके ऊपर चमगादड़ उलटे लटके हुए थे। एक अजीब सी सड़नभरी गंध फैली हुई थी अंदर। आगे बढ़ने पर उसे पुराना किला दिखाई दिया। वह जैसे ही अंदर घुसा, किला पृथ्वी के अंदर धँसता हुआ प्रतीत हो रहा था। जगह-जगह बड़ी-बड़ी घास और कटीली झाड़ियां उग आई थी, उनमें से किसी तरह रास्ता बनाया और उस अँधेरे रास्ते से किले के द्वार तक पहुंच गया। भय भी लगता था परन्तु उसकी तीव्र जिज्ञासा एवं उद्वेलित कुतूहल ने उसे आगे बढ़ने के लिये प्रेरित किया। अब वह भूमिगत मकान के अंदर तक जा चुका था। वहीं उसने जमीन पर एक गोल छिद्र देखा, जहां रोशनी की एक पतली रेखा चमक रही थी।

फ्रेडरिक का मन अज्ञात भय से काँप उठा। किसी अजनबी घटना से एक अकेला व्यक्ति कर क्या सकता है! वह उस छिद्र के पास एक ओर किनारे पर खड़ा हो गया। जैसे ही वह किनारे के पास पहुंचा, वह अंधकार से भरा मकान

एकाएक तीव्र रोशनी से नहा उठा। आज तक उसने इतना तीव्र प्रकाश देखा नहीं था। उसे उस प्रकाशपुंज के बीच में खड़ी ओढ़नी लपेटे एक विशालकाय भूत दृष्टिगोचर हुआ। उसी प्रकाश में उसने देखा कि पास में सोने के समान चमकते टुकड़ों से भरी प्रसिद्ध शराब खींचने वाली कई सारी डेगें थी। इतना सारा सोना कि वह कल्पना भी नहीं कर सकता था देखना तो दूर। आज उसके सामने सोने का भंडार भरा पड़ा हुआ था। किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया वह, सोच नहीं सका कि वह वहां बना रहे या फिर घर वापस लौट जाए। इतने में भूत ने जर्मन भाषा में उससे बोला- इन डेगों से तुम नित्य एक टुकड़ा सोना उठा सकते हो, परन्तु ध्यान रहे, लोभ मत करना। एक समय में एक टुकड़ा उठाना, एक से अधिक नहीं। इतना कहकर भूत अदृश्य हो गया और फ्रेडरिक ने डरते, सहमते तथा खुश होकर सोने के एक टुकड़े को उठा लिया तथा वह शीघ्रता से वापस लौटने लगा। रास्ते में उसने भूत के उस उपहार को हजार बार टकटकी लगाकर देखा कि वह स्वप्न तो नहीं, परन्तु यह सच था, क्योंकि सोने का टुकड़ा उसके हाथ में था और उसे लेकर वह कब घर पहुंच गया, पता ही नहीं चला।

जब व्यक्ति अधिक खुश होता है तो उसे खुशी के कारण के अलावा और कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। वह अति प्रसन्न था। प्रसन्नता रह रहकर उसके अंदर छलक रही थी। भूत की वह बात कि- ''वह प्रतिदिन सोने का एक टुकड़ा ले सकता है'' से उसकी आँखों में चमक आ गई थी। दरिद्रता से कुम्हलायी आँखों में समृद्धता की स्वप्निल तरंगे हिलोरें लेने लगी थी। उस रात वह सो नहीं सका, रातभर वह अपनी समृद्धि का दृश्य देखता रहा। दूसरे दिन प्रातः किसी को बिना बताए पहाड़ी पर फिर से चढ़ने लगा और शीघ्रता से किले के उस स्थान पर पहुंच गया। फिर से उसे डर सताना लगा कि कहीं वह भयंकर भूत दिखाई न पड़ जाए, परन्तु वहां कोई भूत नहीं था। केवल सोने का भंडार भरा पड़ा था। उसने दूसरे दिन दूसरा टुकड़ा उठाया और अपने घर खुशी-खुशी पहुंच गया। इसी तरह प्रतिदिन सोने के टुकड़ों का उपहार लेते हुए उसका एक वर्ष व्यतीत हो गया। इस दौरान उसकी गरीबी अमीरी में बदल गई थी। जर्जर घर के स्थान पर आलीशान कोठी खड़ी हो गई थी। जमीन-जायदाद में भारी वृद्धि हो गई थी। समाज में उसकी प्रतिष्ठा भी बढ़ने लगी थी। धीरे-धीरे उसने उस धन को अपनी विलासता में खर्च करना प्रारंभ कर दिया। मान्यता है कि धन के साथ यदि विवेक का अभाव है तो धन अनर्थकारी सिद्ध हो सकता है। धन अगर हो तो उसका सदुपयोग हो, औचित्यपूर्ण ढंग से उसका नियोजन हो और खासकर उस धन का, जो बिना परिश्रम प्राप्त हो, उसका तो कभी भी अपने निजी जीवन के सुख-भोग में उपयोग नहीं करना चाहिये क्योंकि मुफ्त का धन अपने साथ बहुत सारे भोगों को लेकर आता है परन्तु धन भी एक नशा है। कहते हैं जब धन का नशा लगता है तो कितना भी धन हो, उससे तृप्ति नहीं मिलती है और प्राप्ति की इच्छा बनी रहती है। धन कभी भी तृप्ति नहीं दे सकता है, उससे सदा अतृप्ति ही हाथ लगती है। फ्रेडरिक भी इस अतृप्ति का शिकार हुआ और उस धन की विलासिता से उसका श्रम भी छूट गया।

फ्रेडरिक दिनभर विलासिता के नए-नए राग-रंग में डूबा रहता। उसका एक ही काम था कि प्रतिदिन उस किले से एक स्वर्ण का टुकड़ा लाना। अब तो वह वहां आने-जाने में भी थकने लगा, इसलिये उसके विलासी मन ने उससे कहा- ''अब तो तू सोने के कई टुकड़े एक साथ घर ले चल।'' उसमी समृद्धि की ख्याति कई गांवों तक पहुंच गई थी। वह उस राज्य का राजा बनने का स्वप्न देखने लगा था, परन्तु इसके लिये तो उसे पूरे खजाने को ही हासिल करना पड़ेगा, उसने मन ही मन सोचा। दूसरे दिन खजाने के पास पहुंचकर फ्रेडरिक ने अपने आप से कहा- ''हे ईश्वर ! सोने के इन टुकड़ों के लिए वह प्रतिदिन का परिश्रम कितना कष्ठदायक है। पीड़ादायक है। जब इस खजाने को तूने मेरे ही लिए रखा है तो मैं इसे एक ही बार में ले लूं या फिर टुकड़ों में, फरक क्या पड़ता है। अतः पूरे खजाने को मुझे एक ही बार में उठा ले जाने दे।'' बस, फिर क्या था, उसने अपने साथ लाए हुए कई थैलों में से जैसे ही एक का मुंह खोला, उसे आश्चर्य हुआ कि इतना सोना लेने के बावजूद स्वर्णपात्र में सोना कभी घटा नहीं था उतना का उतना ही बना रहा। उसकी आँखें आज से फिर चमक उठी, उसकी आँखों के आगे आज राजा बनने का स्वप्न साकार जो होने वाला था। उसने जैसे ही स्वर्णपात्र के सोने में अपने दोनों हाथ डाले और थैले में भरने के लिये तैयार हुआ कि एकाएक सारे का सारा पात्र उसके हाथ से भयानक ध्वनि के साथ धड़ाम से गिर गया तथा नीचे और नीचे रसातल में समा गया। उसके इर्द-गिर्द लुआठी और गंधक जलने लगे। उसे चित्र-विचित्र दृश्य दिखने लगे और वह घोर हताशा-निराशा में वहीं मूर्च्छित होकर गिर पड़ा।

फ्रेडरिक को जब होश आया तो उसने उस खंडहर के अंदर अपने स्वप्न के बिखरे खंडहर में स्वयं को कराहते पाया। अपने लोभ का परिणाम दिखाई दे रहा था। यह सत्य घटना बताती है- लालच बुरी बला है। धीरे-धीरे उसका वह वैभव भी नष्ट हो गया, जो उसने बटोरा था। सच है, बिना श्रम की कमाई लक्ष्मी नहीं बन सकती।

✼ कर्मों की होली नहीं होगी तो स्वभाव की दीवाली कैसे मनेगी ?

भारत के प्राचीन हस्तप्रत भंडार

✻ वैराग्यरतिविजय

आज वर्तमान भारत का स्वरुप देखकर उसकी भूतकालीन भव्यता का अनुभव करना काफी कठिन है। लगभग एक हजार वर्ष पहले विदेशी-मुस्लिम आक्रमणकारियों ने उस काल की भव्य प्रतिमा को काफी बर्बर तरीके से तहस-नहस किया है। इस विध्वंस से पूर्व भारत की समृद्धि का निखार कुछ और ही था। जालिमों ने अपार ज्ञानसंपदा को लूटा और जलाकर राख भी किया। अपनी मतांध विचारधारा के कारण उन आक्रमकों ने इस देश की ज्ञानसंपदा के साथ यहां की सांस्कृतिक विरासत को भी खंडहर में तब्दिल कर दिया। इस तूफानी बवंडर के बावजूद थोड़े बहुत जो अवशेष बचे हैं उन्हें देखकर प्रमाणित होता है कि भारत उस समय अपनी बौद्धिक ऊंचाईयों को छू रहा था।

विदेशी आक्रांताओं के आने से पूर्व यह देश केवल आर्थिक दृष्टिसे ही नहीं, बल्कि राजनैतिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, वैचारिक और नैतिक मापदंडों में भी विश्व में सबसे ऊंचे दर्जे पर था। सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक समृद्धि की धूम थी। असंख्य मंदिरों के साथ-साथ बड़े ग्रंथालय भी थे। अनेक बड़े-बड़े विद्यापीठ थे। अध्यात्म, दर्शन, साहित्य, वैद्यकीय और विज्ञान का समूचा ज्ञान उस समय हस्तलिखित पत्रों की पोथियों में समाया हुआ था। गांव, नगर, जनपद में अनेक पाठशालाएं थी। शिक्षण उस काल की परंपरा का मूलभूत अंग था। शैक्षणिक व्यवस्था में मुखपाठ अभ्यास की मुख्य परंपरा थी। भाषा और गणित के प्राथमिक ज्ञान को सिखने के लिये केवल मुखपाठ की कला का ही उपयोग होता था। प्राथमिक शिक्षा के लिये पुस्तकों का आधार नहीं लिया जाता था। केवल उच्चस्तरीय विद्याभ्यास (Post-Graduation) के लिए पुस्तकों की जरुरत होती थी। चिकित्सा, अर्थशास्त्र, राज्यशास्त्र, अभियांत्रिकी (Engineering) विज्ञान (Science) कला (Art) व्यवहार कला (स्त्री की 64 एवं पुरुष की 72 कलाएं) गणित, भूगोल (Geography) खगोल (Astronomy) ज्योतिष(Astrology) सामुद्रिक पशुपालन, युद्धकला, शास्त्रास्त्रविद्या, दर्शन (Philosophy) अध्यात्म (Spirituality) जैसी विद्याशाखाओं के लिये समृद्ध विद्यापीठों की अनेक राज्यों में स्थापन थी।

उपरोक्त तमाम विद्याशाखाओं के अभ्यास के लिये अनेक शास्त्रों के निर्माण किये जाते थे। शास्त्र लेखन में विशेष पद्धति का अवलंब लिया जाता था। मुख्यतः अभ्यास चार स्तर पर होते थे-अध्ययन, चर्चा, निष्कर्ष और परिष्कार (Study, Debate, Conclusion, Evaluation) विद्यार्थी शिक्षक के पास एक विषय का अभ्यास करता था। हर विषय का शास्त्र श्लोक में बद्ध होने से उसको याद रखना आसान था। विषय को समझ लेने के बाद उस विषय की चर्चा करना विद्यार्थिओं के लिये बाध्य था। उसे वाद कहा जाता था। वाद में एक तरह परीक्षा होती थी। उसमें विद्यार्थी की बुद्धि कसी जाती थी। विद्यार्थी उस विषय का तात्पर्य समझकर अपनी प्रतिभा के अनुरुप निष्कर्ष प्रस्तुत करता था। उसके बाद परीक्षा होती थी जिस से विद्यार्थी अपने ज्ञान को स्पष्ट करता था। उस काल के विद्यार्थी सीखी गई विद्या को अपने जीवन का आधारभूत अंग मानकर उसे आचरण में प्रस्तुत करते थे। अपने ज्ञान से दूसरों को विद्याभ्यास करवाते थे। इस कारण उस व्यवस्था के अनुकूल निपुण अध्यापक सहज उपलब्ध हो जाते थे। ग्यारहवीं शताब्दी में श्रीहर्ष ने नैषधीय-चरित में नलराजा का वर्णन करते हुए लिखा है कि- नलराजा ने 14 विद्याओं का अभ्यास चार चरण में किया था। 1- अभ्यास और चर्चायुक्त अध्ययन 2- बोध अर्थात् निष्कर्ष (Conclusion) 3- आचरण और 4- प्रचार (अधीनीतिबोधाचरणप्रचारणैः 1-5)

उच्चस्तरीय (Post-Graduation) शिक्षण हेतु शास्त्र निर्माण, शास्त्रापाठन और शास्त्रालेखन की सुव्यवस्थित व्यवस्था थी। लेखन कला का एक अलग विभाग होता था। कुशल प्रतिलेखकों (लहिया) को हस्तप्रत लेखन के जरिए रोजगार मिलता था। लिखी गई हस्तप्रतों की पोथियों के भंडारण की समुचित व्यवस्था होती थी। असंख्य सरस्वती भंडारों में व्यवस्थापकों को हस्तप्रतों के संरक्षण की जिम्मेदारी सौंपी जाती थी। उस काल में विद्यापीठों एवं हस्तप्रतों को राजकीय सामाजिक संरक्षण और आदर प्राप्त होता था। मगर आज वर्तमान भारत के तमाम विद्यापीठों के भंडारों एवं अन्य सार्वजनिक भंडारों की अवदशा के कारण बड़ी तादाद में ज्ञान की बची-खूची धरोहर भी नष्टप्रायः होती जा रही है। अनेक ऐतिहासिक स्रोतों द्वारा कुछ प्राचीनतम भंडारों के बारे

में जानकारियां प्राप्त होती है। उन्हीं का आधार लेकर प्रस्तुत लेख लिखने का मनोदय हुआ है।

लगभग दो वर्ष पूर्व अहमदाबाद के हिरेनभाई दोशी द्वारा मुझे भेजी किसी पुस्तक के परिशिष्ट में कुछ चर्चित ज्ञानभंडारों की सूचि मिली। इस सूचि में ईसापूर्व 300 से लेकर ई.स. 1947 तक के कुछ विशेष पुस्तकालयों का संक्षिप्त विवरण मिलता है। प्रस्तुत लेख उसी सूची के आधार पर तैयार हुआ है।

1- तक्षशिला- ईसा पूर्व 324 (विक्रम पूर्व 380) वर्ष अर्थात् आज से लगभग 2300 वर्षों पूर्व तक्षशिला का ज्ञानभंडार भारत का एक समृद्ध ज्ञानभंडार था। जैन इतिहास की दृष्टि से तक्षशिला प्रथम तीर्थंकर श्री श्रीऋषभदेवजी के पुत्र बाहुबलिजी की राजधानी थी। सिकंदर वहां के नगर का वैभव देखकर चकित रह गया था। तक्षशिला को विश्व के सबसे प्राचीनतम विद्यापीठ होने का गौरव प्राप्त है। पाणिनि जैसे वैयाकरण, जीवक जैसे वैद्य और चाणक्य जैसे अर्थशास्त्री ने इसी विद्यापीठ से शिक्षा प्राप्त की थी। आज उसका अस्तित्व लगभग ध्वस्त है। उस स्थान की खुदाई से प्राप्त छात्रावास, क्रीड़ांगण, स्नानागार और अनेक शैक्षणिक अवशेषों से पता चलता है कि वहां कभी कोई परिपूर्ण शैक्षणिक परिसर रहा होगा। इसी जगह स्थित गंगू नामक स्तूप से तत्कालीन अंग्रेज जनरल कनिंघम को स्वर्णपत्र पर खरोष्ठिलिपी में लिखा एक लेख प्राप्त हुआ था। तक्षशिला विद्यापीठ में एक आचार्य की प्रमुखता में 500 विद्यार्थी भिन्न-भिन्न कलाक्षेत्रों का अभ्यास करते थे। विश्वस्तरीय अध्यापक अध्यापन सेवा प्रदान करते थे। ईसा की पहली (विक्रम की दूसरी) शताब्दी तक तक्षशिला जैसे भारत की चारों दिशाओं में चार एवं मध्यभारत में एक ऐसे पांच विश्वविख्यात विद्यापीठ थे। उत्तर भारत में तक्षशिला पश्चिम में वलभी, पूर्व में नालंदा, दक्षिण में कांचीपुर और मध्यभारत में धान्यकूट की गणना सर्वपरिपूर्ण और व्यापक शैक्षणिक व्यवस्था वाले विश्वविद्यालयों में होती थी। ऐतिहासिक संदर्भों में अनुमान लगाया जा सकता है कि, इन विद्यापीठों में काफी बड़ेहस्तप्रत भंडार रहे होंगे।

2- पाटलिपुत्र(पटना)- वर्तमान में बिहार में स्थित इस नगर को श्रेणिक महाराजा के पुत्र कुणिक (अजातशत्रु) ने बसाया था। पाटलिपुत्र उस काल में भारत का सबसे समर्थ और सक्षम राजसत्ता का केन्द्र था। यहीं पर ईसा पूर्व 246 में बौद्धधर्म की पहली संगति का आयोजन हुआ था जिसमें बौद्ध उपदेशों को व्यवस्थित स्वरुप प्राप्त हुआ था। आर्य श्री स्थुलभद्रसूरिजी की अध्यक्षता में लगभग उसी काल में आगम याचना भी हुई थी। यह वह काल था, जब श्रमण परंपरा में मुख्यतः आगम मुखपाठ याद रखे जाते थे। कालांतर में 12 वर्षों तक आए भीषण अकाल के समय श्रमण व्यवस्थाएं यत्र-तत्र बिखरने के कारण मुखपाठ की परंपरा को भारी क्षति पहुंचने लगी। आगमों को कंठस्थ याद रख पाना असंभव होने लगा। इन सब बातों को पुनः व्यवस्थित स्वरुप प्रदान करने के कार्य सम्पन्न हुए। श्रुतरक्षा के इतिहास का वह अविस्मरणीय प्रसंग था। उदायी राजा के बाद नवनंदों के समय और मौर्यकाल में पाटलिपुत्र ब्राह्मण और श्रमण परंपरा का विशिष्ट विद्याकेन्द्र था। निःसंदेह उस कारण यहां विशाल ग्रंथभंडार भी रहे होंगे।

3-कश्मीर- ईसा पूर्व 140 (विक्रम पूर्व 200) वर्ष कश्मीर विद्यावंतों का विशिष्ट और सक्रिय केन्द्र था। व्याकरण भाष्यकार, योगसूत्र के रचयिता और वैद्यकशास्त्र के उद्राता पतंजलि ऋषि कश्मीर के ही थे। विक्रम की तेरहवीं शताब्दी में आचार्य हेमचंद्राचार्यजी ने सिद्धराज की विनंति से जब नूतन व्याकरण बनना प्रारंभ किया था तब भिन्न-भिन्न आठ व्याकरण ग्रंथ उन्होंने कश्मीर से बुलवाये थे।

4- उज्जैन- मध्यभारत की यह प्राचीन नगरी है। महाराजा संप्रति ने इसे अपने सत्ता का केंद्र बनाया था। उसके बाद तो यह नगरी भारतीय संस्कृति के प्रवाह का मुख्य केन्द्र बन गई। विक्रम की पहली शताब्दी में आचार्य श्री सिद्धसेन दिवाकरजी ने यहां महाकाल प्रसाद प्रगट किया था। उन्होंने राजा विक्रमादित्य को प्रतिबोधित किया था। पुराण कथानुसार कृष्ण के विद्या गुरु सांदीपनिजी का एकपाद आश्रम इसी नगरी के समीप है। यहां भर्तृहरी की गुफा है। महाभारत के काल में यहां विशाल ग्रंथ भंडार था। इस नगरी को विक्रम, सम्राट संप्रति और भर्तृहरि जैसे विद्याप्रेमी राजाओं का स्नेह प्राप्त हुआ है। विशेषतः यह नगरी श्रमण परंपरा के आवागमन का मुख्य केन्द्र थी। इस कारण यहां समृद्ध ज्ञान भंडार थे।

5- धान्यकूट- ईसा 160 अर्थात् विक्रम सं. 256 में उड़ीसा में आचार्य नागार्जुन ने बौद्धविहार बनवाए थे और धान्यकूट विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। नागार्जुन ने अनेक शास्त्रों की रचना भी की थी। इस आधार पर निश्चत

रुप से धान्यकूट ग्रंथ संपदा का केन्द्र रहा होगा। विक्रम की तीसरी शताब्दी (ईसा 222, विक्रम सं. 278) में धर्मपाल नामक बौद्ध भिक्षु मध्यभारत से चीन गए थे। वहां उन्होंने पातिमोक्ख नामक शास्त्र का चीनी भाषा में अनुवाद किया था। विक्रम की तीसरी-चौथी शताब्दी में चीनी भाषा में अनेक बौद्धशास्त्रों का अनुवाद हुआ है।

6- थानेश्वर- ई. सन् 500 के दरम्यान थानेश्वर विश्वविद्यालय का समयकाल है। मगर इस विद्यापीठ की विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं हो पायी है। चीनी यात्री हेव्न-त्संग ने इसका उल्लेख किया था। ऐसा कहा जाता है कि श्री हर्ष के गुरु गुणप्रभ इसी विद्यापीठ के थे।

7- नालंदा- नालंदा भारत का प्राचीनतम विश्व विद्यालय रहा है। इसका समय काल ईसा 630 वर्ष पूर्व का माना जाता है। हेव्न-त्संग जब भारत आया तब नालंदा की कीर्ति शिखर पर थी। यहां लगातार दस हजार भिक्षु रहते थे। यहां रत्नोदधि रत्नसागर और रत्नरंजक नाम के तीन बड़े ग्रंथ भंडार थे। वे नौ मंजिले थे। उसमें तीन लाख से अधिक पांडुलिपियां थी। हेव्न-त्संग रत्नोदधि नामक भंडार में पांडुलिपियां चीन ले गया था। बारहवीं शताब्दी में खिलजी वंश के आक्रमक शासक बख्तियार ने उन ग्रंथभंडारों में आग लगवा दी जिसकी लपटें सात दिनों तक ठंडी नहीं पड़ी

प्रेम के देवता

कुछ भी हो ईसा, बुद्ध, महावीर, लाओत्से या असीसी के फ्रांसिस के पास न तो हथियार थे न ही लाखों और राष्ट्रों तथा संस्कृतियों की ऐतिहासिक नियति निर्धारित करने के लिये शारीरिक शक्ति ही थी। न ही उन्होंने अपना प्रभाव जमाने के लिये घृणा, ईर्ष्या, लालच और अन्य स्वार्थो का सहारा लिया, उनकी शारीरिक बनावट भी पहलवानों की तरह की नहीं थी। इतने पर भी उन्होंने अपने मुट्ठी भर अनुयायियों के साथ असंख्य लोगों के दिलों दिमाग को बदल दिया और एक नई दिशा दी। संस्कृतियों और सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन किया और निर्णायक ऐतिहासिक परिवर्तन किये। कोई भी महानतम विजेता और क्रांतिवीर नेता इन प्रेम के देवताओं के कार्यों में परिवर्तनों की बराबरी नहीं कर सकता है।

8- वलभी- विक्रम की सातवीं सदी में वलभी गुजरात के सौराष्ट्र की राजधानी थी। यहां 84 जिनमंदिर थे। इसी स्थान पर श्री देवर्धिगणि ने विक्रम की पांचवीं सदी में आगम वाचना की थी और समस्त जैन सिद्धांत को पुस्तकारुढ़ करवाया था। सातवीं सदी में वल्लभी बौद्ध शिक्षा का केन्द्र बन गया। मैत्रक वंश के राजाओं ने ज्ञानभंडारों के लिये यहां विपुल दान दिया था। वलभी में ही जैन धर्म के संपूर्ण ज्ञान भंडार का निर्माण हुआ होगा, मगर वर्तमान में उसके कोई भी अवशेष नहीं मिलते है।

9- विक्रमशिला (बिहार)- विक्रम की आठवीं शताब्दी में बौद्ध भिक्षु धर्मपाल ने इस विहार की स्थापना की थी। इस विहार के छह दरवाजे थे। प्रत्येक दरवाजे पर एक पंडित की नियुक्ति होती थी। जिन्हें यहां विद्याभ्यास करने के लिये प्रवेश करना होता, उसे इन द्वारों पर उपस्थित पंडित को चर्चा में परास्त करना होता था। यहां भी एक विशाल ग्रंथभंडार था, जिसे बख्तियार खिलजी ने नष्ट कर दिया था।

(आगे और भी है...!)

संसार स्वार्थी है ?

संसारीओं की ममता कहां तक ? स्वार्थ हो वहां तक।
फूलों में से रस चूसने के बाद भँवरे उड़ जाते हैं।
सरोवर का पाणी सूखने के बाद हंस उड़ जाते हैं।
वृक्षों में फल-फूल पत्ते गये तो पंक्षी उड़ जाते हैं।
स्वामी के पास से सत्ता गई तो सेवक भाग जाते है।
ऐसा स्वार्थी है यह संसार !

''संसार स्वार्थी है'' - ऐसा जब हम सुनते है तब ज्यादातर हम दूसरों के लिए ही ऐसा विचार करते है कि उसने मुझे धोखा दिया, उसने मेरे साथ छलना की ! सचमुच दुनिया स्वार्थी है, लेकिन हम कभी ऐसा विचार नहीं करते हैं कि अगर दुनिया स्वार्थी है तो मैं भी स्वार्थी नहीं क्या ? मैं भी दुनिया से जुड़ा हुआ ही हूं ना ? दुनिया अगर वस्त्र है तो मैं उसका तंतु हूं। दुनिया अगर फूल है तो मैं उसकी पंखुड़ी हूं। दुनिया अगर इमारत है तो मैं उसी का एक ईट हूं ? दुनिया अगर सूर्य है तो मैं उसी की किरण हूं। दुनिया अगर समुद्र है तो मैं उसी का एक बिंदु हूं। मैं इससे अलग कैसे हो सकताहूं ? ''संसार स्वार्थी है'' ऐसा कहकर आक्रोश करनेवाले हम सभी आत्म-निरीक्षण करते नहीं कि हे जीव ! क्या तूने कभी किसी के साथ छलना नहीं की ? स्वार्थ पूरा होने के बाद, किसी को छोड़ा नहीं ?

जिनशासन.... जयवन्ता

भगवान श्रीमहावीर ने अपने पिछले जन्मों (भवों) में कुल 11 लाख 85 हजार 645 मास क्षमण (मासखमण) उत्कृष्ट भाव से किये, प्रभु ने अपने अंतिम भव में भी साढ़े बारह वर्ष की कठोर तपस्या की, इस अंतराल में सिर्फ 349 दिवस ही आहार ग्रहण किया था। सर्व कर्मो से मुक्त होकर वैशाख शुक्ला-10 को केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई।

लाखों, करोड़ें वर्ष से चले आ रहे वीतराग-श्रमण धर्म की पुनः स्थापना की। आज से करीब 2548 वर्ष पूर्व वैशाख शुक्ला 11 के दिन प्रभु ने जिनशासन में चतुर्विध संघ : साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका की स्थापना करके हमारे कल्याण मार्ग को बहुत सरल बना दिया।

प्रभुजी ने अनंत लब्धिनिधाय श्री गौतमस्वामीजी को श्रमण प्रमुख और चंदनबालाजी को साध्वीजी प्रमुख बनायें एवं उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने बारह व्रत स्वीकार किये। भगवान श्रीमहावीर के समुदाय में 14 हजार मुनि, 36 हजार साध्वीजी और 1 लाख 59 हजार बारह व्रतधारी श्रावक, 3 लाख 18 हजार बारह व्रतधारी श्राविकाएं थी। केवलज्ञान प्राप्त करने के उपरांत तीस वर्षो तक सकल प्राणी मात्र के कल्याणार्थः कर्म से मुक्ति, आत्म ज्ञान जैसे समग्र विषयों पर धर्म-देशना प्रदान की।

प्रभु जब मोक्ष पधारे, तब पंचमकाल शुरु होने में सिर्फ तीन वर्ष साढ़ेआठ मास का समय शेष था, अतः इस कलियुग की जरुरतों को संज्ञान में लेकर- जीयो और जीने दो, अहिंसा परमो धर्म, क्षमा वीरस्य भूषणम् आदि का पवित्र संदेश फैलाया, जो कालान्तर तक विश्व में अनुकरणीय, आत्म कल्याण, आदर्श के लिए शाश्वत गुंजता रहेगा।

प्रभु ने 72 वर्ष की आयु में पावापुरी के प्रांगण में कार्तिक कृष्ण अमावस्या को निर्वाण प्राप्त किया था। वर्तमान में प्रभु श्रीमहावीर का शासन- यह पंचमकाल अर्थात् पाँचवां आरा 21 हजार वर्षो का है जिसमें करीब 2548 वर्ष पूर्ण हुए हैं। प्रभु की देशना, जो उनके निर्वाण के 980 वर्ष बाद गुरुदेव देवर्ध्दिक्षमा श्रमण द्वारा वर्तमान भावनगर वल्लभीपुर में लिप्पीबद्ध हुई।

वर्तमान में हमारे मार्ग दर्शक साधु-साध्वीजी भगवंतों द्वारा उसी श्रीमहावीर देशना का समय-समय अनुसार रुपांतर लिपि और प्रवचन के द्वारा सकल चतुर्विद्ध संघ को कल्याण हेतु दी जा रही है। वन्दे शासनम्! जैनम् शासनम्

जय जिनशासन.... जय जय हो....

तटस्थता हमारा मन परिवर्तनशील है, नदी के प्रवाह की तरह सतत गतिशील है। इसलिये ही एक ही चीज एक वक्त आनंदकारी लगती है, वही चीज दूसरी वक्त उद्वेगकारी लगती है। पुत्र पैसा कमा कर देता है तो प्रिय लगता है किन्तु वही पुत्र पैसा गंवा कर या कर्जा करके आता है तो कैसा अप्रिय लगता है ? मात्र पुत्र की बात नहीं, धन-पत्नी-बंगला-कार-टीवी आदि सब में ऐसा समझ लीजिए। व्यक्ति या वस्तु दोषित नहीं है, असल में दोषित तो हमारा मन ही है। मन को दूषित करनेवाले राग-द्वेष है। पदार्थ तो जैसे है, वैसे ही है, हमारी दृष्टि उन्हें भिन्न-भिन्न स्वरुप से देखाती है।

पदार्थो को नहीं, मन को बदलने की बात है। इसमें ही जीवन की सच्ची कला है। मन में चलते विचारों की और हम सिर्फ देखते रहें, पसंदगी या नापसंदगी किये बिना सिर्फ दृष्टा बनकर देखाते रहें तो मन धीरे-धीरे राग-द्वेष से उपर उठने लगेगा। आप बाजार में जाते हैं तो आपकी आंख के सामने अनेक वस्तुएं आती है, अनेक शब्द आपके कान में पड़ते हैं। आप कुछ खुशी-नाखुशी करते हैं ? नहीं, आपको जिन पदार्थो के साथ कुछ लेना-देना नहीं है, उन पर आप कुछ भी सोचते नहीं है, सिर्फ देखते हैं। हमारा मन भी बाजार है। उसमें भी अनेक विचार रुप वस्तुओं का ढेर पड़ा हुआ है। उन सर्व विचारों के प्रति खुशी-नाखुशी के अभाव की कला विकसित करनी चाहिये। नदी में बहते पानी को तटस्थ बनकर आप देखते हैं। कबूतरखाने में आते-जाते कबूतरों को तटस्थ बन कर आप देखते हैं, उसी तरह विचारों को भी तटस्थ बनकर देखते सीखो। यही तो तटस्थता का मतलब है। तट मतलब किनारा! तट पर जो खड़ा हो वह तटस्थ! नदी में पानी बहता है, लेकिन किनारे पर खड़ा व्यक्ति बहता नहीं है, वह वहां पर ही स्थिर है। इसलिये तो हम किसी भी पक्ष की ओर न झुकनेवाले को ''तटस्थ'' कहते हैं। विचार भी एक नदी का प्रवाह है, उस प्रवाह के साथ हमें बहना नहीं है, किनारे पर खड़ा-खड़ा देखना है, अपने भीतर साक्षीभाव पैदा करना है, ज्ञाता-दृष्टा भाव पैदा करना है। लगती है यह बहु सामान्य बात, लेकिन बहुत कठिन है और आत्मसात हो गई तो बिलकुल आसान है। किन्तु मूल बात है इस तरफ रस जमाने की! आसक्ति हटाने की इच्छा न हो तो इस तरफ (विचारों के प्रवेश की तरफ) नजर डालने का मन भी नहीं होता है।

अनुत्तर कला : दर्शन

✻ इन्द्रचन्द्र दुधेड़िया

भगवान श्रीऋषभदेव के युग में भोगभूमि का कर्मभूमि में रुपांतरण हुआ। मानव समुदाय की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति में काल प्रभाव में कठिनाईयां आने लगी। इस विपदा से बचने के लिये भगवान ने कसी (कृषक विज्ञान), मसी (लेखन-पठन-विद्या) असी (स्व-संरक्षण कला), वाणिज्य (अदान-प्रदान-व्यवहार), कला (पूरक कुशलता जैसे घट आदि बनाने के लिये कुम्हार का भांड-तंत्र) और विद्या (धर्म, दर्शन) का ज्ञान सिखाया। इसके लिये उन्होंने पुरुषों के लिये 72 कलाओं और स्त्रियों के लिये 64 कलाओं का विकास किया। इन कलाओं का तीन धाराओं में वर्गीकरण किया जा सकता है- 1 जीवन, 2 रंजन और 3 आत्म-दर्शन। एक कवि ने कहा हैः-

''कला बहोत्तर जगत में जा मे तीन सिरदार।
एक जीविका, दूजी ललित, तीजी जीव उद्धार॥''

अर्थात् जगत की 72 कलाओं को तीन प्रकारों में विभक्त है- जीविका, ललित और जीव उद्धार। तात्पर्य यह कि जीवनयापन करने हेतु, प्राथमिक आवश्यकताओं- अशन, वसन, भवन- की पूर्तता के लिये मनुष्य सबसे पहले प्रयास करता है। इनके लिये परिश्रम करते हुए वह थकान का अनुभव करता है। यदि उसके पास समय शेष हो, तो वह श्रम परिहार के साधन ढूंढता है। इस शोध से विभिन्न ललित कलाओं का विकास होता है। इस प्रकार जीवन व्यतीत करते हुए उसे सुख, आनंद, शांति, संतोष की लालसा होती है। तब वह आत्म-दर्शन की दिशा में अग्रसर होता है। यह आत्म-दर्शन की कला ही मुक्ति दिलाने में समर्थ होती है।

पाश्चिमात्य दार्शनिक राल्फ वाल्डो इमर्सन ने कहा था- ''कला विचारों की मूर्तिमान करती है।'' चित्त में विचार आने पर उसे अभिव्यक्त करना सहज है भी और नहीं भी। किसी कल्पना को चित्र रुप में फलक पर उतरना चित्रकार के लिये जितना सहज है, उतना ही अन्य सामान्य व्यक्ति के लिये वह कठिन है। कल्पना की अभिव्यक्ति में प्रतिभा के साथ हृदय और आत्मा का मिलन हो जाये, तो वह कला-कृति सर्वप्रशंसनीय, चिरस्मरणीय बन जाती है। यदि मानव वास्तविक सुख-शांति की अभिलाषा करता है, तो उसे स्मरण रखना होगा- ''जीवन के पटल पर विचारों के रंगों से मानस से उभरे चित्र को चितारना है, तो प्रतिभा की तूलिका के साथ-साथ हार्दिक भावना का हाथ और आत्मिक संवेदना का ध्यान इनका संयोग आवश्यक है। महाराजा गुरु रणजीतसिंहजी के जीवन की एक घटना इस तथ्य को स्पष्ट करती है।

उनका अपना एक सुन्दर चित्र बनाने हेतु दरबार में तीन प्रसिद्ध चित्रकार आये हुए थे। तीनों ने ही अपनी प्रतिभा के अनुसार उनका आकर्षक चित्र बनाया। पहले चित्रकार ने उत्तम चित्र बनाया, जो चित्रकला की दृष्टि अप्रतिम था, पर रणजीतसिंहजी को वह बिलकुल पसंद नहीं आया। दूसरे चित्रकार की कुशलता भी अनुपम थी पर उस चित्र में भी उन्हें कमी दिखायी दी। तीसरा चित्र भी अद्वितीय था, पर पहले दो चित्रों की तुलना में वह कम था। इस पर भी रणजीतसिंहजी ने उस चित्र को पसंद किया। सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। दरबारियों ने कारण जानना चाहा।

बात यह थी कि रणजीतसिंहजी की एक आंख खराब थी और उसे किस प्रकार से चितारा गया था इस बात को उन्होंने सर्वोपरी महत्व दिया। पहले चित्रकार ने दोनों आंखें अच्छी बनायी थी। यह सत्य न था अतः रणजीतसिंहजी के मन में उस व्यक्ति द्वारा चापलूसी की बू आयी। उसने केवल प्रतिभा का उपयोग था। दूसरे चित्रकार ने दोनों आंखें तथ्यपरक बतायी थी। इस प्रकार की रुक्ष प्रस्तुति किसी को भी कैसे इष्ट लगती। तीसरे चित्रकार ने रणजीतसिंहजी को शिकार करते हुए निशाना लगाने में उस आंख को बंद दिखाया था। यह प्रतिभा, सत्य एवं संवेदन का उच्चतम मिलन हुआ था।

जीविका कला (जीवनयापन):-

जीने के लिये प्रथम आहार, द्वितीय आवरण और तृतीय आवास ये न्यूनतम आवश्यकताएं है। मनुष्य जाति के अधिकांश जीव इनकी प्राप्ति में ही अपनी पूरी आयु व्यतीत कर देते है। एक बार निश्चित है कि कुछ ना कुछ कार्य करना अनिवार्य है। इसके लिये कोई कृषि कार्य करता है, तो कोई नौकरी करता है। कोई व्यापार करता है, तो कोई अपना व्यवसाय चलाता है। कोई भवन निर्माण करना सीखता है तो कोई उद्योग का स्वामी बनता है। कोई यंत्र-अस्त्र चलाना सीखता है, तो कोई यंत्र-अस्त्र बनाता है। अपने-अपने कौशल से निर्मित उत्पाद या सेवा के क्रय-विक्रय द्वारा परस्परावलंबन तत्वानुसार मानव अपना जीवन जीते है।

मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये एक ही व्यक्ति

सब कुछ नहीं कर सकता वह अनिवार्य भी नहीं। विभिन्न कार्य एक दूसरे के परिपूरक होते हैं, इसलिये वे प्रत्येक व्यक्ति को अपना जीवनयापन करने में सहायक है। इन कार्यो के परिश्रम से उत्पन्न थकान मिटाने के लिये वह विश्राम करता है। ये तो सांसारिक मांगे पूर्ण हुई। शरीर की थकान मिटने पर वह कुछ मन की ऊब से भी उबरना चाहता है। ललितकला का जन्म इसी चाह से हुआ है।

रंजन (ललित कला):-

मनोरंजन के लिये वह ह्रास-परिहास का उपयोग करने लगा। उससे ऊब गया तो उसने खेल-कूद के विभिन्न आयाम खोजे। कुछ नया ढूंढने के प्रयास में तो कविता-कथा उसके हाथ लगी। पर इस पर भी उसको संतोष न हुआ। नित नये की निरंतर खोज उसे नाटक-नृत्य, गीत-संगीत की छाया में ले आयी। अपनी अनोखी बुद्धि से उसने चित्रपट-दूरदर्शन का आविष्कार किया। इन विभिन्न कलाओं द्वारा उसकी मानसिक मांगों की संतृप्ति होती। फिर भी भीतर का एक कोना पूर्ण रुप से संतुष्ट न था। इसके कारण भौतिकवाद के बीज का अंकुरण हुआ।

चित्त की दुर्बलता के क्षणों में उसे आवश्यकता से अधिक पाने की इच्छा हुई और वह वैसा करने लगा। धीरे-धीरे ही सही पर निश्चित रुप से उसने अधिक साधनों के साथ अधिक प्रतिष्ठा का संबंध जुड़ते देखा। वह मन-ही-मन प्रसन्न होने लगा। इस प्रसन्नता से उसकी ओर अधिक पाने की इच्छा प्रबल हुई। भगवान ने स्पष्ट संकेत किया है, ''इच्छाहु आगाससमा अणंतीया।'' अर्थात् इच्छा आकाश के समान अनंत है। इच्छा अतल गड्ढा है वह कभी भरता नहीं उसे किसी के द्वारा पूरा नहीं जा सकता। सृष्टि में सब जीवों की आवश्यकता पूर्ण करने की क्षमता है, पर मानव के लोभ की पूर्ति संभव नहीं। बहुत कुछ प्राप्त होने पर भी कुछ और तृष्णा बूझती नहीं। लोभजन्य संग्रह की प्रवृत्ति से मानव-मानव के बीज स्पर्द्धा निर्माण हुई। स्पर्द्धा का रुपांतरण विवाद में हुआ। विवाद के बढ़ने पर कलह होने लगे। कलह का विकास टंटे-बखेड़ें में हुआ और फिर इसका विकराल स्वरुप-जमीन का बटना, अधिकार जमाने के लिये युद्ध और युद्ध में मार-काट द्वारा हिंसा-कब आया, इसका पता ही नहीं चला। वह आज भी चल रहा है। देश-देश के बीच राजनीति, कूटनीति का खेल चलने लगा। उनकी असफलता की निष्पत्ति युद्धनीति हुई। मानसिक मांगों की तृप्ति मनोरंजन से हुई थी। पर लोभ ने मानव को कहां ला के खड़ा कर दिया। मानव को अपने असंतुष्ट कोने का स्मरण हो आया। अधिक उद्वेलित करनेवाले बाह्य पर्यावरण से भयभीत वह भीतर झांक कर समस्या का समाधान खोजने लगा। वहीं से उसकी अंतर्यात्रा का प्रारंभ हुआ।

जीव उद्धार (आत्म-दर्शन):-

मानव की आंतरिक सुख-शांति प्राप्ति की प्रखर इच्छा से नयी कला का जन्म हुआ। भगवान ऋषभदेव ने धर्मशास्त्र धर्मविचार और धर्मनीति का ज्ञान कराया। यही एक कला है जिससे मानव यथार्थ सुख-शांति पा सकता है, पाता है। यही आत्म-दर्शन कला जीवन को मांज कर चमकाती है और आत्मा को निखार कर मुक्त करती है।

अंतर्यात्रा में मानव ने गहराई से चिंतित किया। उसे अनुभव होने लगा कि भीतर कोई ऊर्जा है, जो जीवन का स्रोत है। उसकी जागृत प्रतिभा ने उस ऊर्जा का अभ्यास किया। जितना वह अधिक अभ्यास करता, उतना वह अधिक शांति का अनुभव करता। उस अभ्यास को स्थिर, दीर्घ बनाने के पुरुषार्थ में उपासना, साधना विकसित हुई। वह कायोत्सर्ग करने लगा, ध्यान में तल्लीन होने लगा। उसे अधिकाधिक आनंद और आत्यंतिक शांति की प्रतीति होने लगी। उसकी सोई चेतना जागृत होने लगी और उसकी आत्मिक, आध्यात्मिक मांग की पूर्ति होने का पथ प्रशस्त होने लगा।

जिन्होंने इस पथ पर अपने चरण आगे-आगे बढ़ाये उनके सुख-शांति में विस्तार के साथ ज्ञान की सीमाएं भी फैली। इस कला की सर्वोच्च कोटि में पहुंचने वाले सर्वेक्ष-सर्वज्ञ बने और मुक्त हुए, जन्म-मरण के चक्र को बिंध कर वे सदा के लिये सिद्धशिला पर विराजित हो गये।

सार-संक्षेप (निष्कर्ष) :-

जीवन कला सांसारिक आवश्यकताओं की पूर्ति में उपयुक्त है। ललित कला मनोरंजन करने में प्रयुक्त है। जब भौतिकवाद प्रबल बनता है, तो इच्छाएं निरंतर बढ़ती है। तब मानव अशांति में उलझता है। तब भीतर से आवाज प्रस्फुटित होती है और आत्म-दर्शन की लालसा निर्माण होती है। यह यात्रा अखंड शांति, सतत आनंद, अनवरत निरवता, निरंतर सुख, अव्याबाध निःशब्दता, शाश्वत निःस्तब्धता के पड़ावों से आगे बढ़ते-बढ़ते मुक्तिधाम पर समाप्त होती है। भव-भव चक्र को तोड़ कर मानव सिद्धत्व को प्राप्त होता है, अयुक्त बन जाता है।

शासन स्थापना : श्री वीरप्रभु की अनमोल भेंट

* डॉ. सुभाष जैन

प्रत्येक *देश एवं काल में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते है जो अपने जीवन कृतित्व एवं धर्म को समर्पित महान कार्यो से युगों-युगों तक के लिये अपनी विशिष्ट पहचान बना लेते हैं और अखिल विश्व के मानस पटल पर अपनी अनुकरणीय आध्यात्मिक और संसार के कल्याण की भावना से अपनी ऐसी छवि उत्कीर्ण कर लेते है जो संसार के तारणहार के रुप में स्थाई रुप से जग में प्रसिद्ध हो जाते है। प्रत्येक जीव के व्यत्त्वि में सकारात्मक और नकारात्मक पहलु होते हैं, अकारात्मक प्रबलता के कारण ऐसे महान व्यक्तित्व के जीवन में नकारात्मक भाव दिखाई ही नहीं देता है। ऐसे महान तारक परमात्मा श्रीप्रभुवीर का जीवन चरित्र है जो हम सबके लिये कल्याणकारी होने के साथ ही सर्वार्थ पूजनीय है। परमात्मा का अंर्तमन, अंतस, अंतःकरण और अद्भूत ब्राह्य स्वरुप सब कुछ संसार के लिये वात्सल्य और करुणा से भरा हुआ है।*

देवाधिदेव तीर्थकर परमात्मा भगवान श्री महावीर स्वामीजी का जीवन बचपन से ही स्व पर आत्मकल्याणकारी रहा है। परमात्मा अपार समृद्धि सम्पदा को छोड़कर संसार कल्याण के लिये दीक्षित होकर विचरण करने लगे थे। आत्मिक चरित्र प्रधान होती है, आत्म जगत के अत्वेषकों का लक्ष्य चूंकि संस्कार कोशों का परिवर्तन, परिवर्धन और जागरण होते हैं, परमात्मा इसी लक्ष्य को लेकर संसारी बंधनों से मुक्त होकर जगत मात्र के कल्याण के लिये अभयदान प्रेम करुणामय जीवन जीना आरंभ कर दिया था। जगत के सब जीवों के प्रति मैत्री का भाव गुणीजनों के प्रति आदर का भाव संसार के दुखियों के लिये करुणा का भाव और दुश्मनों के प्रति समता का भाव लिये सबके होकर जीवन जीने लगे। परमात्मा के इसी आत्मीय भाव ने जीयो और जीने दो का अमृतभरा ऐसा सूत्र दिया जिसका आज भी अनुकरण कर पृथ्वी पर स्वर्ण को उतारा जा सकता है।

परमात्मा एकला चला रे के भाव से संपूर्ण जगत के उद्धार के लिये आज से 2600 वर्ष पूर्व जब देश में विकास स्थिति थी तब अहिंसा के सिद्धांत के साथ विचरण कर रहे थे, परमात्मा ने संसार की उन समृद्धि, सत्ता, सम्पदा को छोड़कर जिसकी साधना हम परमात्मा से करते है। प्रभु ने अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह के ऐसे सिद्धांतों को संसार के सामने रखा। जिन पर चलकर मानव संसार के दुःखों को दूर कर सकता है। जब प्रभु ने श्रमणत्व स्वीकार किया तब प्रभु के साथ कोई नहीं था। प्रभु का कोई शिष्य नहीं था लेकिन केवल्य और मोक्ष मार्ग की ओर प्रभु निरंतर आगे बढ़ रहे थे परमात्मा एक ऐसे धर्म की प्ररुपणा दे रहे थे जहां इहलौक परलोक, भौतिक, अध्यात्मिक सुख की प्राप्ति होती है।

संसार में ज्ञान प्रचुरता से जिनका नाम रोशन था ऐसे श्री गौतमस्वामीजी परमात्मा के सम्पर्क में आये गुरु शिष्य का यह सम्बंध संसार के कल्याण के लिये ही हुआ था। परमात्मा का शिष्यत्व ग्रहण कर गुरु गौतमस्वामी के साथ प्रभु के 10 अन्य शिष्य बने। प्रभु ने सभी शिष्यों को वैशाख सुद- 11 को गणधर पद प्रदान करते हुए जिन शासन नाम की संस्था को स्थापित किया और जिनधर्म के लिये आधार शिला रखी। आगे ऐतिहास भी बहुत ही जोरदार है। तारणहार तीर्थकर परमात्मा श्री महावीर स्वामी-वर्धमान स्वामी की पाट परम्परा पर पांचवें गणधर श्री सुधर्मस्वामीजी विराजमान हुए थे। भगवान श्री महावीर स्वामीजी के 11 गणधर में से 9 गणधर श्री महावीर प्रभु की उपस्थिति में ही निर्वाण को प्राप्त कर चुके थे अब दो ही गणधर विराजमान थे। इनमें से प्रथम गणधर श्री इन्द्रभूति गौतमस्वामीजी भगवान श्री महावीर स्वामीजी के निर्वाण के पश्चात अल्प समय से ही केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। अतः प्रभु के निर्वाण के बाद शासन की कमान संभालने के लिये संघ नायक बनने योग्य केवल प्रभु के गणधर श्री सुधर्मा स्वामीजी विद्यमान रहे, अतः संघ व्यवस्था का सम्पूर्ण भार श्री सुधर्मास्वामी पर आया था। अन्य सभी गणधर के सुशिष्य भी श्री सुधर्मा स्वामी की आज्ञा में रहे। इस कारण वर्तमानकालिन समस्त श्रमण समुह श्री सुधर्मा स्वामी का अनुयायी स्वीकृत किया जाता है, माना जाता है। श्री सुधर्मास्वामी निग्रंथगच्छ के आदि स्थापक थे इसलिये हम कह सकते है कि आज के सभी श्रमण संघ का मूलगच्छ निग्रंथगच्छ है। पूज्य तारक तीर्थकर परमात्मा श्री वीरप्रभु ने जो त्रिपदी दी, उपदेश दिये उसे अर्धमागधी भाषा में नव गणधारों ने आगम रुप में तैयार किया गणधार श्री सुधर्मास्वामीजी द्वारा द्वारशांगी के 12 अंगों की रचना की थी वर्तमान समय में यह अंग ही विघमान में है, दुःषमकाल के प्रभाव से इसमें से कुछ अंशों का विच्छेद हो गया है, कुछ अभी भी अवशेष है। उसके आधार पर श्री वर्तमान जैन शासन प्रवर्तित हो रहा है।

परमात्मा ने शासन स्थापना के साथ जिस धर्म की प्ररुपणा दी वह हमारे लिये परम आराध्य है, प्रभु ने कहा कि- धर्म के द्वारा ही मुक्ति संभव है, धर्म सभी सुख दिला सकता है इसीलिये धर्म को मंगल कहा है, मंगलमय का अर्थ है हिंसा, पाप, चोरी आदि बुराईयों से रहित एवं आत्मीय सुख प्रेम एवं करुणा का जन्मदाता धर्म है, जो व्यक्ति के लिये मंगलमय वह धर्म है जो विश्वास में मैत्री, शांति के लिये मंगलमय है वह धर्म है इसमें कहीं भी जाति, पथ, सम्प्रदाय की बात नहीं आती है। आत्मोत्थान और परमात्म प्राप्ति के लिये प्रभुवीर ने अहिंसा,अचौर्य, अपरिग्रह, अकाम का सिद्धांत दिया, आईये हम सब शासन स्थापना दिवस पर प्रभु के दिये वचनों पर चलें, यही निवेदन !

वर्ग पहेली क्रमांक-*324*

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1		2	■	3	4		5	6
	■	7	8	■		■	9	
	■	10		11		12	■	
13		■	■		■	14		■
	■	15					■	16
■	17		■		■	■	18	
19	■	■	20		21	22	■	
23	24	■		■	25		■	
26					■	27		

बाएं से दाएं:-

1- एक दिशा का नाम (3)

3- पश्चिम बंगाल में भागीरथी के तट पर चिंतामणि पार्श्वनाथ प्रभु का तीर्थ (5)

7- भगवान महावीर की प्रथम आर्या च---बाला (2)

9- धरतीमाता को कहते है रत्नगर्भा वसुं---(2)

10-जहां से भ.आदिनाथ को केवलज्ञान प्राप्त हुआ (5)

13-धार्मिक वरघोड़ में बोला जाने वाला नारा--- वीरम् (2)

14-अश्वसेन-वामाजी के नन्दन है प्रभु---(2)

15-भ.महावीर के प्रमुख दस श्रावकों में से एक (5)

17-एक चोघड़िया--- (2)

18-अठारहवें तीर्थंकर की माता का नाम--- देवी (2)

20-जेसलमेर के निकट पार्श्वप्रभु का तीन जिनालय वाला प्राचीन तीर्थ, भारत का पहला परमाणु परीक्षण स्थल (4)

23-नौ प्रतिवासुदेव में से एक ता--- (2)

25-रविवार को पुष्य नक्षत्र विद्यमान रहने पर र---ष्य का संयोग बनता है (1,1)

26-कुंभरिया तीर्थ के निकट विघ्नहरा पार्श्वनाथ का तीर्थ (2,3)

27-जो परवाह न करता होः लाप---(3)

वर्ग पहेली क्रमांक-323 का परिणाम

नं	■	आं	■	गि	र	ना	र	■
दा	न	सू	रि	■	त	■	ण	मो
■	लि	■	या	बा	न	■	■	ह
ज	या	न	■	व	■	ता	ल	न
यं	■	न	वा	न	ग	र	■	खे
त	र्ना	द	■	ग	■	क	रे	ड़ा
वि	■	■	सु	जा	त	■	व	■
मा	घ	■	ष	■	अ	वं	ति	पा
■	व	र्ध	मा	न	■	श	■	वा

ऊपर से नीचे:-

1- भगवान श्रेयांसनाथ के कुल/वंश का नाम--(3,2)

2- महुड़ी और तारंगा तीर्थ के निकट भ.आदिनाथ का प्रसिद्ध तीर्थ आ---र (3)

4- सुख मा समरो,दुख मा समरो, समरो दिवस ने रात ---समरो, मरता समरो, समरो सौ संघात- एक भजन (3)

5- अश्वगंधा औषधि का दूसरा नामः अस--- (2)

6- हाथियों राजा कहलाता है ग--- (3)

8- आजकल कई रस्मों में जै--- वाज का चलन बढ़ गया है (1,1)

11-ये भी वीर प्रभु के दस प्रमुख श्रावकों में से एक है (5)

12-हैदराबाद के निकट नीलम नग से बनी प्रभु ऋषभदेव की प्रतिमाजी वाला तीर्थ कु--- (3)

15-प्रभु महावीर के मुख्य दस श्रावकों में ये भी शामिल है---नी पिता (2)

16-यहां बीस विहरमानजी तीर्थंकर सदैव विचरते है (5)

19-अहिंसा---धर्म (3)

20-इस पचक्खाण में सूर्योदय से एक प्रहर तक चारों आहार का त्याग रहता है--- (3)

21-जगतगुरु की पदवी से विभूषित पालनपुर में जन्में आचार्यश्री ही--- जय सूरि (2)

22-शंखेश्वर और पाटण के निकट भ.चंद्रप्रभ स्वामी का तीर्थ जम---(3)

24-दानवीर जगडूशाह की कर्मभूमि, कच्छ जिले में भगवान महावीर का तीर्थ---रिया (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-324

❊ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

उत्तर क्रमशः यु-ग-प्र-धा-न अक्षरों से प्रारंभ होंगे।

1- अकर्म भूमि में रहते है। 2- समुदाय। 3- हरीफ। 4- वकील को गुजराती में कहते है। 5- चौदह पूर्वो का सार। 6- जोड़ी। 7- पांच अनुष्ठान में से एक। 8- पचक्खाण का अर्थ। 9- धर्मनिष्ठको कहते है। 10-पाटला पूजन में हमारा पूजन किया जाता है।

वर्गपहेली क्रमांक-322 के परिणाम

विजेता:-

इनके भी उत्तर सही थे:-

1-स्नेहलता जैन, मंदसौर (म.प्र.) - प्रथम
2-प्रीति हिगंड़, नरवर (म.प्र.) - द्वितीय
3-हंसा वैभव जैन, देवास (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे:-

सुरभि सर्राफ, बदनावर।

❊ व्यक्ति दूसरों को कष्ट देने के क्षणों में स्वयं अपनी आत्मा को दुर्गति के बंधनों के लिये तैयार करता है, जैसे रस्सी रस्सी से बंधती है, तब गाय-बैल आदि किसी को बांधती है।

आगमोद्धारक सदस्यता शुल्क ऑन लाईन भेजिये....

आगमोद्धारक का सदस्यता शुल्क आप ऑन लाईन बैंक में जमा कर सकते है। शुल्क भेजने के लिये बैंक- आय.सी.आय.सी.आय. बैंक, शाखा तीन बत्ती चौराहा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता:-श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं. 030001000331

IFSC Code ICIC0000300

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-323 के परिणाम

विजेता:-

1-कृष्णकुमार जालोरी, विदिशा (म.प्र.) - प्रथम
2-अशोकुमार धारीवाल,शुजालपुरीसिटी (म.प्र.)- द्वितीय
3-ईश्वरचंद भाण्डावत, शाजापुर (म.प्र.) - तृतीय

सही उत्तर -

1- अनुकंपा जीवदया दिवस पृ. 44, 2- चार पृ. 11, 3- अध्यात्म का परम पुरुष पृ. 2, 4- नित्य स्मरण ही पृ. 5, श्री वीर विश्व उत्सव के पृ. 43, 6- जिव्या से नहीं, जीवन पद्धति से पृ. 28, 7-मौज पृ. 22, 8- संगमट पृ. 15, 9- केवल ज्ञान पृ. 12, 10-कपट पृ. 23, 11-उसके उद्देश्य पर पृ. 28, 12-अक्ल का पृ. 36, 13-गुरु से पृ. 26, 14-चमत्कार का पृ. 19, 15-मनुस्मृति में पृ. 18,

इनके भी उत्तर सही थे:-

हंस वैभव जैन, देवास, सुरभि सर्राफ, बदनावर, स्नेहलता जैन, मंदसौर, प्रीयांशी जैन, नरवर।

❊ भगवान मुक्ति देने में कृपण नहीं, परन्तु भक्ति देने में कृपण है ऐसा लगता है। भगवान को ऐसा लोभ क्यों होगा ?

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-4-2022 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

अपूर्व मंगल गुरुकुल त्रिपुटी की निश्रा में किशनगढ़ में एक साथ 6 जिन मंदिर की प्रतिष्ठा

✻ अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई मनोज हरण मार्गदर्शक है।
✻ चार्तुमास मुंबई श्री संघ में होगा।

किशनगढ़- राजस्थान के अजमेर जिले के किशनगढ़ में पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठ आचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्नसागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार श्री नव-अपूर्व- अमर कृपापात्र बंधु त्रिपुटी मुनिप्रवर श्री आगम-प्रशम-वज्ररत्नसागरजी म. सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ श्री आदिनाथ, श्री शांतिनाथ आदि जिन मंदिर में भव्य प्रतिष्ठा का महोत्सव 18 अप्रेल से आरंभ होकर 22 अप्रेल को सम्पन्न हुआ। 20 अप्रेल को किशनगढ़ में निकली प्रभु की रथयात्रा देखने काबिल थी चारों ओर जैनत्व का नजारा दिखाई दे रहा था। प्रतिष्ठा 21 अप्रेल को शुभ लग्नांश वेला में हुई। 22 अप्रेल को द्वारोद्‌घाटन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई। महोत्सव में साध्वीवर्या शुभदर्शना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का सानिध्य भी रहा। सथाना में प्राचीन चरण पादुका का अमृत चूल जीर्णोद्धार का आयोजन 20 अप्रेल को हुआ। अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई मनोज कुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन और प्रेरणा से 11 प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित हुवे।स्मरण रहे मुनिमंडल का आगाामी चार्तुमास मुबंई के अधेंरी श्री संघ में होने की संभावना है।

श्री गिरनार महातीर्थ में 18 अभिषेक तथा दादा के जिनालय पर ध्वजारोहण का मंगल प्रसंग

जूनागढ़-परम पूज्य आचार्य भगवंत श्री विजय हेमवल्लभ सूरिजी म.सा. एवं जूनागढ़ में विराजमान पूज्य आचार्य भगवंत पदस्थ मुनि भगवंतों तथा अन्य पूज्य साधु साध्वीजी म.सा. श्री गिरनार महातीर्थ के मूलनायक परमात्मा श्री नेमिनाथ दादा, श्री आदिश्वर भगवान जिनालय श्री अमिजरा पार्श्वनाथ भगवान की देरी, श्रीवस्तुपाल तेजपाल, श्री संप्रतिराजा, श्री मेरकवसहि, श्री संग्रामसोनी श्री कुमारपाल के जिनबिम्ब तथा तलेटी के जिनालय स्थित जिनबिंब एवं पगलिये आदि के अट्‌ठारह अभिषेक वि.सं. 2078 (गुजराती) फाल्गुन-वद-तेरस चौदस, अमावस्या, बुधवार-गुरुवार-शुक्रवार 30-31 मार्च, 1 अप्रेल 2022 करे हुवे अट्‌ठारह अभिषेक एवं मूलनायक दादा के जिनालय की 893 वीं सालगिरह वि.सं.2078, वैशाख-सूद-पूनम, सोमवार, दिनांक 16-5-2022 के शुभ दिन में श्री नेमिनाथ दादा जिनालय के शिखर की ध्वजा, श्री आदिश्वर भगवान जिनालय, श्री अमिजरा पार्श्वनाथ भगवान की देरी तथा अंबिकादेवी की देरी पर ध्वजारोहण होने जा रहा है।

मांडवगढ़ में बालिका शिविर का आयोजन

मांडवगढ़- श्री सुपार्श्वनाथ परमात्मा के प्राचीन प्रसिद्ध तीर्थ मांडव गढ़ में दिनांक 18 से 22 मई तक बालिका शिविर का आयोजन किया जा रहा है। पूज्य साध्वी श्री पद्मलताश्रीजी साध्वी भव्यपूर्णाश्रीजी, साध्वी हितेषा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में आयोजित होने वाले शिविर में बालिकाओं को मर्यादापूर्ण जीवन जीने की सीख के साथ जैनत्व का धर्म का विशिष्ट ज्ञान दिया जायेगा।

96 वीं ओली का पारण हुआ

अहमदाबाद- पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य मुनि पुंग श्री मोक्षरत्नसागरजी म.सा. को 96 वीं वर्धमान तप की ओली का पारणा दिनांक 7 अप्रेल को बड़ी धूमधाम के साथ श्री वर्धमान जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ चौकसी पार्क वेजलपुर रोड़ अहमदाबाद में सम्पन्न हुआ। पूज्य आचार्य श्री देवचंद्र सागरसूरीश्वरजी म.सा.,मुनि श्री अर्हम् रत्नसागरजी म.सा.आदि साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा रही।

जयपुर में चार्तुमास

उज्जैन- उज्जैन में आयोजित आचार्य भगवंत श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. के जन्म अर्धशताब्दी महोत्सव में जयपुर श्री संघ के धर्मिष्ठों की विनंती पर पूज्य आचार्यश्री ने गच्छा धिपतिश्री की आज्ञा और आदेश से पूज्य साध्वीवर्या श्री सिद्धांतज्योति श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास जयपुर श्री संघ में करने की घोषणा की है।

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी के अर्ध जन्म शताब्दी पर 1600 आयंबिल तपाराधना का रिकार्ड बना

7 से 17 अप्रेल तक उज्जैन जन्मोत्सव पर महाप्रभावी महोत्सव सम्पन्न।

✻1 से 8 मई तक राजगढ़ में अंजन- प्रतिष्ठा महोत्सव ✻ 7 मई को भवानीमंडी के सपन संदीप बोहरा दीक्षित हो नवरत्न गुरुकुल को शोभायेंगे। ✻1 मई को महामांगलिक राजगढ़ में होगी।

✻ 1600 आराधकों ने जन्म पर आयंबिल की गिफ्ट की। ✻ मुख्यमंत्री, मंत्री, सांसद, विधायक जैसे अनेक गणमान्यों ने आकर महोत्सव का गौरव बढ़ाया। ✻ देशभर के श्रेष्ठिवर्य सुश्रावकों का आगमन हुआ। ✻ विशिष्ट सिद्धचक्र महापूजन 50 मांडलों पर एक साथ हुआ। आराधकों का सम्मान चांदी के सिक्कों से हुआ। पूना के ओमजी रांका लाभार्थी रहे। देश के संगीतकारों और विशिष्ट वक्ताओं ने गुरुगुण गाये। ✻ श्री चिंतामणी संघ गोरेगांव मुंबई के 50 से अधिक श्रावक-श्राविका ने चार्तुमास की जय बोलने आये। चार्तुमास प्रवेश 10 जुलाई आषाढ़ सुदी-11 को होगा। ✻ झारड़ा में 18 से 25 अप्रेल तक अजंन-प्रतिष्ठा का महोत्सव। यहां से राजगढ़ के लिये अजंनशलाका प्रतिष्ठा हेतु विहार। सैलाना से सेमलिया तीर्थ का छ:रि पालित संघ इसके बाद मुंबई के लिये विहार होगा।

उज्जैन- पवित्र पावन धार्मिक नगरी उज्जैन का इतिहास जैनत्व की गौरव गाथा से जुड़ा हुआ है। जैनत्व की कई ऐतिहासिक घटनाओं की साक्षी रहने वाली उज्जैन अवंतिका नगरी अधिष्ठायक देव तपागच्छ रक्षक श्री माणिभद्र दादा की जन्म स्थली है। ऐसी धार्मस्थली उज्जैन पूज्यपाद युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी महाराज के अर्ध जन्मशताब्दी महोत्सव से आयंबिल तप स्थली बन गई। श्री पाल मैयनासुन्दरी की आयंबिल स्थली में एक बार फिर आयंबिल तप का ढंका बज गया। इस बार की नवपद चैत्र ओली से उज्जैन के इतिहास में एक नया इतिहास रच गया। तीन बड़े धार्मानुष्ठानों से उज्जैन की पुण्यभूमि 7 से 17 अप्रेल तक धर्माराधना के रंग में रंग गई। चैत्र नवपद ओली, परमात्मा प्रभुवीर का जन्मोत्सव का भव्य आयोजन तथा साथ में जुड़ गया था पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के कृपापात्र युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीजी का 50 वां जन्म महोत्सव की भव्य तैयारियों ने श्री संघ में जागृति का माहौल बना दिया था।

युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा. का दृढ़ निश्चय और बड़े धार्मिक आयोजन करने की महारथ ने उज्जैन में एक फिर से अर्ध जन्म शताब्दी महोत्सव को आयंबिल आराधना को प्रमुखता से करने की भावना ने जन्मोत्सव को महाप्रभावी महोत्सव में बदल दिया। यह आयोजन दादा गुरुदेव मालवोद्धारक आचार्य

भगवंत श्री चंद्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा को सच्ची आदरांजलि के रुप में भी देखा जायेगा क्योंकि आयंबिल आराधना के प्रति आपकी भावना इस जन्मोत्सव में सार्थक हो गई। 1600 आराधकों ने सामुहिक आराधना कर आयंबिल तप का इतिहास सर्जित कर दिया इसके साथ ही श्री सिद्धचक्र महापूजन एक साथ 50 माड़लों पर होना भी यादगार बन गया और सम्मेलन में सभी समाज के धर्मानुयायी ने आकर महोत्सव में एकता का संदेश दिया। परमात्मा श्रीप्रभुवीर का जन्म कल्याणक पर विशाल रथयात्रा, नाटिका का आयोजन सभी कार्यक्रम यादगार बन गये। महिला सांझी, तप और जैन धर्म के विभिन्न समुदाय के गुरु भगवंतों के गुणानुवाद के साथ जन्मोत्सव की विराट रथयात्रा ने सबका मन मोह लिया। ऐसे बड़ेआयोजन के लिये बड़ी मेहनत और समर्पण भाव चाहिये। जन्मोत्सव के महोत्सव ने पूज्य जैनाचार्यश्री की गुरु मंडली के साथ कार्यकर्ताओं की फौज ने सफलता के शिखर पर चढ़ा दिया। आपश्री का विहार झारड़ की ओर हुआ। जहां 18 से 25 अप्रेल तक अंजन प्रतिष्ठा करवाकर आप राजगढ़ पधारेंगे जहां गुरुदेव श्री नवरत्नसागरसूरीजी म.सा. का सपना साकार होने जा रहा है। श्री आदिनाथ प्रभु के नवनिर्मित जिनालय का अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव 1 से 8 मई तक होगा नवनिर्मित दादा श्री आदिनाथ प्रभु के जिन मंदिर का निर्माण आपके सद्प्रयासों से हुआ है। इसके बाद सैलाना से श्री शांतिनाथ प्रभु के प्राचीन तीर्थ सैमलिया का छःरिपालित संघ का आयोजन है इसके बाद चातुर्मास के लिये विहार होगा।चातुर्मास मुंबई के गोरेगांव क्षेत्र में श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ श्री संघ में होने जा रहा है प्रवेश 10 जुलाई को होगा। पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्यभगवंत श्री नवरत्न सागरसूरी जी महाराजा के गुरुकुल के रत्न पूज्यश्री के नाम को रोशन करने वाले अपने युवा शिष्यों मंडली के साथ जिन शासन को शोभायमान करने वाले गुरु नवरत्न कृपापात्र, युवाहृदय सम्राट, महामांगलिक प्रदाता परम पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्न सागरजी म.सा., प.पू. मुनि श्रीतीर्थरत्न सागरजी म. सा., प.पू. मुनि श्री उदयरत्नसागरजी म.सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागरजी म.सा. ,प.पू.मुनि श्री उज्ज्वलरत्न सागर जी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीगंभीररत्न सागरजी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीरम्य रत्न सागरजी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीलब्धि रत्नसागरजी म. सा.आदि ठाणा का चातुर्मास होगा।

पायल ने परम यात्रा के लिये दीक्षा ली

जीरावला- श्री जीरावला पार्श्वनाथ महातीर्थ में पूज्य शासन प्रभावक आचार्य श्री हीरचंद्र सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में मुमुक्षु पायल ने परम यात्रा का लक्ष्य लिये परमेश्वरी प्रवज्या ग्रहण कर कूल का नाम उज्जवल किया। पायल की दीक्षा 24 अप्रेल को सम्पन्न हुई। इसके पूर्व त्रिदिवसीय महोत्सव के अंतर्गत 22 अप्रेल को श्री अष्टोत्तरी अभिषेक, संयम वस्त्र, वधामना, परम स्पर्श का कार्यक्रम हुए। 23 को भव्य वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित किया गया साथ ही चारित्र उपकरण वंदनावली हुई, शाम को विदाई समारोह हुआ। 24 अप्रेल को प्रातःकाल शुभ मंगल मुर्हूत में पूज्य आचार्यश्री ने दीक्षा क्रिया विधि आरंभ की, दीक्षा उपकरणों की बोली जोरदार रही। पायल की दीक्षा निमित्त चैन्नई में भी आयोजन हुए।

पूज्यपाद सागर गच्छाधिपतिश्री का 70 से अधिक श्रमण-श्रमणी संग पूना (कोढ़वा) में चार्तुमास

पूना- सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवालेपूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा पूज्य आचार्य भगवंत अजातशत्रु श्री नंदी वर्धन सागरसूरीजी, पूज्य आचार्य श्री आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा कह पावन अमृत निश्रा के साथ पूज्यपादश्री की अभ्यर्थना में संपूर्ण जिन शासन के सभी वर्तमान युग श्रमण-श्रमणी समुदायों के द्वारा जिन शासन की महान एकता का शंखनाद करते हुए पूज्यपादश्री को 8 मार्च को श्री संघ स्थविर की उपाधि से नवाजा गया था। पूज्यपादश्री की स्थिरता अभी पूना-कात्रज श्री संघ में ही बनी हुई है। आगामी चार्तुमास कोढवा पूना में 70 से अधिक साधु साध्वीजी के स ाथ होगा। 8 अप्रेल से 17 अप्रेल तक नवपद ओलीजी की आराधना कर आयोजन कोढवा पूना में किया गया।

प्रेमरुप भक्ति के बिना ज्ञान शून्य ही है। ज्ञानी से ज्ञान की अभिलाषा करना इसकी अपेक्षा बोध-स्वरुप समझकर भक्ति की इच्छा करना यही परम फल है।

आचार्य श्री विजयविज्ञानप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. आगामी कार्यक्रम

✻ 4-5-2022 भायखला-मुंबई में अक्षयतृतीया के दिन वर्षीतप का पारणा।
✻ 11-5-2022 गोडीजी-पायधुनी में 210 वीं ध्वजा सुबह 8.00 बजे गोडीजी-पायधुनी में सूरिमंत्र की पांचवीं पीठिका छट्ठी बार प्रारंभ।
✻ 26-5-2022 गोडीजी-पायधुनी में सूरिमंत्र की पांचवीं पीठिका का पूर्णाहुति पूजन।

गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी के सानिध्य में भोपावर महातीर्थ में ओली आराधना सम्पन्न

✻ श्री रमणभाई मोन्टेक्स ओली आराधना के सम्पूर्ण लाभार्थी रहे। आसपास के संघों में मंगल पदार्पण ✻ चार्तुमास उदयपुर में होगा। ✻ महामांगलिक राजगढ में होगी।

भोपावर-आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में 8 अप्रेल से 17 अप्रेल तक नवपद ओलीजी की आराधना हुई। संपूर्ण लाभार्थी मोंटेक्स ग्रुप वाले श्री रमणभाई ने लिया है आराधकों का समापन पर विशिष्ट बहुमान श्री रमणभाइ के द्वारा किया गया। स्मरण रहे गणिवर्य श्री का आगामी चार्तुमास उदयपुर निश्चित हुआ है। आगे वर्षो के लिये भी आपके चार्तुमास की विनंतियां है।

जैनाचार्य श्री जयानंदसूरी का चार्तुमास पालीताना

शंखेश्वर- त्रिस्तुतिक संघ के वरिष्ठ जैनाचार्य श्री जयानंद सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा-140 का चार्तुमास पालीताना सुनिश्चित हुआ है। प्रवेश 8 जुलाई को होगा। मई में आपश्री की निश्रा में 20 दीक्षा की संभावना है। शंखेश्वर में चल रहे 800 आराधकों के उपधान तप की माल 20 मार्च को होगी। पालीताना में 12 सितंबर से उपधान तप होगा। माल 2 नवंबर को होगी।

श्री परिमल जैन संघ में ओली आराधना

अहमदाबाद- यहां के आम्बावाड़ी क्षेत्र में स्थित श्री परिमल जैन संघ में आगम विशारद पूज्य पंन्यास प्रवर श्री अभयसागरजी म.सा. के पट्टधर सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री अशोक सागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में शाश्वती चैत्र ओली की आराधना 8 से 17 अप्रेल तक आयोजित की गई।

उपाध्यायश्री का चार्तुमास

शंखेश्वर- पू. नूतन उपाध्यायश्री दिव्यानंदविजयजी का चार्तुमास पालीताना होगा। प्रवेश 8 जुलाई को होगा।

पूज्य गच्छाधिपतिश्री का चार्तुमास झाबुआ में

झाबुआ- पूज्यपाद राष्ट्रीयसंत आचार्य भगवंत श्री जयवंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधर सुशिष्य वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा.का चार्तुमास झाबुआ श्री संघ में होगा। प्रवेश 4 जुलाई को होगा।

साध्वीश्री हेमेन्द्र श्रीजी का चार्तुमास पूना में

पूना-सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री हेमेन्द्रश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास पूज्यपाद सागर गच्छाधिपति की पावन निश्रा में पूना कोढ़ला में होगा।

नाथद्वारा में अंजन प्रतिष्ठा

नाथद्वारा- पूज्य आचार्य भगवंत श्री रविशेखर सूरीजी म.सा. आचार्य श्री ललितशेखर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में यहां पर मंगलम् रेसीडेंसी में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु के नवनिर्मित शिखरबद्ध जिनालय की अंजन प्रतिष्ठा का महोत्सव 29 अप्रेल से 9 मई तक मनाया गया। श्रीमती विद्यादेवी कालूलाल मारवाड़ी परिवार के द्वारा निर्मित जिनालय पंच कल्याणक की प्रस्तुति हुई। 7 मई को भव्य दीक्षा वरघोड़ा आयोजित किया गया। 8 मई को पूज्यश्री ने शुभलग्नांश वेला में परमात्मा की प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाई। 9 मई को सत्तरभेदी पूजा के साथ महोत्सव सम्पन्न हुआ।

इन्दौर रेसकोर्स में चार्तुमास

पालीताना- आचार्य त्रिपुटी बंधु आचार्यश्री के द्वारा पूज्य गणिवर्य सम्यकचंद सागरजी म.सा.का चार्तुमास रेसकोर्स-इन्दौर घोषित हुआ है।

अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा. आगामी कार्यक्रम

✻ **1 से 4 मई-** चौमहला में वर्षीतप पारणा विरेन्द्रकुमारजी डोसी।

✻ **8 मई-** श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ में ध्वजारोहण भव्य महोत्सव।

✻ **21 मई-** श्री आदिनाथ चौबीसी जिनालय धाम शाजापुर ध्वजारोहण महोत्सव।

✻ पूज्य अनुयोगाचार्य प्रवर श्री वीररत्नविजयजी म.सा. तथा पूज्य आचार्य देव श्री विजय पद्मभूषणरत्न सूरीश्वरजी म.सा. आदि 21 साधु-साध्वी भगवंतों का **चातुर्मास श्री कामितपूरण पार्श्वनाथ तीर्थ उन्हेल जिला उज्जैन (म.प्र.) में होगा।**

श्री सिद्धाचल महातीर्थ में नव्वांणु एवं छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन होगा

पालीताना- पूज्य आचार्य भगवंत श्री जगतचंदसूरीजी म.सा. के सुशिष्यआचार्य श्री अभयचंद्रसूरीजी म.सा.आदि ठाणा-50 की अमृत निश्रा में यहां नव्वांणु यात्रा एवं छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन होने जा रहा है। नव्वांणु यात्रा 16 अप्रेल 2022 से आरंभ होगी। 22 मई को छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन होगा। 26 मई को नव्वांणु यात्रा की माल का आयोजन किया गया, यात्रा की पूर्णाहुति 14 जुन को होगी। यह आयोजन जैन संस्कार वाटिका हैदराबाद के द्वारा हो रहा है।

दो पंन्यास प्रवर सूरिपद से अंलकृत हुवे

अहमदाबाद- श्री प्रेम-भुवनभानु जयघोष सूरीश्वर समुदाय में पात्रता का जयघोष करते हुए दो पंन्यास प्रवर श्री जयेशरत्न विजयजी एवं श्री प्रेमसुन्दर विजयजी म.सा. को सूरीपद से अलंकृत करने का मंगल प्रसंग उपस्थित हुआ है। त्रिदिवसीय आचार्य पद प्रदान महोत्सव के अंतर्गत दिनांक 22 अप्रेल को पूज्य आचार्यश्री जयसुन्दर सूरीजी का 75 वां जन्म दिन मनाने के साथ पात्रता का जयघोष के अंतर्गत आर्ट गेलरी का उद्घाटन हुआ, शाम को सूरीमंत्र पट्ट उपकरण का वधावणा हुए, दिनांक 23 अप्रेल को श्री गौतम स्तव एवं श्री गौतम स्वामी पूजन हुई। दिनांक 24 अप्रेल को प्रातः 5.30 बजे से सूरी पद प्रदान मंगल विधि आरंभ हुई। पूज्य आचार्य भगवंत श्री विजय जगचंद्रसूरीजी महाराजा के साथ 12 आचार्य भगवंत और 500 श्रमण-श्रमणीवृंदों की अमृत निश्रा में सूरीपद दिनांक 24 अप्रेल को प्रदान किया गया। पद प्रदान महोत्सव का आयोजन श्री शाहीबाग गिरधरनगर जैन श्री संघ में हुआ।

भक्ति योगाचार्य का चार्तुमास मुंबई में

मुंबई- यहां के गोरेगांव जवारानगर जैन श्वेतांबर श्री संघ में पूज्य आचार्य भगवंत भक्ति योगाचार्य श्री यशोविजय सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास होगा। चार्तुमास प्रवेश 30 जून को होगा।

आचार्यश्री का चार्तुमास आबांवाडी में

अहमदाबाद-पूज्यपाद आचार्य देव श्री राजयश सूरीजी महाराज का चार्तुमास एवं बहन महाराज का चार्तुमास आंबावाड़ी-अहमदाबाद (गुज.)में होगा

श्री अंतरिक्ष तीर्थ में दो बाल मुमुक्षु दीक्षित हुए

अंतरीक्ष तीर्थ- पूज्य जैनाचार्य श्री हंसकीर्ति सूरीजी एवं पूज्य आचार्य श्री भव्यकीर्ति सूरजी म.सा. आदि विशाल संख्या में उपस्थित साधु-साध्वीवृंद की पावन निश्रा में बाल मुमुक्षु श्री दीक्षितकुमार एवं तीर्थेश कुमार की भव्य प्रवज्या दिनांक 21 अप्रेल को प्रातःकाल शुभलग्नांश वेला में सम्पन्न हुई। नुतन मुनि श्रीहितचिंतनजी एवं तत्वचिंतनजी की दीक्षा में दिनांक 19 एवं 20 अप्रेल को श्री अष्टोत्तरी महाभिषेक वस्त्र रंगोत्सव एवं संवेदना का आयोजन भी हुआ। श्री अंतरिक्ष तीर्थ की भावयात्रा भी हुई। संसार एवं संयम पर संवाद के साथ एक स्थान पर बैठकर वर्षीदान का आयोजन किया गया। मायरा एवं संयम गर्जना बिदायी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री सुरेशकुमार अम्बालाल कास्वा चौहान परिवार से यह संयम का संयोग बना।

श्री महाबलीपुरम् तीर्थ में ध्वजारोहण

नईदिल्ली- श्री पार्श्व पद्मावती जिनालय श्री महाबलीपुरम् तीर्थ नईदिल्ली में 20 वीं वर्षगांठ पर ध्वजारोहण कार्यक्रम 14 अप्रेल को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री पार्श्व पद्मावती महापूजन पढ़ाई गई। पूज्यश्री आचार्य श्री चंदनाजी म.सा.वीरायतन की पावन निश्रा रही।

श्री वल्लभ समुदाय में प्रवज्या ग्रहण कर आकाश मोक्ष की उड़ान भरेंगे

✻ पूज्य गच्छाधिपति श्री नित्यानंदसूरीजी 4 मई को ओघा प्रदान करेंगे।

✻ मुनिश्री मोक्षनंदविजयजी का वर्षीतप पारणा भी होगा।

उज्जैन- पूज्यपाद श्री वल्लभ सूरी समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री नित्यानंद सूरीश्वरजी महाराज आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंत की अमृत निश्रा में मुमुक्षु श्री आकाश लोढ़ा प्रभुवीर के श्रमण समुदाय में सम्मिलित होने जा रहे है। मुमुक्षु आकाश का दो दिवसीय दीक्षा महोत्सव का आयोजन उज्जैन में होने जा रहा है। दिनांक 3 मई को मुमुक्षु आकाश लोढ़ा का भव्य वर्षीदान वरघोड़ा इन्दिरा नगर जैन मंदिर क्षेत्र में आयोजित किया गया है। वर्षीदान वरघोड़े के बाद महाकाल परिसर में पूज्यश्री के प्रवचन होंगे। शाम को मुमुक्षु भाई आकाश का अभिनंदन एवं बिदाई समारोह अरविंद नगर में होगा। दिनांक 4 मई अक्षय तृतीया पर आकाश गृहगंन से दीक्षा के लिये प्रस्थान करेंगे। पूज्यश्री की निश्रा में दीक्षा क्रिया विधि आरंभ होगी। मंत्रोच्चार के मध्य आपश्री आकाश को रजोहरण प्रदान करेंगे। विजय मुर्हूत में पूज्य मुनिश्री मोक्षानंदविजयजी म.सा. तथा धर्मिष्ठों का वर्षीतप पारणा होगा।

मदनगंज में संभवनाथ प्रभुवीर का प्रतिष्ठा अपूर्व गुरुकुल के वरद हस्ते हुई

✻ अंतराष्ट्रीय विधिकारक भाई मनोजजी हरण मार्गदर्शक प्रेरणादाता रहे।

मंदनगंज- राजस्थान के अजमेर जिले के मदनगंज में श्री जैन श्वेतांबर जिन मंदिर परिसर में श्री संभवनाथ प्रभु के परिकर देवीदेवता ध्वजदंड के प्रतिष्ठा का त्रिदिवसीय महोत्सव 23 से 25 अप्रेल के मध्य सम्पन्न हुआ। अपूर्वअपूर्वमंगल रत्नसागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार श्री नव-अपूर्व-अमर कृपापात्र बंधु त्रिपुटी मुनिप्रवर श्री आगम-प्रशम-वज्ररत्नसागरजी म. सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में परमात्मा की भव्य रथयात्रा का आयोजन 24 अप्रेल को किया गया। दिनांक 25 अप्रेल को प्रातःकाल मंगल मुर्हूत में प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण की मंगल उपस्थिति प्रेरणा और मार्गदर्शन रहा।

जैनाचार्य श्री रविशेखरसूरीजी ने मचीन्द में प्रतिष्ठा के बाद अब 4 जून को बालवाड़ा में प्रतिष्ठा होगी

मचीन्द्र-राजस्थान के राज समन्द जिले में श्री ओसवाल श्वेतांबर जैन श्री संघ मचीन्द में पूज्य आचार्य श्री रविशेखरसूरीजी म.सा.एवं आचार्य श्री ललितशेखर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में यहां दिनांक 26 से 28 अप्रेल तक त्रिदिवसीय प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया। विविध आयोजन के साथ 28 अप्रेल को प्रतिष्ठा हुई। पूज्यश्री की निश्रा में श्री विमलनाथ जिन मंदिर में श्री गौतम स्वामीजी, श्री मणिभद्रवीर, श्री नाकोड़ा भैरवजी, सरस्वतीदेवीजी की प्रतिमा प्रतिष्ठा का आयोजन 31 मई से आरंभ होकर 5 जून को सम्पूर्ण होगा। विविध पूजन अनुष्ठानों के साथ दिनांक 4 जून को मंगल मुर्हूत में पूज्यश्री ने मंत्रोच्चार के साथ प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी। दिनांक 5 जून को द्वारोद्‌घाटन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति होगी।

पालीताना में सागर समुदाय में दीक्षा

पालीताना- मुमुक्षु लीलमबहन का दीक्षा महोत्सव पूज्य आचार्य श्री चन्द्रशेखरसागरसूरीजी. आचार्य श्री पूर्णचंद्रसागरसूरीजी म.सा.,आचार्यश्री लब्धिसागरसूरीजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में आगम मंदिर परिसर में 13 मई को होगी। दीक्षा के पूर्व गौंडल संघ त्रिदिवसीय महोत्सव 29 अप्रेल से 1 मई तक आयोजित किया गया। पालीताना में भी 11 से 13 मई तक दीक्षा महोत्सव आयोजित होगा।

✻ सांसारिक उपाधि हमें भी कुछ कम नहीं है तथापि उसमें निजपना नहीं रहने के कारण उससे घबराहट नहीं उत्पन्न होती।

वचनासिद्ध आचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी ने ऑपरेशन के बाद पालड़ी में गृह मंदिर की प्रतिष्ठा करवाई

✻ सामूहिक आयंबिल आराधना हुई।
✻ पूज्यश्री का चार्तुमास श्री शंखेश्वर महातीर्थ में होगा।

अहमदाबाद- भोपावर तीर्थ प्रतिष्ठाचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. आदि ठाणा का मालवा से विहार होते समय पूज्यश्री के कुल्हे में बड़ी परेशानी हो गई, विलचेयर पर रास्ते की खराबी से आपके कुल्हे की हड्डी टूट जाने से आपको अहमदाबाद पारेख अस्पताल में भर्ती कर ऑपरेशन किया गया। अब आपका स्वास्थ्य ठीक है। पूज्यश्री के स्वास्थ्य के लिये तथा चारित्र पद की आराधना के लिये अहमदाबाद के अनेक श्री संघ में 95 वीं ओली आराधक मुनिपुंग श्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. की प्रेरणा से सामुहिक आयंबिल की आराधना का आयोजन 23 अप्रेल को किया गया। इसके साथ ही वाव पथक संघ की वाड़ी में पूज्यश्री के आगामी चार्तुमास श्री शंखेश्वर महातीर्थ में करने हेतु 26 अप्रेल को श्रीमती सीता बहन लीलाधर भाई नेमजीभाई परिवार के द्वारा विनंती की गई है। आचार्य श्री प्रवेश का मुर्हूत प्रदान करनेवाले थे। पालड़ी में जैन सोसायटी में श्री अजितनाथ प्रभु के गृह मंदिर की प्रतिष्ठा निमित्त पूज्यश्री का प्रवेश 1 मई को हुआ। कोरडिया शामजीभाई हकमचंद परिवार ने गृह मंदिर बनवाया है। विविध पूजनों के आयोजन के साथ 6 मई को वर्षीदान यात्रा के बाद रात्री में अंजन विधान किया। 7 मई को परमात्मा की रथयात्रा के बाद आचार्यश्री ने मंगल प्रतिष्ठा विधान के मंत्रोच्चार के साथ प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाई। श्री शांतिस्नात्र महापूजन पढ़ाई गई।

वागड़ विभूषण जैनाचार्य श्री मृदुरत्न सागर सूरीजी का चार्तुमास प्रवेश 10 जुलाई को हाड़ेचा भवन पालीताना में होगा

✻ उपधान तपाराधना 27 अक्टूबर से होगी।
✻ राजगढ़ प्रतिष्ठा के बाद पालीताना की ओर विहार होगा।

उज्जैन- मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरी जी म.सा. के तीसरे सुशिष्यवागड़ विभूषण जैनाचार्य श्री मृदुरत्न सागर सूरीजी म.सा., मुनि मोक्ष रत्नसागरजी म.सा. अर्हम्रत्नस ागरजी, मुनिश्री पवित्ररत्न सागरजी म.सा.,साध्वीवर्या श्री भव्यपूर्णा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास हाड़ेचा भवन पालीताना में होगा। प्रवेश 10 जुलाई आषाढ़ सुद-11 को रखा गया है इसके साथ ही आपश्री की निश्रा में उपधान तप का शुभारंभ 27 अक्टूबर को होगा। चार्तुमास एवं उपधान तप के संपूर्ण लाभार्थी प्रेमलता बहन जयंतीलाल, प्रयास गांधी परिवार तलवाड़ावाले है। वागड़ क्षेत्र के धर्मिष्ठों के लिये यह विशेष आयोजन है। वागड़ से बड़ी संख्या धर्मिठों के पालीताना पहुंचने की संभावना है। दिनांक 3 मई को राजगढ़ में महामांगलिक का आयोजन होगा। राजगढ़ अजंन- प्रतिष्ठा के बाद पालीताना की ओर विहार होगा।

पड़ासली में प्रतिष्ठा महोत्सव

पड़ासली- श्री जैन सकल संघ पड़ासली राजस्थान में स्थित श्री शीतलनाथ जिन मंदिर में प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन पूज्य आचार्य भगवंत श्री रविशेखारसूरीजी एवं आचार्यदेव श्री ललितशेखर सूरीजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में होने जा रहा है। महोत्सव की मंगल शुरुआत 11 मई से होगी। दिनांक 13 मई को प्रतिष्ठा मंगल मुर्हूत में आचार्यश्री के मंत्रोच्चारण के साथ सम्पन्न होगी। स्मरण रहे पूज्यश्री का चार्तुमास 700 आराधकों के साथ श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ महातीर्थ में होने जा रहा है। प्रवेश 10 जुलाई आषाढ़ सुदी-11 को होगा।

कन्या शिविर

रतलाम- बिंबड़ौद तीर्थ में साध्वी श्री शुद्धिप्रसन्ना श्रीजी, साध्वी श्री प्रवृद्धि श्रीजी म.सा., साध्वी श्री समृद्धि श्रीजी म.सा. की निश्रा में दिनांक 9 से 12 जून तक कन्या शिविर का आयोजन किया जायेगा।

कालधर्म

सागर समुदाय की साध्वीवर्या सौम्यगुणा श्रीजी म.सा. का अहमदाबाद के खानपुरा में कालधर्म हो गया। आपका दीक्षा प्रचीय 61 वर्ष तथा वय 86 वर्ष थी।

एक साथ मोक्ष मार्ग की पथगामी बनेंगी जुड़वां बहनें

✻ आचार्य बंधु-बेलड़ी ने प्रदान किया 26 मई का दीक्षा मुर्हूत

रतलाम- महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर जन्म लेनेवाली जुड़वां बहनें तनिष्का और पलक चाणोदिया अब एक साथ दीक्षा लेकर मोक्ष मार्ग की पथगामी बनेंगी। आचार्य बंधु बेलड़ी ने उन्हें रतलाम में अपनी निश्रा में दीक्षा के लिये 26 मई का शुभ मुर्हूत प्रदान किया।

गुजरात के आणंद शहर में आयोजित दीक्षा मुर्हूत प्रदान महोत्सव आचार्य बंधु-बेलड़ी जिनचंद्रसागर सूरीश्वरजी व प्रशमानंदसूरीजी (श्री रामचंद्रसूरीजी समुदाय) आदि विशाल श्रमण-श्रमणीवृंद की निश्रा में रखा गया था। रतलाम के टाटा नगर निवासी सुश्रावक परिवार संतोष-शोभा चाणोदिया परिवार की लाड़लियां मुमुक्षु जुड़वां बहन 15 वर्षीय तनिष्का और पलक को दीक्षा मुर्हूत प्रदान करने के लिये परिवार की ओर से अनिल-सरोज चाणोदिया ने विनंती की। इसके बाद आचार्य बंधु-बेलड़ी जिनचंद्रसागर सूरीश्वरजी ने उन्हें संयम जीवन अंगीकार करने के लिये रतलाम में दीक्षा का 26 मई का शुभ मंगल मुर्हूत प्रदान किया गया। चाणोदिया की सांसारिक बड़ी बेटी दीपिका वर्तमान में चंद्रवर्षा श्रीजी पूर्व में ही वर्ष 2014 में सूरत शहर में संयम जीवन स्वीकार कर चुकी है। इस अवसर पर आणंद शहर में दीक्षार्थी बहनों का चल समारोह आचार्य बंधु-बेलड़ी की निश्रा में निकाला गया। दीक्षार्थी बहनों का आणंद श्री संघ व शाह सरस्वती बेन रमणलाल परिवार की ओर से शाल, श्रीफल भेंट कर बहुमान किया गया।

एक साथ होगी तीन दीक्षाएं:-

दीक्षा पर्व में ही रतलाम के बाल मुमुक्षु ईशान विशाल कोठारी की भी दीक्षा पूर्व में ही नियत हो चुकी है। अब इसी अवसर पर दोनों जुड़वां बहनें भी दीक्षा स्वीकार करेंगी। दीक्षा पर्व को निश्रा प्रदान करने के लिये आचार्य बंधु-बेलड़ी जिनचंद्रसागर सूरीश्वरजी आदि ठाणा-7 गुजरात से उग्र विहार कर मालवा में मई के प्रथम सप्ताह में प्रवेश करेंगे।

पालीताना में उपधान

पालीताना- पूज्य आचार्य भगवंत श्री जयानंद सूरीश्वरजी महाराज एवं पूज्य उपाध्याय श्री दिव्यानंदविजयजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा श्री गजभंवर जैन धर्मशाला में 12 सितंबर से उपधान तपाराधना का शुभारंभ होगा। तप की मोक्षमाल 2 नवंबर को होगी।

18 अभिषेक और ध्वजारोहण हुआ

भचुंडवा- श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ में स्थित जैन मंदिर में परमात्मा 18 अभिषेक एवं ध्वजारोहण का आयोजन किया गया। दिनांक 20 अप्रेल को हुए इस धर्म आयोजन की प्रेरणा अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई श्री बाबूमलजी हरण ने दी।

भोपावर तीर्थ में गुरुदेव को कांबली आरोहण संपंन

भोपावर- दिनांक 17 अप्रेल को भोपावर तीर्थ में प.पू.श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी की गुरुमंदिर में विराजित मूर्ति को सर्राफ परिवार द्वारा कांबली आरोहण की गई। कार्यक्रम गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म.सा. की निश्रा एवं श्रेष्ठीवर्य श्री भोपावर तीर्थ के अध्यक्ष श्री रमणभाई की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। विजय मुर्हूत में कांबली आरोहण के पश्चात सर्राफ परिवार द्वारा स्वामी वात्सल्य रखा गया तथा नवपद पूजन पढ़ाई गई। श्री देवेन्द्र भाई सर्राफ जो कि परम गुरु भक्त है द्वारा बतलाया गया कि- गुरुदेव को जब भी कांबली व्होराने की बात करते तब गुरुदेव यही फरमाते थे कि जब तक शांतिनाथ दादा नूतन मंदिर में प्रतिष्ठित नहीं हो जाते तब तक किसी भी संघ या व्यक्ति की कांबली नहीं ओढूंगा। इसी भावना को पूर्ण करने के लिये यह कार्यक्रम सर्राफ परिवार द्वारा किया गया।

मुमुक्षु रीया-हीना दीक्षित हुई

बेंगलौर- श्री पार्श्वलब्धिधाम में मुमुक्षु रीया गौतम कटारिया तथा हीना रमणजैन की दीक्षा प्रवज्या का आयोजन हुआ। पूज्य आचार्य देव श्री अजितशेखर सूरीजी म.सा. पंन्यास श्री मंत्राशेखारविजयजी म.सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में दिनांक 21 अप्रेल को दोनों बहन श्री महावीर स्वामी श्रमण पथगामी बनी। नूतन साध्वी श्री हेम र्षिनिधिश्रीजी एवं राजर्षिनिधि श्रीजी ने साध्वी संस्कारनिधि और साध्वी श्री गुर्वाज्ञानिधि श्रीजी म.सा. को जीवन समर्पण कर शिष्यत्व ग्रहण किया है।

।। श्री परमात्माय नमः ।।

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1
मो.: 09825414470 / 9820078772
स्थापना वि. सं. 1962
इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744
PAN : AAATS8024L

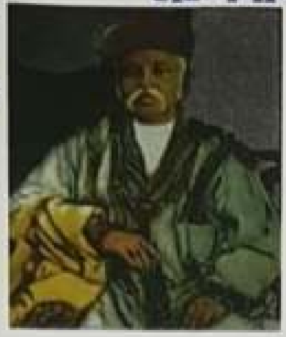

पैसा भेजने का पता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासो के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है । ओर शेठश्री के उत्तम पुण्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है । जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है ।

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है । ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उसको संभालकर रखा जाता है ।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है । अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री । सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दोनो का भी बहुत बडा महत्व है । जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है ।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दीन
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है ।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे ।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है ।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये ।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। वह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा ।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था, उस समय में कुल २५९१ जीवो को छुडवाया गया है ।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है । जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है ।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 00120100001219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम कार्य है ।

लि. ट्रस्टीगण

दान अेज सफल जीवन

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

नलीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

चार्तुमास.... चार्तुमास....

आचार्यश्री तीर्थभद्रसूरीजी म.सा. के सुशिष्यों के आगामी चार्तुमास-

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थतिलक विजयजी म.सा., साध्वी श्री पूर्णयशा श्रीजी का चार्तुमास मैसूर श्वेतांबर मूर्ति पूजक संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थपूर्ण विजयजी म.सा. का चार्तुमास तेनाली श्री संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थसुन्दर विजयजी म.सा. का चार्तुमास सिकन्दराबाद श्री संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थनन्दन विजयजी म.सा. का चार्तुमास मदुराई श्री संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा. का चार्तुमास चुलई श्री संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थध्यान विजयजी म.सा. का चार्तुमास कडप्पा श्री संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थचैतन्य विजयजी म.सा. का चार्तुमास कोयबंटूर श्री संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थपूर्ण विजयजी म.सा. का चार्तुमास तेनाली श्री संघ में होगा।

✻ परम पूज्य आचार्य श्री राजशेख सूरीश्वरजी म.सा., आचार्य श्री रत्नाकर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री सांचोर श्री संघ में होगा।

✻ **अहमदाबाद-** पू.पंन्यास हंसबोधि विजयजी म.सा.आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास सेटेलाईट श्री प्रेरणा तीर्थ संघ अहमदाबाद में निश्चित हुआ है।

✻ **सूरत-** आगमोद्धारक श्री सागर समुदाय के आचार्य भगवंत वर्धमान तपोनिधि श्री नयचंदसागर सूरीजी म.सा.का आगामी चार्तुमास ऊंकार सूरी आराधना भवन, पाल-सूरत में निश्चित हुआ है।

✻ **जयपुर-** परम पूज्य खतर गच्छाधिपति आचार्य श्री जिन मणिप्रभ सूरीजी का 2022 का चार्तुमास जयपुर श्री संघ में होगा। श्री गिरनार तीर्थ में श्री संघ को पूज्यश्री ने स्वीकृति प्रदान की।

✻ **इन्दौर-** सागर समुदाय के वरिष्ठ आचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य श्री चन्द्रकीर्तिसागर सूरीश्वरजी म.सा. का आगामी चार्तुमास श्री तिलकेश्वर पार्श्वनाथ श्री संघ तिलकनगर, इन्दौर में होगा। पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में श्री संघ की विनंती पर पूज्यश्री ने स्वीकृति प्रदान की।

✻ आचार्य भगवंत श्री तीर्थ भद्रसूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास विजयवाड़ा में होगा।

✻ **सादड़ी-** श्री वल्लभसूरी समुदाय के श्री धर्मनंदविजयजी ध्रुव म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास-सादड़ी (राज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री लब्धि सूरीजी म.सा. के समुदाय के आचार्यश्री महासेन सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री सुपार्श्वनाथ श्री संघ दखनगिरी में होगा। श्री पार्श्वलब्धि पुरम् शंखेश्वर में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव अप्रेल (चैत्र) में होगा।

✻ विमल गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री प्रद्युम्नविमल सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास डूंगरपुर जैन श्वेतांबर श्री संघ डूंगरपुर (राज.) में होगा। आपका प्रवेश दिनांक 3 जुलाई को होगा।

✻ अनुयोगाचार्य पूज्य श्री वीररत्न विजयजी म.सा. का चार्तुमास श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ उन्हेल जिला उज्जैन (म.प्र.) में होगा।

✻ सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री कुसुमश्रीजी म.सा.की सुशिष्या साध्वी श्री चन्द्ररत्नाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास उज्जैन में श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी में होगा।

✻ सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री सूर्यकांता श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास उज्जैन के सुभाषनगर स्थित चौमुखी श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन मंदिर उपाश्रय में होगा।

साध्वीश्री दिव्ययशाश्रीजी का चार्तुमास बैंगलोर में

बैंगलोर- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री निर्मलयशा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री दिव्ययशा श्रीजी म.सा. श्री दिव्यदर्शा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का मंगलमय चार्तुमास बैंगलौर के श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ मंदिर 7/4 चौथा मेनरोड़ गांधीनगर पोस्ट बॉक्स 9717 बैंगलोर-560009 (कर्नाटक) में होने जा रहा है। चैन्नई से आपका विहार बैंगलोर की ओर चल रहा है। सम्पर्क- दीपक शाह-9739177900, महाराज-9893277471

✻ जीव को जब तक संत का योग न हो तब तक मतमतान्तरों में मध्यस्थ रहना योग्य है।

प.पू.आ.भ. श्री विजय रविशेखर सूरीश्वरजी म.सा. के आगामी कार्यक्रम

✽ **गाँवगुड़ाः**- प्रतिष्ठा महोत्सव 29 से 4 मई 2022
✽ **नाथद्वारा :**- अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव 2 से 8 मई 2022
✽ **पडासलीः**- प्रतिष्ठा महोत्सव 11 से 13 मई 2022
✽ **तलादरी :**- खनन मुर्हूत एवं शिलान्यास 16 मई 2022
✽ **खारड़ाः**- अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव 15 से 22 मई 2022
✽ **बालवाड़ाः**- प्रतिष्ठा महोत्सव 31 मई से 4 जून 2022
✽ **आगामी चार्तुमास**-2022 नाकोड़ा तीर्थ में 700 आराधकों सहित।

संकेश्वर में दादा श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु का अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव जोरदार हुआ

संकेश्वर- श्री शंखेश्वर पार्श्व नाथ जिनालय संकेश्वर बेलगाम कर्नाटक में अचिन्त्य चिंतामणी श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु के भव्य जिनालय का निर्माण श्री पार्श्वलब्धि शासन सेवा ट्रस्ट के द्वारा किया गया। पूज्य आचार्य भगवंत श्री महासेन सूरीजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में भव्य अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव 14 से 21 अप्रेल के मध्य सम्पन्न हुआ। परमात्मा परम तीर्थ का प्रभु श्री महावीर स्वामीजी का जन्म कल्याणक महोत्सव मनाने के साथ आरंभ हुए कार्यक्रम में 2300 आयंबिल का आयोजन संघों में किया गया। परमात्मा के पंच कल्याणक की भव्य प्रस्तुति मंच पर की गई। परमात्मा 250 अभिषेक भी हुए। दीक्षा कल्याणक पर भव्य वर्षीदान रथयात्रा निकाली गई। दिनांक 21 अप्रेल को पूज्य आचार्यश्री के द्वारा शुभ लग्नांश वेला में मंत्रोच्चार के साथ परमात्मा की मंगल प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

आचार्यश्री का चार्तुमास शिवपुरी में

शिवपुरी- शास्त्र विशारद प.पू. जैनाचार्य श्रीमद् विजय धर्मसूरीजी म. सा. की परम्परा के गुरुदेव श्रीमद् विजय प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. के आजीवन चरणोपासक आचार्य श्री कुलचंद्रसूरीजी म.सा. पंन्यास प्रवर श्री कुलदर्शन विजयजी म. आदि ठाणा का सन् 2022 का चार्तुमास शिवपुरी (म.प्र.) में होना निश्चित हुआ है। श्री धर्मसूरीश्वरजी म.सा.की 100 वीं पुण्यतिथि पू.आ. श्री कुलचंद्रसूरीजी (के.सी.म.) की निश्रा में धूमधाम से मनाई जायेगी आपके चार्तुमास से विजय धर्मसूरि समाधि मंदिर का विकास तथा कायाकल्प हो सके इसलिये आपका चार्तुमास शिवपुरी में हो रहा है।

✽ सज्जन व्यक्ति अच्छे समय में इतराते नहीं है और बुरे समय में घबराते नहीं है।

जैनाचार्य श्री पूर्णचंद्र सूरीजी का चार्तुमास

मुंबई- कलापूर्ण सूरीजी म.सा. के समुदायवर्तीय पूज्यपाद जैनाचार्य श्री पूर्णचंद्र सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री आदिनाथ जैन जिनालय एम.जी.रोड़, श्री नगर जैन संघ गोरेगांव (वेस्ट) मुंबई में होगा।

अभ्युदयपुरम् में प्रतिष्ठा 4 फरवरी 2023 को

उज्जैन-पूज्यपाद अभ्युदयसागर जी म.सा. के सुशिष्य एवं अभ्युदयपुरम् तीर्थ एवं गुरुकुल के संस्थापक मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागर जी म.सा. ,पू.पंन्यास श्री अचलमुक्ति सागरजी म. सा., मुनिश्री पावनमुक्ति सागर जी, मुनिश्री मनमुक्ति सागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में अभ्युदयपुरम् का प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 4 फरवरी 2023 को 23 दिवसीय भव्य आयोजन के साथ होगा। प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये 700 चार्तुमास स्थलों पर 250 आचार्य भगवंतों को आमंत्रण दिया गया है साथ ही प्रतिष्ठा हेतु 108 युवाओं की टीम बनाई जा रही है। लगभग 70-75 जिन बिम्बों के साथ नवग्रह मंदिर, 45 जिनालय का निर्माण यहां हुआ है। प्रतिष्ठा महोत्सव को सफल बनाने की तैयारियां आरम्भ हो गई है।

अनुयोगाचार्य की निश्रा में दो प्रतिष्ठा सम्पन्न

देवास- पूज्य अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में दो प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन अप्रेल माह में सम्पन्न हुए। इन्दौर मार्ग पर धरमपुरी में मुनिसुव्रत स्वामीजी के शिखरबद्ध भव्य जिनमंदिर का प्रतिष्ठा महोत्सव 17 अप्रेल को सम्पन्न हुआ। जिनमंदिर का निर्माण मोगरा परिवार इन्दौर ने करवाया है। इसके साथ ही दूसरा प्रतिष्ठा महोत्सव देवास टेकरी पर स्थित आदिश्वर जिनालय में पूज्य आचार्यश्री भुवनभानु सूरीजी म.सा. तथा अधिष्ठायकदेव श्री नाकोड़ा भैरवजी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा पर त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर श्री नाकोड़ा भैरव महापूजन, 18 अभिषेक के बाद शुभ लग्नांश वेला में प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

सांवेर में आठ दिवसीय अंजनश्लाका प्रतिष्ठा महोत्सव 6 मई से

✻चार्तुमास आगम मंदिर सिद्धक्षेत्र में
✻ पालीताना में नव्वाणुं का आयोजन होगा।

सांवेर-6 मई से जैन समाज द्वारा अंजनश्लाका प्रतिष्ठा महोत्सव का विशाल आयोजन होने जा रहा है। पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज 259 ओली आराधक श्री आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी, मुनिश्री चैत्य रत्नसागरजी, मुनिश्री ज्ञानेशरत्न सागरजी, मुनि श्री गोयम सागरजी म.सा. आदि ठाणाके साथ साध्वीवृंदों की अमृत निश्रा में यह भव्य आयोजन सांवेर में प्राचीन आदिनाथ मंदिर के स्थान पर निर्मित नवीन मंदिर में दादा श्रीआदिनाथजी की प्रतिमा की पुर्नप्रतिष्ठा के निमित्त किया जा रहा है।

सांवेर में भगवान श्रीआदिनाथजी के प्राचीन मंदिर के स्थान पर श्रीआदि नाथजी के मंदिर का नवनिर्माण किया गया है। नवनिर्मित मंदिर में प्रतिमाओं का अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव आगामी 5 मई से 12 मई तक सम्पन्न किए जाने का मुर्हूत और दिशा निर्देश नवीन मंदिर के निर्माण की प्रेरणा और प्रोत्साहन देनेवाले जैनाचार्य जितरत्न सागरसूरीजी ने सांवेर स्थानीय श्रीसंघ को प्रदान किया। महोत्सव का शुभारम्भ 6 मई से होगा एवं प्रभु के पंच कल्याणों की मंचीय प्रस्तुतियां 8 मई से आरंभ होगी। दीक्षा कल्याणक की रथयात्रा का आयोजन 11 मई को होगा, रात में आचार्य भगवंत अजंन विधान करवायेंगे। 12 मई को प्रातः काल मंगल मुर्हूत में आचार्यश्री मंत्रोच्चार के साथ परमात्मा की प्रतिष्ठा करवायेंगे। 12 मई को द्वारोद्घाटन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति होगी। आठ दिन तक प्रतिदिन प्रातः से लेकर संध्याकाल तक प्रतिष्ठा से संबंधित विभिन्न अनुष्ठान होंगे। 11 मई को बैंडबाजे के साथ सांवेर में विशाल वरघोड़ा निकलेगा। महोत्सव में अनेक जैन साधु-साध्वी भगवंत शामिल होंगे। इस आठ दिवसीय आयोजन के लिये अभी से तैयारियां प्रारंभ कर दी गई है। आयोजन में अन्य स्थानों से भी प्रतिदिन सैकड़ों सधार्मिकजन और विशिष्टजनों का आगमन के मद्देनजर व्यवस्थाएं प्रांरभ कर दी गई है। महोत्सव में प्रतिदिन होने वाले अनुष्ठानों और विशिष्ट पूजन के लिये भी विशाल पंडाल की व्यवस्था की गई है। प्रतिष्ठा वाले दिन 12 मई को नगरभोज का आयोजन होगा जिसमें नगर के हर जाति, वर्ग और संप्रदाय के अबाल वृद्ध सभी लोग आमंत्रित किये गये है।

पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज 259 ओली आराधक श्री आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी, मुनिश्री चैत्य रत्नसागरजी, मुनिश्री ज्ञानेशरत्न सागरजी, मुनि श्री गोयम सागरजी म.सा. आदि ठाणाके साथ साध्वीवृंदों की अमृत निश्रा में का आगामी चार्तुमास सिद्धक्षेत्र गिरिराज की छत्र छाया में स्थित आगम मंदिर में होगा साथ ही आगामी कार्तिक पूनम में वहां भव्य नव्वाणुं यात्रा और संभवतः उपधान तप का आयोजन भी होगा।

श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.सा. का 2023 का चार्तुमास दक्षिण भारत में

प.पू. आचार्य श्री नेमि-लावण्य-दक्ष-सुशील गुरुकृप प्राप्त प्रतिष्ठाचार्य श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.सा. एवं प.पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय रविचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. आदि श्रमण -श्रमणी परिवार का सन् 2023 वर्ष का चार्तुमास दक्षिण भारत में करने की क्षेत्र स्पर्शना के अनुसार स्वीकृति प्रदान की है। सन् 2022 का चार्तुमास अनंत सिद्धों की पावन भूमि श्री सिद्धा चल पालीताना महातीर्थ में होगा एवं आसोज मास में विशाल संख्या में श्री उपधान तप की आराधना होगी।

वल्लभीपुर में जैन विद्यापीठ का शुभारंभ

वल्लभीपुर- श्री अयोध्यापुरम् सेवा संस्थान के द्वारा वल्लभीपुर में महोपाध्याय श्री धर्मसागरजी वल्लभी जैन विद्यापीठ का शुभारंभ किया गया है। पूज्यपाद जैनाचार्य बंधुबेलड़ी श्री जिनचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.,आ. श्री हेमचंद्रसागरसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरक प्रेरणा और मार्ग दर्शन से यह गुरुकुल कार्य करेगा। प्रवेश कार्य कक्षा 6 से 10 तक में आरंभ हो गया है। माध्यम गुजराती है। संपर्क - 9825444654

सेमलिया में ध्वजारोहण

सेमलिया- सोलवें तीर्थकर परमात्मा श्री शांतिनाथ प्रभु के प्राचीन जिनालय में दिनांक 14 अप्रेल को ध्वजारोहण का भव्य आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों का आगमन हुआ।

हमारे तीज-त्यौहार

1-	वैशाख सुदी-3	बुधवार	4/5/2022	अक्षय तृतीया वर्षीतप पारणा
2-	वैशाख सुदी-10	बुधवार	11/5/2022	श्री वीरप्रभु केवल ज्ञान कल्याणक
4-	वैशाख सुदी-11	गुरुवार	12/5/2022	शासन स्थापना दिवस गणधर दीक्षा दिवस
5-	ज्येष्ठ वदी-5	शुक्रवार	20/5/2022	पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री सागरानंद सूरीजी महाराजा का कालधर्म दिन
6-	ज्येष्ठ वदी-6	शनि वार	21/5/2022	श्री शत्रुंजय तीर्थ 491 वीं दादाश्री आदिश्वर प्रभु की प्रतिष्ठा वर्षगांठ (वि.सं. 1587)

पुष्प नक्षत्र :

आरम्भः- वैशाख सुदी-6, शनिवार, दिनांक 7/5/2022, समय-12.19 बजे

समाप्तः- वैशाख सुदी-7, शनिवार, दिनांक 8/5/2022, समय-14.59 बजे तक

पंचक :-

आरम्भः- ज्येष्ठवदी-7, रविवार, दिनांक 22/5/2022, समय-11-13 बजे से

समाप्तः- ज्येष्ठवदी-12, शुक्रवार, दिनांक 27/5/2022, समय- 00-40 बजे तक

पानी का बुलबुला:- यह जीवन सचमुच नश्वर है, इतना ही नहीं बहुत छोटा भी है, यह बात सदा याद रखो। वर्षाऋतु में उठनेवाले बुलबुलों का, बादलों में चमकनेवाली बिजली का या बादलों के बीच चमकने वाले रंग-बिरंगे इन्द्रधनुष का जीवन कितनी देर तक टिक पाता है ? कितना क्षणभंगुर है इनका जीवन ?

इसी प्रकार हमारा भी यह जीवन अत्यन्त क्षणभंगुर है, नश्वर है, अस्थिर है। इस छोटे से जीवन में हम क्यों न सभी संबंधों को तोड़कर आत्म तत्व का चिन्तन करें, यह चिंतन हमें क्षणभंगुरता से शाश्वतता की ओर, अस्थिरता से स्थिरता की ओर ले जाएगा।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

सादर आमंत्रण

❊ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

❊ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

❊ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

❊ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

उज्जैन नगरे गुरु विश्वरत्न जन्म अर्द्धशताब्दी महामहोत्सव में सम्मिलित होने एवं गुरुदेवश्री को बधाने पधारे विशिष्ट अतिथिगण

माननीय श्री थावरचंदजी गेहलात सा. राज्यपाल कर्नाटक

माननीय श्री पुष्करसिंहजी धामी सा. मुख्यमंत्री उत्तराखंड

मान. श्री कैलाशजी विजयवर्गीय राष्ट्रीय महासचिव भाजपा

मान. श्री जगदीशजी देवड़ा वित्तमंत्री म.प्र. शासन एवं प्रभारी उज्जैन

मान. श्री ओमप्रकाशजी सकलेचा उद्योगमंत्री म.प्र. शासन

जैन समाज के भामाशाह श्री ओमजी रांका, पूना

वर्ष 27 | वैशाख-ज्येष्ठ | मई-2022 | अंक 5 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-

डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

प्रति, बुक पोस्ट
श्रीमान् ....

स्टाम्प टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड़, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897